वार्षिक रिपोर्ट
2014-2015

''यदि हम दुनिया को सच्ची शांति सिखाना चाहते हैं, और युद्ध के खिलाफ सच्ची लड़ाई छेड़ना चाहते हैं, तो हमें शुरूआत बच्चों से ही करनी होगी।''

मो. क. गांधी

विषय सूची

1.	प्रस्तावना	5
2.	भूमिका	9
3.	समिति की संरचना	17
4.	कार्यक्रम सारणी	19
5.	महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि	25
6.	महत्वपूर्ण कार्यक्रम	29
7.	बच्चों के लिए कार्यक्रम	36
8.	युवाओं के लिए कार्यक्रम	48
9.	महिलाओं के लिए कार्यक्रम	53
10.	जनजातीय लोगों के लिए कार्यक्रम	55
11.	स्मारकीय कार्यक्रम	57
12.	शैक्षिक कार्यक्रम	60
13.	जेल में	74
14.	राष्ट्रभाषा हिन्दी – हमारी पहचान	77
15.	पूर्वोत्तर में कार्यक्रम	78
16.	नियमित गतिविधियां	79
17.	पुस्तक मेले	80
18.	पुस्तकालय एवं प्रलेखन	81

19. प्रकाशन 83

20. विशिष्ट आगंतुक 84

21. कर्मचारियों को विदाई 89

22. हार्दिक श्रद्धांजलि 90

23. मीडिया में 91

प्रस्तावना

''*बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ*'' के सन्देश को फैलाने के लिये स्त्री सशक्तिकरण के कार्यक्रम

महात्मा गांधी का यह दृढ़ विश्वास था कि भारत के सर्वांगीण विकास के लिये महिलाओं को आगे बढ़कर नेतृत्व सम्भालना चाहिये। राजकुमारी अमृतकौर को 20 अक्तूबर, 1936 के एक पत्र में लिखते हैं ''यदि तुम महिलाएं अपनी योग्यताओं को स्वयं समझ लो और उनका पूरा इस्तेमाल मानवता के लिये करो, तो तुम ज़रूर उसे और बेहतर बना दोगी। पुरुषों ने हमेशा तुम महिलाओं को अपने अधीन रखने में आनन्द पाया है और तुमने भी स्वेच्छा से इस अधीनता का विरोध नहीं किया है, जिसका परिणाम यह है कि तुम दोनों ने ही मानवता के प्रति अपराध किया है। तुम कह सकती हो कि बचपन से ही मेरा एक विशेष काम रहा है कि महिलाएं स्वयं अपना महत्व, अपनी मर्यादा को पहचानें। मैं स्वयं भी कभी अपनी श्रेष्ठता और अधिकार जताता था मगर बा कभी स्वेच्छा से मेरे अधीन नहीं रही और मेरे उद्देश्य के प्रति मुझे सचेत किया।''

''महिलाओं को अबला कहना अपराध है, यह पुरुष का स्त्री के प्रति अन्याय है। यदि शक्ति का अर्थ पशु शक्ति है जो निश्चय ही स्त्री पुरुष से कमतर है यदि शक्ति का अर्थ नैतिक है तो अवश्य ही स्त्री पुरुष से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। क्या स्त्री अधिक समझदार नहीं है; क्या अधिक साहसी नहीं है? उसके बिना पुरुष का अस्तित्व ही नहीं है। यदि अहिंसा हमारे जीवन का नियम है जो भविष्य स्त्रियों के साथ है...स्त्री के समान हृदय तक अपनी बात कौन पहुँचा सकता है?''

स्वाधीनता संग्राम के दौरान गांधीजी निरन्तर स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करते रहे। महिलाओं की बराबरी पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा ''स्त्री पुरुष की संगिनी है और उसमें बराबर की मानसिक योग्यता है। उसे भी पुरुष के समान आज़ादी के सभी अधिकार हैं।'' अपने कार्यक्षेत्र में पुरुष की ही तरह सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने का हक है। यह अधिकार तो स्वाभाविक रूप से स्त्री का है, और केवल मात्र पढ़ाई-लिखाई से सम्बन्धित नहीं है। दकियानूसी प्रथाओं के सहारे बुद्धिहीन और अयोग्य पुरुष भी स्त्री के ऊपर अधिकार जताते हैं, जिसका उन्हें हक नहीं है।

''हमारे कई आन्दोलन आधे रास्ते में ही ठप्प हो जाते हैं क्योंकि हमारे देश में महिलाओं की स्थिति कमज़ोर है।'' (महात्मा गांधी, स्पीचज़ एण्ड राइटिंग्स; जी.के. नटेसन एण्ड कम्पनी, मद्रास, 1933)

महात्मा गांधी ने महिलाओं के लिये समानता की जो बात की वह हमारे संविधान में भी शामिल की गई है। उदाहरण के लिये अनुच्छेद 14 में संविधान यह बताता है कि प्रत्येक देशवासी कानून का समान हकदार है। इसी अनुच्छेद में लिंग समानता के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है। अनुच्छेद 21 में जीवन और व्यक्तिगत स्वाधीनता का अधिकार दिया गया है। इसमें कहा गया है कि ''कानूनी नियमों के अलावा किसी भी व्यक्ति से उसका जीने का हक तथा व्यक्तिगत आज़ादी नहीं छीनी जाएगी''।

यह उल्लेखनीय है कि महिलाओं के प्रति की जाने वाली हिंसा के लिये गठित जस्टिस जे.एस. वर्मा जाँच कमेटी ने भी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये इन्हीं अनुच्छेदों का आधार माना है। जस्टिस वर्मा ने कहा कि ''संविधान के 14वें तथा 21वें अनुच्छेद में महिलाओं की उन्नति तथा बेहतरी के लिये कार्यक्रम, योजनाएं, गतिविधियां, आदि तैयार किये गए हैं जिनका उद्देश्य महिलाओं के प्रति की गई असमानताओं को दूर करना है ताकि उन्हें संसाधनों की भी पूरी सहायता मिले, उनकी निर्णय क्षमता को महत्व मिले और मुख्यत: उनका सशक्तिकरण सम्भव हो''।

समिति की गतिविधियों का प्रमुख आधार गांधीजी के सिद्धांत ही हैं तथा महिला केन्द्रित कार्यक्रमों द्वारा उनके सशक्तिकरण के विविध आयामों पर काम किया जाता है। एक महत्वपूर्ण मुद्दा है महिलाओं के प्रति की जाने वाली हिंसा तथा बालिका के प्रति लिंग भेद जिस पर समिति के महिला केन्द्रित कार्यक्रम आधारित हैं।

पिछले वर्ष समिति ने बालिकाओं के प्रति की जाने वाली हिंसा, भ्रूण हत्या, लिंगभेद आदि पहलुओं पर कार्यक्रमों की श्रृंखला की तथा उनकी शक्तियों को बढ़ावा देकर उन्हें स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने लिये अनेक कार्यक्रम आयोजित किये। भारत सरकार के निश्चय 'बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ' को साकार करने में समिति अपना भरसक योगदान दे रही है।

पिछले वर्ष समिति ने बालिकाओं के प्रति की जाने वाली हिंसा, भ्रूण हत्या, लिंगभेद आदि पहलुओं पर कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की तथा उनकी शक्तियों को बढ़ावा देकर उन्हें स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने लिये अनेक कार्यक्रम आयोजित किये। भारत सरकार के निश्चय 'बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ' को साकार करने में समिति अपना भरसक योगदान दे रही है।

समिति ने 21 जून, 2014 को ''महिलाओं के प्रति हिंसा–मूल कारण'' विषय पर परिसंवाद आयोजित किया जिसमें बालिकाओं, महिलाओं की शैक्षिक आर्थिक स्थिति को मज़बूत बनाकर इन समस्याओं से जूझने का निर्णय लिया गया, उपाय सुझाए गए। इस परिसंवाद में प्रतिभगियों ने अपने अनुभव बांटे, हिंसा के मूल कारणों पर विस्तृत चर्चा हुई तथा सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता पर भी विचार–विमर्श हुआ।

यह भी महसूस किया गया कि गणतान्त्रिक प्रक्रियाओं में महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी हो,

जैसे ग्राम-पंचायत, शिक्षा संस्थानों तथा स्थानीय प्रशासन आदि में। गांधीजी के अनुसार ''देश के गणतन्त्र को मज़बूत बनाने के लिये समाज के सभी वर्गों की भागीदारी आवश्यक है।'हरिजन पत्र में 27.5.1939 को वे लिखते हैं'' गणतन्त्र का मूल अर्थ है कि ....सभी के भले के लिये सभी के आर्थिक, आध्यात्मिक, शारीरिक संसाधनों को एकत्र कर उपयोग में लाना– यही गणतन्त्र को कारगर बनाने की मूल कला और विज्ञान है।''

वास्तव में महिलाओं, बालिकाओं की प्रतिभागिता देश तथा समाज की उन्नति के लिये नितान्त आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र संघ के भूतपूर्व सचिव कोफी अन्नान का यह कहना सत्य ही है कि ''इसमें कोई शक नहीं कि जो समाज अपनी गतिविधियों में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी नहीं रखता वह पराजित है।'' विकास प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

बालिकाओं के प्रति बढ़ती हिंसा के मूल कारणों की मीमांसा करते हुए प्रतिभागियों ने महसूस किया कि जीवन के सभी आयामों में स्थायी सुधार, जागरूकता योजनाएं, नीतियां लानी होगी ताकि परिस्थिति में स्थायी सुधार आ सके। जब तक रुढ़िवादिता की जड़ नहीं काटी जाएंगी तब तक असमानता बनी रहेगी, पुरुष अपनी श्रेष्ठता बनाए रखेगा, स्त्रियों के प्रति अन्याय बढ़ता रहेगा।

गिन्नी देवी मोदी बालिका महाविद्यालय, मोदीनगर, उत्तर प्रदेश से आई छात्राओं ने लड़कियों के लिये सुरक्षित स्थानों की जरूरत पर ज़ोर दिया। गांव से कॉलेज तक के रास्तों का सुरक्षित होना भी उनकी एक आवश्यक ज़रूरत है।

बाहर की सुरक्षा के साथ बालिकाओं की घर तथा संस्थानों में भी सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। बालिकाओं और महिलाओं को सबसे अधिक घरेलू हिंसा ही झेलनी होती है। अपने ही घरों में अपमान, अवमानना, हिंसक गतिविधियों की शिकार होती हैं। इन सबको दूर करने के लिये मूल्य आधारित शिक्षा तथा समाज के सभी वर्गों को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।

> *''मैं कहती हूँ कि महिलाओं को उनके प्राचीन अधिकार लौटाओ... अपनी महिलाओं को सुशिक्षित करो तो देश स्वयं उन्नति करेगा...क्योंकि यही आज सच है, कल सच था और जब तक जीवन है, सच रहेगा। जो हाथ पालना झुलाते हैं वही विश्व पर राज करते हैं''।*
> *– सरोजिनी नायडू*

परिसंवाद में मीडिया, फिल्मों, चलचित्रों तथा प्रिन्ट माध्यमों में चली आ रही रुढ़िवादिता पर चर्चा हुई। मीडिया प्रशिक्षण द्वारा दकियानूसी सोच को बदलकर स्थिति को सुधारा जा सकता है, ऐसा सबने स्वीकार किया।

समिति का एक और महत्वपूर्ण प्रयास था लिंग संवेदनशीलता पर आधारित पुरुषों के लिये शिविर का आयोजन करना। लिंग भेद पर पुरुष मानसिकता को बदलने का यह एक प्रयास था। इस शिविर में यह चेष्टा की गई कि पुरुषों में स्त्रियों, बालिकाओं के प्रति होने वाले अपराध की प्रवृति को रोकना तथा संवेदनशीलता के साथ स्थिति को परिवर्तित करने का नेतृत्व तैयार करना।

हमें लगता है कि असली चुनौती मानसिकता में बदलाव लाने की है। चाहे दुनिया के कितने क़ानून, नियम बन जाएं, तबतक अपराध नहीं रुकेंगे जब तक हृदय परिवर्तन न हो, मानसिकता न बदले। भले ही बदलाव की यह प्रक्रिया धीमी है, मगर निरन्तर संवेदनशील प्रयासों से रुढ़िवादी सोच दूर की जा सकती है।

लिंग-समानता लाई जा सकती है।

इस परिसंवाद से यह भी स्पष्ट हुआ कि बालिकाओं की शिक्षा राष्ट्रीय प्राथमिकता होनी चाहिए। सम्पूर्ण विकास तथा सशक्तिकरण के लिये शिक्षा बहुत आवश्यक है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम की महान् महिला सेनानी श्रीमती सरोजिनी नायडू ने इस विषय में कहा ''मैं कहती हूँ कि महिलाओं को उनके प्राचीन अधिकार लौटाओ... अपनी महिलाओं को सुशिक्षित करो तो देश स्वयं उन्नति करेगा...क्योंकि यही आज सच है, कल सच था और जब तक जीवन है, सच रहेगा। जो हाथ पालना झुलाते हैं वही विश्व पर राज करते हैं''।

समिति अपने सभी कार्यक्रमों द्वारा बालिकाओं, महिलाओं की सुरक्षा, उनके अधिकारों के लिये अपने प्रयास जारी रखेगी, ताकि देश और समाज में नारी का सम्मान पुन: प्रतिष्ठित हो।

समिति का एक और महत्वपूर्ण प्रयास था लिंग संवेदनषेलता पर आधारित पुरुषों के लिये शिविर का आयोजन करना। लिंग भेद पर पुरुष मानसिकता को बदलने का यह एक प्रयास था। इस शिविर में यह चेष्टा की गई कि पुरुषों में स्त्रियों, बालिकाओं के प्रति होने वाले अपराध को प्रवृति को रोकना तथा संवेदनशीलता के साथ स्थिति को परिवर्तित करने का नेतृत्व तैयार करना।

दीपंकर श्री ज्ञान
निदेशक

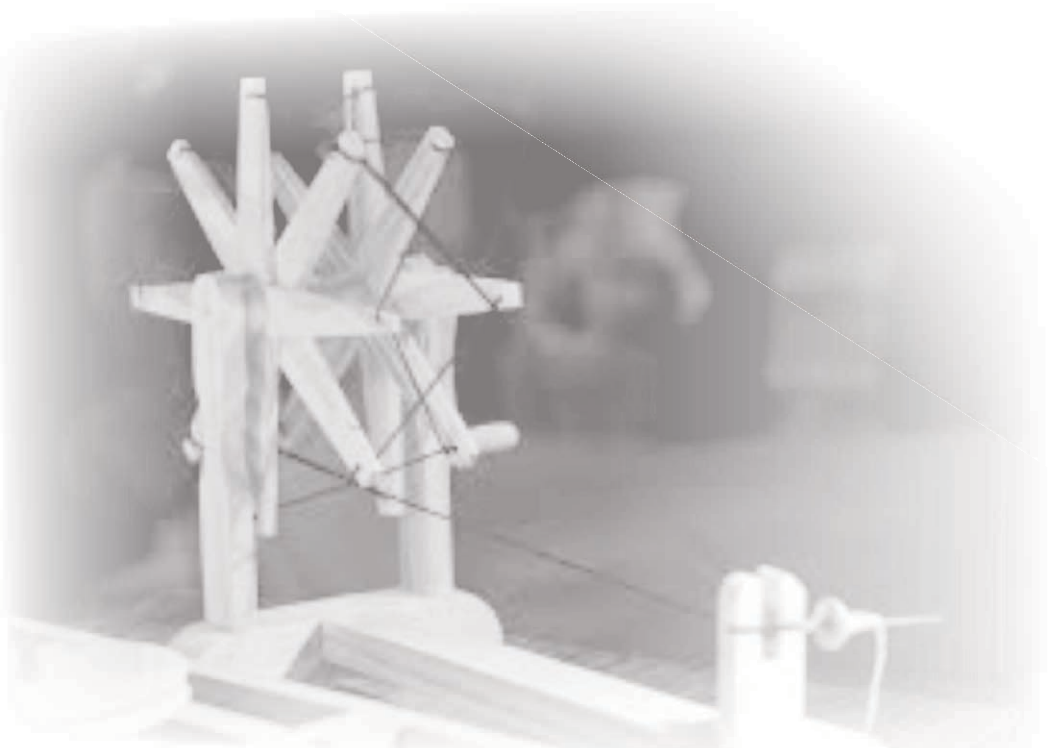

भूमिका

गांधी स्मृति एवं दर्शन समितिः एक रूपरेखा

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) का गठन 1984 में राजघाट स्थित गांधी दर्शन एवं 5, तीस जनवरी मार्ग स्थित गांधी स्मृति के विलय द्वारा 1984 में एक स्वायत्त निकाय के रूप में हुआ था और यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के रचनात्मक सुझाव और वित्तीय सहायता के तहत कार्यशील है।

भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष हैं और इसके पास वरिष्ठ गांधीवादियों एवं सरकार के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों का एक मनोनीत निकाय है जो इसे इसकी गतिविधियों के लिए दिशानिर्देश देते हैं। समिति का मूलभूत उद्देश्य और लक्ष्य विभिन्न सामाजिक-शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिये महात्मा गांधी के जीवन, मिशन एवं विचारों को प्रचारित करना है।

समिति के दो परिसर हैं:

(क) गांधी स्मृति

5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली के पुराने बिड़ला भवन पर स्थित गांधी स्मृति वह पवित्र स्थल है जहां महात्मा गांधी ने अपने नश्वर शरीर का 30 जनवरी, 1948 को त्याग किया था। महात्मा गांधी इस घर में 9 सितंबर, 1947 से 30 जनवरी, 1948 तक रहे थे। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों की स्मृतियां संजोई हुई हैं। पुराने बिड़ला भवन को भारत सरकार ने 1971 में अधिग्रहित कर लिया और इसे राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय स्मारक के रूप में परिवर्तित कर दिया जिसे 15 अगस्त 1973 को आम जनता के लिए खोल दिया गया।

यहां जो जगह संरक्षित हैं उनमें वह कमरा, जिसमें गांधी जी रहते थे और वह प्रार्थना मैदान जहां आम जनसभा सभा होती थी, शामिल हैं। इसी स्थान पर गांधी जी हत्यारे की गोलियों के शिकार हुए। भवन और परिदृश्य को उसी प्रकार संरक्षित रखा गया है जिस प्रकार वे उन दिनों थे।

इस स्मारक की सरंचना में शामिल हैं :

(1) महात्मा गांधी और उनके उन महान आदर्शों, जिनका वे प्रतिनिधित्व करते थे, की याद को बनाये रखने के लिए दृश्यात्मक पहलू

(2) जीवन के कुछ खास मूल्यों, जिन्होंने गांधी को महात्मा बनाया, पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शैक्षणिक पहलू और

(3) सेवा से संबधित गतिविधियां।

संग्रहालय में जो चीजें प्रदर्शित की गई हैं, उनमें गांधी जी ने जितने

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के बलिदान स्थल की ओर जाता हुआ रास्ता।

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के कक्ष का प्रवेष द्वार।

वर्ष यहां व्यतीत किए हैं उनसे संबंधित तस्वीरें, वस्तुशिल्प, चित्र, भित्तिचित्र, शिलालेख और स्मृति चिन्ह शामिल हैं। गांधी जी की कुछ व्यक्तिगत ज़रूरत की चीजों को भी बहुत संभाल कर यहां संरक्षित किया गया है।

इसका प्रवेश द्वार भी बहुत ऐतिहासिक महत्व का है क्योंकि इसी द्वार के शीर्ष से प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने दुनिया को महात्मा गांधी की मृत्यु हो जाने की सूचना दी थी '....हमारे जीवन से प्रकाश चला गया है और हर जगह अंधेरा छा गया है....'

महात्मा गांधी की एक आदमकद प्रतिमा जिसमें खगोल से निकलते हुए एक लड़का और एक लड़की अपने हाथों में एक कबूतर को थाम कर उनकी बगल में दोनों तरफ खड़े हुए हैं, जो गरीबों और वंचितों के लिए उनकी सार्वभौमिक चिंता को दर्शाती है, गांधी स्मृति के मुख्य प्रवेश स्थल पर आगंतुकों का स्वागत करती है। यह विख्यात मूर्तिकार श्री राम सुतार की कृति है। मूर्ति के निचले हिस्से पर बापू का कथन उल्लिखित है, 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।'

जहां राष्ट्रपिता की हत्या हुई थी, वहां एक शहीद स्तंभ बनाया गया है। यह महात्मा गांधी की शहादत की याद दिलाता है तथा उन सभी कष्टों और कुर्बानियों के मूर्त रूप का स्मरण कराता है जो भारत की स्वतंत्रता की लंबी लड़ाई की विशेषता रही है।

स्तंभ के चारों तरफ श्रद्धालुओं के लिए एक श्रद्धापूर्ण परिक्रमा करने के लिए पत्थर का एक विस्तृत मार्ग बनाया गया है। स्तंभ के सामने एक चौड़ी जगह बनाई गई है जिस पर श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। स्तंभ के निकट निचले मैदान पर गुरुदेव टैगोर के शब्द हैं, 'वह प्रत्येक झोंपड़ी की देहरी पर रूके थे।'

प्रार्थना स्थल के केंद्र में एक मंडप है जिसकी दीवारों पर भारत की सांस्कृतिक यात्रा की अनवरतता, दुनिया के साथ उसके संबंध एवं एक 'सार्वभौमिक व्यक्ति' के रूप में महात्मा गांधी के उद्‌भव और उनके व्यक्तित्व में सन्निहित मानव जीवन की सभी दैवीय चीजों का चित्रण करते भित्तिचित्र हैं ठीक वैसा ही जैसा कि उन्होंने कहा: 'मेरी भौतिक आवश्यकताओं के लिए मेरा गांव मेरी दुनिया है लेकिन मेरी आध्यात्मिक ज़रूरतों के लिए संपूर्ण दुनिया मेरा गांव है।'

मंडप के बाहर लाल बलुआही पत्थर से निर्मित एक बेंच है, जिस पर महात्मा गांधी प्रार्थना के दौरान या विशाल जनसमूह से, जो उन कष्टकारी दिनों में उनसे सलाह लेने और शांति पाने के लिए पुराने बिड़ला भवन के लॉन में एकत्र होने थे, बातचीत के दौरान बैठा करते थे।

हरी घास के मैदान प्रार्थना स्थल की मुख्य विशेषता है जो सफेद फूलों की सजावटपूर्ण परिधि से चारों तरफसे घिरी हुई है। स्मारक स्थल के प्रवेश के दाहिने लॉन के निकट खुदा हुआ है 'गांधीजी के सपनों का भारत।' प्रार्थना स्थल के निकट के घुमावदार मार्ग पर अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्द लिखे हुए हैं 'आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से यकीन करेंगी....।' घुमावदार मार्ग के केन्द्र में विख्यात कलाकार शंख चौधरी की कांसे में एक कृति है जो गांधी जी द्वारा अपने बलिदान से जलाई गई 'शाश्वत लपट' का प्रतीक है।

गांधी स्मृति में गांधी जी के कमरे को ठीक उसी प्रकार रखा गया है जैसा यह उनकी हत्या के दिन था। उनकी सारी चीज़ें, उनका चश्मा, टहलने की छड़ी, एक चाकू, कांटा और चम्मच, वह खुरदुरा पत्थर जिसका इस्तेमाल वह साबुन की जगह करते थे, प्रदर्शन के लिए रखी गई हैं। उनका बिस्तर फर्श पर बिछी एक चटाई पर था जो सफेद और सादा था जिसकी बगल में लकड़ी की एक नीची तख्ती रखी रहती थी। भगवद्‌गीता की एक पुरानी और उनके द्वारा उपयोग में आ चुकी एक प्रति भी रखी हुई हैं।

पूरे भवन को अब विभिन्न खंडों में विभाजित कर दिया गया है। भवन के मुख्य प्रवेश के दोनों तरफ महात्मा द्वारा 'ए सर्वेंट्स प्रेयर यानी एक सेवक की प्रार्थना', रचित एक प्रार्थना और उनका शाश्वत–संदेश उनका जन्तर प्रदर्शित किया गया है।

तत्कालीन बिड़ला भवन तथा आज की गांधी स्मृति में स्थित प्रार्थना स्थल में रखे हुये उस बेंच का चित्र जहां से महात्मा गांधी अपने निवास काल में दैनिक सर्वधर्म संध्या प्रार्थना करते थे।

मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा गांधी के रूप में क्रमिक विकास का चित्रण सरल व्याख्यान के साथ श्वेत-श्याम चित्रों की एक पट्टी के जरिये किया गया है। दक्षिणी हिस्से में एक सभागार और एक समिति कक्ष भी है।

इसके अतिरिक्त, प्रदर्शनी का समायोजन इस प्रकार किया गया है कि दक्षिणी हिस्सा मोहनदास करमचंद गांधी नामक एक बालक की जीवन यात्रा और उसके क्रमिक विकास और किस प्रकार अपने 'सत्य के प्रयोगों' के जरिये उसने भारत और मानवता के उद्धार का नेतृत्व किया, का सरल चित्रण दर्शाता है।

उत्तरी हिस्से में पांच विभिन्न खंड हैं। पहला खंड, उस कमरे की ओर जाने वाली एक गैलरी है जिसमें गांधी जी ने अपने जीवन के 144 दिन व्यतीत किए। यह खंड शांति और शहादत की उनकी यात्रा को समर्पित है। इसके आगे दूसरा खंड है, यह एक अन्य कक्ष है जिसमें उनके जीवन के अंतिम 48 घंटों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है जिसकी परिणति उनकी शहादत में हुई। इस खंड में एक सभागार भी है जिसमें महात्मा गांधी पर आधारित फिल्में दिखाने की सुविधाएं मौजूद हैं।

उत्तरी हिस्से का तीसरा खंड 'गांधीजी के सपनों का भारत' और उन नियमों और सिद्धांतों को प्रदर्शित करती है जो इस सपने को साकार करने के लिए भावी पीढ़ियों के लिए वे अपनी विरासत के रूप में छोड़ कर गए हैं—18 सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम। गांधी जी दुनिया के सामने वैज्ञानिक सुस्पष्टता के साथ भारत को विकास के एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। उनकी जीवन यात्रा समाप्त हो चुकी-राष्ट्रपिता दुनिया से चले गए है, लेकिन उनकी धरोहर अभी भी शेष है, और सबसे बढ़कर, एक अधूरा सपना एक चुनौती के रूप में हमारे सामने है और वह है 'उनके सपनों के भारत का निर्माण करना।'

चौथे खंड सुमना में कुल मिलाकर 28 अहाते/पट्टियां हैं। इस खंड में त्रिआयामी लघुचित्र स्थित हैं। इनमें महात्मा गांधी के जीवन की उनके बचपन से शहादत तक की महत्वपूर्ण घटनाओं का चित्रण है। श्रीमती सुशीला रजनी पटेल द्वारा सृजित संग्रहालय का यह हिस्सा एक समृद्ध अनुभव प्रदान करता है।

पांचवें खंड सन्मति, गांधी स्मृति साहित्य केंद्र में एक छत के नीचे उपलब्ध गांधी साहित्य एवं अन्य संबंधित पुस्तकों का एक विशाल संकलन है।

एक विशेष खंड इसका व्याख्यान करने को समर्पित है कि किस प्रकार दुनिया महात्मा गांधी का सम्मान करती है। पहले हिस्से में महात्मा गांधी के शानदार जीवन को कलाकारों की नजरों से प्रदर्शित किया गया है। दूसरा हिस्सा गांधी द्वारा स्वयं पर की गई चर्चा है।

दीर्घा के मध्य में, लोगों को 2 मि. 30 सेकेंड के एक मल्टी मीडिया एनीमेशन के द्वारा समावेशित, आत्मलीन और महात्मा गांधी की उपस्थिति का अहसास कराया जाता है जिसमें उनके बलिदान की दिशा में राष्ट्रपिता की अंतिम यात्रा का वर्णन है। इसे विख्यात गायक कुमार गंधर्व के गायन द्वारा चित्रित किया गया है।

राज से स्वराज तक 1857 से 1947 तक की एक व्यापक प्रदर्शनी 'क्रांति से गांधी' परगोला में लगाई गई है और हमारे समाज के सभी वर्गों तथा दुनिया के सभी हिस्सों के कलाकारों को स्वतंत्रता की ओर भारत की यात्रा तथा मानवता के एक चलते फिरते शख्सियत के साथ रूबरू होने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने 11 सितंबर, 2007 को किया था। इस मौके पर माननीय केंद्रीय संस्कृति व पर्यटन मंत्री श्रीमती अंबिका सोनी विशेष तौर पर उपस्थित थीं। बारिश के दिन हों या गर्मियों के, यह गलियारा आगंतुकों को कुछ पल सुस्ताने के लिए काफी मददगार साबित होता है। बेंचों के अलावा गर्मी से बचाव के लिए यहां पंखे भी लगाए गए हैं।

समूचा गलियारा ही अब एक कला दीर्घा की तरह हो गया है, जिसमें हमारे समाज के हर तबके के कलाकार को अपनी कला का प्रदर्शन करने को मिलता है। यह दुनिया को भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का गवाह बनने का मौका देता है और यहां आने वाले विशाल जनसमूह के साथ जुड़-सा जाता है।

अपनी यात्रा के दौरान आगंतुक एक भव्य 'विश्व शांति घंटे' का भी दर्शन करते हैं। इस स्थान पर 31 जनवरी, 1948 को राष्ट्रपिता के भौतिक अवशेष हज़ारों लोगों द्वारा श्रद्धांजलि दिए जाने के लिए रखे गए थे। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने गांधी स्मृति को यह विश्व शांति घंटा भेंटस्वरूप दिया था। विदेश मंत्रालय को शांति घंटा इंडोनेशिया की विश्व शांति घंटा समिति से प्राप्त हुआ था और इसका उद्घाटन 11 सितंबर, 2006 को सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित एक विशेष समारोह में किया गया

गांधी स्मृति संग्रहालय में गांधीजी के कक्ष की ओर जाता हुआ रास्ता जिसमें दोनों ओर गांधीजी के जीवन के अंतिम दिनों के चित्र प्रदर्शित हैं।

गांधी स्मृति में स्थित 'शाश्वत गांधी' मल्टीमीडिया प्रदर्शनी में एक नन्हीं दर्शक।

था। यह विश्व को दुनिया भर के शांतिदूतों द्वारा किए गए बेशुमार संघर्षों की याद दिलाता है और एक दूसरे के साथ शांति के साथ सद्भावपूर्ण तरीके से जीने का संदेश देता है।

यहां से आगंतुकों को उस कक्ष में ले जाया जाता है जहां बापू जी ने अपने जीवन के अंतिम 144 दिन व्यतीत किए। जब वे इस कक्ष से बाहर आते हैं तब वे फोटो प्रदर्शनी जिसके साथ-साथ प्रत्यक्षदर्शियों की आंखों देखी घटनाओं के विवरण भी शामिल होते हैं, के माध्यम से इन 144 दिनों के इतिहास से परिचित हो चुके होते हैं। गांधी स्मृति में स्वराज, खादी, कुटीर उद्योग एवं ग्रामीण विकास पर गांधीवादी दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

गांधी स्मृति में शहीद स्तंभ के निकट कीर्ति मंडप पंडाल, जिसका नाम विख्यात सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान ने रखा है, के पास बड़े कार्यक्रमों के लिए 500 भागीदारों को समायोजित करने की क्षमता है। समाज के वंचित वर्गों को कंप्यूटर, सिलाई एवं कशीदाकारी, प्रारंभिक शिशु देखभाल एवं शिक्षा, समुदाय स्वास्थ्य, कताई एवं बुनाई, स्वांग एवं संगीत का कौशल प्रदान करने के लिए सृजन-गांधी स्मृति शैक्षणिक केंद्र की गांधी स्मृति में स्थापना की गई है। सृजन का उद्देश्य उन्हें इन व्यवसायिक पाठ्यक्रमों को सीखने में सहायता करना है जिससे कि उनमें स्व-सहायता, आत्मविश्वास एवं आजीविका कमाने के प्रति सम्मान का भाव भरा जा सके।

2005 में संग्रहालय में 'शाश्वत गांधी' शीर्षक की एक मल्टीमीडिया प्रदर्शनी जोड़ी गई जो भवन की पहली मंजिल पर स्थित है। इसमें अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक हार्डवेयर एवं नवीन मीडिया का उपयोग किया है जिससे कि गांधीजी के जीवन एवं दर्शन को जीवंत बनाया जा सके। दृष्टिकोण ऐतिहासिक एवं व्याख्यात्मक दोनों ही प्रकार का रहा है। 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करती यह प्रदर्शनी गांधीवादी विचारों को रेखांकित करती है– सच के सिद्धांतों के प्रति सत्याग्रही की प्रतिबद्धता। फाइबर शीशे से निर्मित बा एवं बापू के दो प्रतिमाएं, जो थाईलैंड के दंपत्ति श्री डेचा सैसोमबून एवं श्रीमती विपा सैसोमबून की कृतियां हैं, को भी मल्टी-मीडिया संग्रहालय में रखा गया है। ये सभी तत्व गांधी स्मृति को एक *संपूर्ण संग्रहालय* बनाते हैं।

(ख) गांधी दर्शनः

दूसरा परिसर राजघाट पर महात्मा गांधी समाधि के निकट स्थित है। महात्मा गांधी की शहादत के 21 वर्षों के बाद पूरी दुनिया ने 1969 में उनकी जन्म शताब्दी को उस प्रकार मनाना शुरू किया जो शांति के यात्री के अनुरूप है। उसके बाद महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी मनाने के लिए 36 एकड़ में फैला परिसर अस्तित्व में आया। भारत के 13 राज्यों

राजघाट स्थित गांधी दर्शन परिसर का एक चित्र।

गांधी दर्शन में स्थित 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' मंडप।

एवं सात दूसरे देशों ने गांधी दर्शन अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का सृजन किया है। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य गांधी के संदेश और आधुनिक विश्व की पृष्ठभूमि में सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांत तथा जिस प्रकार इसने राष्ट्र के जीवन को तथा आधुनिक विश्व को प्रभावित किया है, उसकी व्याख्या करना है। आज गांधी दर्शन में दो प्रदर्शनियों के मंडप हैं ''मेरा जीवन ही मेरा संदेश'' और मिट्टी मॉडल से निर्मित ''स्वतंत्रता संग्राम''। मेरा जीवन ही मेरा संदेश शीर्षक की पहली दीर्घा में दीवारों पर सैकड़ों पुरालेखीय चित्र संक्षिप्त व्याख्याओं के साथ लगाए गए हैं। इनमें से कुछ तस्वीरों में एक बच्चे एवं एक युवा व्यक्ति के रूप में गांधी जी की दुर्लभ तस्वीरें हैं। एक अनुकृति उस घर की भी है जिसमें उनका जन्म हुआ था तथा सेना के एक वास्तविक वाहन की है जिसमें उनके पार्थिव शरीर को अंत्येष्टि स्थल तक ले जाया गया था, जिसे अब राजघाट के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, आगंतुक गांधी जी के स्कूल की रिपोर्ट कार्ड, अखबारों की कतरन तथा कार्टून जो समसामयिक रिपोर्ट एवं उनकी गतिविधियों की समीक्षाओं को प्रदर्शित करती हैं, गांधी जी एवं लियो टॉल्सटॉय के बीच पत्रों का आदान-प्रदान, उनकी पत्नी तथा बच्चों की तस्वीरों एवं अन्य दिलचस्प सामग्रियां भी देख सकते है। इस प्रदर्शनी में गांधी जी की हत्या के बाद दुनिया भर के देशों में आने वाले वर्षों में जारी किए गए स्मारक टिकटों को प्रदर्शित किया गया है; दूसरी प्रदर्शनी में पत्रों को प्रदर्शित किया गया है जो उन्हें भेजे गए थे। विशेष रूप से ये पत्र दर्शाते हैं कि एक साधारण गुजराती वकील ने अपने जीवन काल में कितनी व्यापक प्रसिद्धि पाई। उदाहरण के लिए, एक 'गांधीजी: वे चाहे जहां भी रहे हों' को संबोधित किया गया है; दूसरे (न्यूयॉर्क में पोस्ट किया गया था) में लिफाफे पर केवल गांधी जी का रेखाचित्र यानी स्केच भर था।

संक्षेप में, 274 पट्टिकाओं के साथ इस मंडप में निम्नलिखित चीजें हैं:

1. पट्टिका संख्या 1 से 273 में गांधीजी के जन्म से लेकर हत्या तक की तस्वीरें हैं, जिनकी संख्या लगभग 1600 है।
2. पट्टिका संख्या 274 में महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष पर जारी की गई विभिन्न देशों के 75 टिकट हैं।
3. नमक सत्याग्रह के दौरान उपयोग में लाई गई नौका एवं तख्ती तथा बंदूक वाहन जिसमें महात्मा गांधी के पार्थिव अवशेष को बिड़ला भवन से राजघाट तक ले जाया गया, भी यहां रखा गया है।

गांधी दर्शन में फोटो प्रदर्शनी हॉल नं. 1 का एक दृश्य।

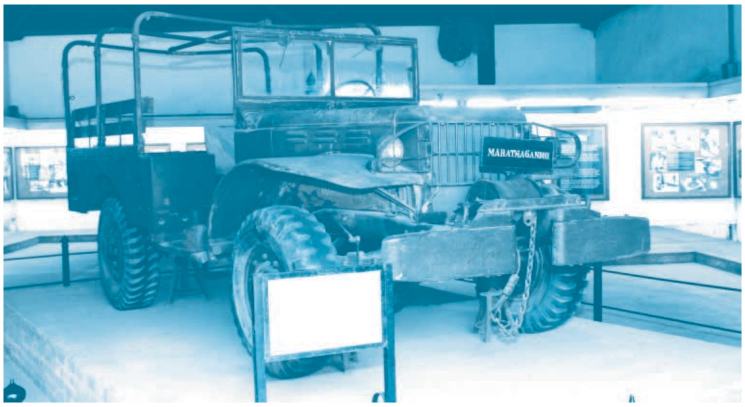

गांधी दर्शन में स्थित 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' मंडप में प्रदर्शित तोप वाहन जिस पर महात्मा गांधी के पार्थिव शरीर को राजघाट ले जाया गया था।

4. यहां पर अनुकृतियां है:
   - गुजरात के पोरबंदर में गांधी जी का घर
   - साबरमती आश्रम
   - यरवदा जेल

स्वाधीनता संग्राम पर आधारित दीर्घा आज़ादी के आंदोलन के विभिन्न पहलुओं पर चिकनी मिट्टी की खूबसूरत अनुकृतियों से निर्मित है।

1994 में, गांधी जी की 125वीं जन्म शताब्दी के दौरान, राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने औपचारिक रूप से राजघाट स्थित गांधी दर्शन में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन केंद्र की स्थापना करने की घोषणा की। 30 जनवरी, 2000 को राष्ट्रपति के. आर. नारायणन ने प्रधान मंत्री तथा समिति के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में परिसर में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन एवं शांति अनुसंधान केन्द्र के स्थापना की घोषणा करते हुए एक स्तंभ का अनावरण किया।

ढांचागत सुविधाएं:

गांधी दर्शन, राजघाट पर उपलब्ध सुविधाएं

- गांधी द्वारा और उन पर लिखी हुई तथा संबंधित विषयों पर 15000 किताबों के साथ एक पुस्तकालय तथा दस्तावेजीकरण केन्द्र।
- 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' शीर्षक की व्यापक चलती-फिरती प्रदर्शनी।
- सभी सुविधाओं से सुसज्जित सम्मेलन, संगोष्ठी एवं भाषण कक्ष।
- प्रवासी विद्वानों के लिए अंतरराष्ट्रीय छात्रावास।
- महात्मा गांधी से संबंधित स्थायी चित्र एवं किताबें।
- 100 व्यक्तियों को समायोजित करने की सुविधाओं के साथ शयनागार।
- प्रकाशन विभाग: किताबों के साथ यह पत्रिका तथा एक समाचार पत्रिका का भी प्रकाशन करता है।
- चित्र इकाई।
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की बड़ी बैठकों के लिए शिविर की सुविधा।
- संपर्क कार्यक्रमों के लिए खुली जगह।

समिति के उद्देश्य हैं:-

1. गांधीवादी आदर्शों एवं दर्शन को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियों की योजना बनाना एवं उन्हें आयोजित करना।
2. संग्रहालय से संबंधित मानक मानदंडों के अनुरूप गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति को खुला रखना तथा आगंतुकों को अधिकतम सुविधाएं प्रदान करने के लिए रखरखाव करना।
3. गांधी स्मृति संग्रहालय एवं गांधी दर्शन प्रदर्शनी दोनों में ही श्रोता विकास एवं संग्रहालय प्रबंधन संरचना को बढ़ावा देना।
4. प्रदर्शनी, फिल्मों, गांधीयाना, पोस्टरों एवं कला, संस्कृति एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न रूपों जैसे शैक्षणिक माध्यमों के जरिये महात्मा गांधी के जीवन एवं संदेश के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए कदमों को बढ़ावा देना।
5. दुर्लभ पुस्तकों, साहित्य, चित्रों, फिल्मों एवं दस्तावेज आदि समेत किताबों के पुस्तकालय को विकसित एवं संरक्षित करना।
6. महात्मा गांधी के महत्वपूर्ण स्मृति चिन्हों को एकत्रित संरक्षित एवं प्रदर्शित करना।
7. गांधीवादी कार्य एवं समाज की बेहतरी के लिए स्वयंसेवकवाद को बढ़ावा देना।
8. महात्मा गांधी के दर्शन एवं आदर्शों से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के जरिये सीमांत लोगों को अधिकार संपन्न

बनाने पर फोकस करना।

9. गांधीवादी मूल्यों एवं कार्यों को ग्रहण करने के लिए बच्चों, युवाओं, महिलाओं तथा अन्य समूहों की क्षमताओं का विकास करना जिससे कि गांधीवादी दर्शन को व्यावहारिक रूप से लागू करने के जरिये व्यवहारगत बदलाव/विकास लाया जा सके।
10. ज़रूरत के अनुरूप गांधी दर्शन एवं गांधी स्मृति के दोनों परिसरों तथा वहां की सभी चल एवं अचल संपत्तियों की पुर्नबहाली, सुरक्षा एवं प्रबंधन।
11. महात्मा गांधी के बारे में एवं जिन मूल्यों को उन्होंने प्रचारित किया, उसके बारे में लोगों के विभिन्न वर्गों की जानकारी बढ़ाने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन।
12. समसामयिक मुद्दों के संदर्भ में गांधीवादी दर्शन पर अंत:विषय अनुसंधान का संचालन।
13. शिक्षा पर गांधीवादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना एवं उनका संवर्द्धन करना तथा शांति, पारिस्थितिकी सुरक्षा, समानता और न्याय के लिए शिक्षा को सुगम बनाना।
14. महात्मा गांधी एवं गांधीवादी दर्शन की बेहतर एवं गहरी समझ के लिए विभिन्न विश्वविद्यायलों तथा शैक्षणिक संस्थानों के साथ व्यापक तरीके से काम करना।
15. गांधीवादी रचनात्मक कार्य के एक हिस्से से रूप में व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं अन्य आजीविका पहलों के जरिये समाज के कमज़ोर वर्गों को अधिकार संपन्न बनाना।
16. समाज की चुनौतिपूर्ण समस्याओं पर विचार करना एवं उन्हें दूर करने के लिए कार्य करना।
17. सामूहिक जीवन, सामूहिक काम, शांति एवं अहिंसा की संस्कृति के लिए काम करने के लिए विभिन्न हितधारकों को शामिल करना।
18. खासकर सुदूर क्षेत्रों में महात्मा गांधी के जीवन एवं संदेश को पंहुचाना।
19. ऐसी अन्य गतिविधियां शुरू करना तथा सभी पूर्ववर्ती शासनदेशों को पूरा करना और उपरोक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अन्य संस्थानों के साथ सहयोग करना।

समिति की संरचना

शासी निकाय

अध्यक्ष

प्रधानमंत्री

उपाध्यक्ष

श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्य (मई, 2015 तक)

डॉ. महेश शर्मा, माननीय केन्द्रिय संस्कृति मंत्री (जून, 2015 से)

सदस्य

प्रभारी मंत्री, संस्कृति मंत्रालय

दिल्ली के लेफ्टिनेंट गवर्नर

दिल्ली के मेयर

श्री लक्ष्मी दास

श्री शंकर कुमार सान्याल

सुश्री रजनी बख्शी

श्री त्रिदीप सुहृद

श्री नारायण भाई भट्टाचार्य

डा. हर्ष वर्द्धन कामराह

सुश्री नीलिमा वर्द्धन

श्री अनिल कुमार नौरिया (मई, 2014 तक)

डा. सुपर्णा गोप्टु

श्री रंजी थॉमस

सचिव, संस्कृति मंत्रालय

प्रधानमंत्री के सूचना सलाहकार

प्रमुख इंजीनियर, सीपीडब्ल्यूडी

सचिव, (व्यय), वित्त मंत्रालय

सचिव, शहरी विकास मंत्रालय

सचिव, शिक्षा मंत्रालय

दिल्ली के आयुक्त, दिल्ली नगर निगम

अध्यक्ष/प्रशासक, नई दिल्ली पालिका समिति

सदस्य सचिव

संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय

कार्यकारी समिति

अध्यक्ष : श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्य

सदस्य

श्री लक्ष्मी दास

श्री शंकर कुमार सान्याल

सुश्री रजनी बख्शी

श्री त्रिदीप सुहृद

सदस्य सचिव

संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय

निदेशक

मणिमाला–16 मार्च, 2015 तक

बंदना शर्मा–17 मार्च, 2015 से

कार्यक्रम सारणी

कार्यक्रम	दिनांक	कार्यक्रम का स्थान	कार्यक्रम के अहम क्षेत्र	लाभार्थी
मूल्य सृजन शिविर आयोजित	अप्रैल 26 से 1 मई, 2014	गांधी दर्शन	ईमानदारी, समर्पण, टीम भावना, सामूहिक जीवन, शारीरिक श्रम, स्वच्छता आदि के मूल्य मन में संजोने के जरिये गांधीवादी मूल्यों का संवर्द्धन।	दूरदराज एवं सुदूर क्षेत्रों के बच्चे
तिहाड़ में नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन	22 अप्रैल, 2014	केन्द्रीय जेल संख्या-5	बंदियों की चिकित्सा जांच	केन्द्रीय जेल संख्या 5 के बंदी
सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ नाटकों का त्योहार	30 अप्रैल, 2014	गांधी दर्शन	सामाजिक मुद्दों पर नाटक।	बच्चे और युवा
चंपारण सत्याग्रह समारोह आयोजित करने के लिए कार्यक्रम	14 अप्रैल, 2014	चंपारण, बिहार	चंपारण राज्य एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए राजनिति, समाज, रोजगार, संस्कृति एवं शिक्षा के एक कार्य संयोजन के रूप में महात्मा गांधी के दर्शन की समझ।	क्षेत्र के युवा
जयपुर में राष्ट्रीय सप्ताह समारोह (1919 के रॉलैट कानून (विधान) के खिलाफ राष्ट्रीय विरोध की याद में)	14 अप्रैल, 2014	जयपुर	जयपुर दो महान शख्सियतों बाबा साहब अम्बेडकर एवं गांधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह आंदोलन के महत्व को रेखांकित करना।	युवा
आगंतुकों की भागीदारी कार्यक्रम पर प्रशिक्षण आयोजित	26 मई, 2014	गांधी दर्शन	संग्रहालय से संबंधित संवेदनशीलताओं को रेखांकित करना और आगंतुक/अतिथि को संग्रहालय की तरफ आकर्षित करने में मार्गदर्शकों की भागीदारी।	संग्रहालय एवं कर्मचारियों के शैक्षणिक मार्गदर्शक
महात्मा गांधी-एक कलात्मक अभिव्यक्ति	31 मई, 2014	केन्द्रीय बंदी तिहाड़-सीजे 5	महात्मा गांधी के जीवन के संदेश को आपसी मेलजोल के जरिये समझने एवं रचनात्मक गतिविधियों में बंदियों की भागीदारी को शामिल करना	तिहाड़ के बंदी
लड़कियों के शांति कार्यकर्ता समूह का अनुकूलन कार्यक्रम	7 मई, 2014	हांडिक गर्ल्स कॉलेज, गुवाहाटी, असम	अनुकूलन का जोर इस बात पर था कि किस प्रकार हांडिक गर्ल्स कॉलेज की छात्राएं समुदाय में कार्यकर्ता की भूमिका निभाती हैं।	कॉलेज के युवा, खासकर लड़कियाँ

बिहार में ग्राम स्वराज्य शिविर	मई 18–19, 2014	सद्भावना आश्रम फाउंडेशन, सर्वोदय नगर, सुपौल, बिहार	भागीदारों को ग्राम स्वराज्य के जरिये ग्रामीणों को स्वनिर्भर बनाने के लिए ग्रामीण उत्थान के मूलभूत तत्वों की जानकारी दी गई। बापू के जीवन तथा दर्शन एवं ग्राम स्वराज्य, ग्राम उद्योग तथा रचनात्मक कार्यक्रम को लेकर विचार विमर्श	गांधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ता
समाज के वंचित वर्गों के बच्चों के साथ मेलजोल	8 जून, 2014	गांधी स्मृति	शैक्षणिक यात्राओं एवं मेलजोल के जरिये महात्मा गांधी के जीवन एवं दर्शन को समझना	बच्चे
लड़कियों के खिलाफ हिंसा के मूल कारण पर चर्चा: क्या हैं समाधान	21 जून, 2014	गांधी दर्शन	1. महिलाओं एवं लड़कियों के खिलाफ हिंसा के सभी रूपों का खात्मा एवं रोकथाम। 2. इस पर चर्चा कि लड़कियों के खिलाफ हिंसा के मुद्दें के समाधान के लिए किस प्रकार एक सामूहिक चेतना का इजाद किया जा सके।	युवा, बच्चे, एनजीओ, सेक्स वर्कर, घरेलू सहायिकाएं आदि
विशेष रूप से सक्षम बच्चों के लिए गांधी ग्रीष्म शिविर	23 से 28 जून, 2014	गांधी दर्शन	कार्यक्रम का उद्देश्य सक्षमजनों के आत्म-गौरव का निर्माण करना है जिससे कि वे अपने जीवन में आने वाली किसी भी चुनौती का किसी अन्य समान्य व्यक्ति की तरह सामना कर सकें।	विशेष सक्षमजन एवं उनसे जुड़े व्यक्ति
राष्ट्रीय युवा समाज साधना शिविर	13 से 15 जून, 2014	समन्वय आश्रम, बोध गया, बिहार	युवाओं को मूल्य-उन्मुखी कार्यक्रमों के जरिये गांधी के निकट लाना। विस्थापित /भूमिहीन परिवारों के युवाओं के साथ निकटता के साथ काम करना। जिससे कि वे हिंसक रास्तों पर कदम न बढ़ाएं।	मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल एवं झारखंड के 150 युवाओं की भागीदारी, जिन्होंने कार्यक्रम में हिस्सा लिया
नेतृत्व-राज्य स्तरीय ग्रीष्मकालीन शिविर	14 से 18 जून, 2014	केन्द्रीय बंदी तिहाड़-सीजे 1	रचनात्मक गतिविधियों में बंदियों की भागीदारी को शामिल करने तथा मेलजोल बढ़ाने के जरिये महात्मा गांधी के जीवन संदेश को समझना।	तिहाड़ जेल के बंदी
गांधी के सर्वोदय एवं रंगभेद नीति के खिलाफ आंदोलन पर बातचीत	18 जुलाई, 2014	गांधी दर्शन	नेल्सन मंडेला के 96वें जन्म दिवस समारोह को मनाना तथा मदीबा के नेतृत्व में संघर्ष को समझना जो कि सत्याग्रही गांधीजी द्वारा प्रभावित था।	महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के छात्र तथा गांधीवादी रचनात्मक श्रमिक
स्वर्गीय प्रभाष जोशी के 77वें जन्म दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि	19 जुलाई, 2014	गांधी दर्शन	पत्रकारिता-एक सेवा बनाम आज की बदलती मीडिया प्राद्यौगिकी पर चर्चा की शुरूआत की गई जिससे कि यह देखा जा सके कि किस प्रकार सबसे बुद्धिमान एवं सर्वश्रेष्ठ दिमाग नए एवं रचनात्मक उद्देश्यों के लिए नए मीडिया का उपयोग कर सकते हैं।	मीडिया समुदाय से जुड़े पत्रकार, विद्वान, लेखक एवं समाज के विभिन्न वर्गों के लोग
अंतर-विद्यालय डांडी मार्च रॉलिंग ट्रॉफी	24 जुलाई, 2014	गांधी दर्शन	सामाजिक न्याय पर बच्चों का दृष्टिकोण: समन्वय एवं शांति का एक अंतरंग हिस्सा।	62 विद्यालयों के लगभग 130 छात्रों ने इसमें भाग लिया
गांधी दर्शन मोबाइल रेडियो एवं सूचना स्वराज पर संगोष्ठी	21-25 जुलाई, 2014	गांधी दर्शन	भागीदारों को संचार के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया कि किस प्रकार मोबाइल के जरिये महत्वपूर्ण संदेश दूरदराज के क्षेत्रों में लोगों तक पहुंचाया जा सकता है।	समिति के कुछ कर्मचारियों समेत विभिन्न राज्यों के 100 लोगों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया

आदिवासी क्षेत्रों में गांधीवादी श्रमिकों के लिए राष्ट्रीय युवा शिविर	28–30 जुलाई, 2014	गांधी दर्शन	युवाओं को मूल्य आधारित कार्यक्रमों के जरिये गांधी के करीब लाना, विस्थापित/भूमिहीन परिवारों के युवाओं सन्मार्ग पर चलने के लिए के साथ निकटता के काम करना जिससे कि वे हिंसा का रास्ता न अपनाएं। भागीदारी के तरीके: सामूहिक जीवन, शारीरिक श्रम, स्वच्छता आदि।	गांधीवादी रचनात्मक श्रमिक
बोध गया में संस्कार शिविर	24–28 जुलाई, 2014		बोध गया, बिहार के बच्चों को गांधीवादी सिद्धांतों एवं गांधीवादी मूल्य के बुनियादी कारकों के अनुकूल बनाना, बच्चों को बुनियादी संघर्ष समाधान तकनीकों की जानकारी देना तथा भागीदारों के बीच उनमें गांधीवादी रचनात्मक कार्यक्रमों के महत्व से अवगत कराना।	सीमांत (महादलित) समुदायों के 250 से अधिक बच्चों ने इसमें भाग लिया।
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के 94वें मृत्यु दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि	2 अगस्त, 2014	गांधी दर्शन	देश के विभिन्न हिस्सों में वर्ष के लिए कार्ययोजना विकसित करना।	देश के विभिन्न हिस्सों के भागीदार
अंत:विद्यालय वंदे मात्रम् रॉलिंग ट्रॉफी–संगीतमय प्रतियोगिता आयोजित	8 अगस्त, 2014	गांधी दर्शन	बच्चों ने स्वयं लिखित/रचित गीत प्रस्तुत किये जिनमें राष्ट्रीय एकीकरण, देशभक्ति, सामुदायिक समन्वय, आजादी के लिए संघर्ष जैसे विषय वस्तु शामिल थे, इस प्रकार उन्होंने अपनी रचनात्मक प्रदर्शित की।	दिल्ली एवं एनसीआर के 22 विद्यालयों के 260 से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया।
लड़कियों के खिलाफ हिंसा पर बातचीत: मुद्दे एवं चिंताएं	30 अगस्त, 2014	गिन्नी देवी पी.जी. मोदी महिला महाविद्यालय, मोदी नगर, उत्तर प्रदेश	गिन्नी देवी पी.जी. मोदी महिला महाविद्यालय, मोदी नगर, उत्तर प्रदेश सभी प्रकार के भेदभाव के मुद्दों–शिक्षा से लेकर पौष्टिकता का सही स्तर प्रदान करना और लड़कियों की स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ाना, यौन शोषण, छेड़छाड़, तस्करी एवं दहेज के मुद्दों पर चर्चा की गई।	200 से अधिक भागीदारी जिनमें अधिकांश लड़कियां थीं, ने भाग लिया।
नेतृत्व एवं लैंगिक संवेदनीकरण	6–10 अगस्त, 2014	देवलाली, मुम्बई	पुरुषों को संवेदनशील बनाना तथा उन्हें इस बात से अवगत कराना कि किस प्रकार उनका बर्ताव महिलाओं के विकास और अधिकारिता की दिशा में अहम है।	युवा एवं महिलाएं
गांधीवादी चिंतन पर तीन महीने का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम का समापन	17–18 अगस्त, 2014	चेरापल्ली जेल, हैदराबाद	महात्मा गांधी के जीवन और महात्मा गांधी के जीवन के संदेश को समझने की दिशा में विचारों पर तीन महीने का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम।	जेल के बंदी
महात्मा गांधी–एक कलात्मक अभिव्यक्ति सी जे–6	6 सितम्बर, 2014	केन्द्रीय बंदी तिहाड़–सीजे 6	रचनात्मक गतिविधियों में बंदियों की भागीदारी को शामिल करने तथा मेलजोल बढ़ाने के जरिये महात्मा गांधी के जीवन संदेश को समझना।	जेल के बंदी

महात्मा गांधी के नेतृत्व मूल्यों एवं समसामयिक दुनिया के परिदृश्य पर बातचीत	18 सितम्बर, 2014	गांधी दर्शन	इस कार्यक्रम ने विचारों के आदान प्रदान एवं दुनिया के सबसे प्राचीन तथा सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच तथा महात्मा गांधी की समझ की दिशा में भविष्य के सहयोग पर ध्यान केन्द्रित किया।	अमेरिकी सरकार के शिष्टमंडलों एवं रिपब्लिकन्स एवं डेमोक्रेट्स के प्रतिनिधि
मूल्य सृजन शिविर	25 सितम्बर-4 अक्टूबर, 2014	गांधी दर्शन	ईमानदारी, समर्पण, टीम भावना, सामूहिक जीवन, शारीरिक श्रम, स्वच्छता आदि के मूल्य मन में संजोने के जरिये गांधीवादी मूल्यों का संवर्द्धन।	सुरोवी शिशु पंचायत एवं मणिपुर के लगभग 45 किशोरों ने शिविर में हिस्सा लिया।
महात्मा गांधी की 145वीं जन्म शताब्दी	2 अक्टूबर, 2014	गांधी स्मृति	गांधी जयंती समारोह	450 स्कूली छात्रों, विख्यात व्यक्तियों एवं समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने हिस्सा (कुल लगभग 1500) लोगों ने हिस्सा लिया।
हिन्दी पखवाड़ा प्रतियोगिता	16-30 अक्टूबर, 2014	गांधी दर्शन एवं गांधी स्मृति	हिन्दी भाषा का संवर्द्धन	सुरक्षा, बागवानी, सफाई सेवकों आदि समिति के लगभग सभी विभागों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।
चतुर्थ राष्ट्रीय गांधी बाल मेला	18-20 नवम्बर, 2014	गांधी दर्शन	बच्चों की रचनात्मक प्रतिभाओं को प्रदर्शित करना	कार्यक्रम में देश के 18 राज्यों एवं नेपाल के बच्चों ने भाग लिया
चतुर्थ आदिवासी संस्कृति संगम	28-30 नवम्बर, 2014	गांधी दर्शन	देश भर में आदिवासी मुद्दों एवं चिंताओं पर फोकस।	विकास के नए युग में आदिवासी विषय पर जन संसद देश के विभिन्न हिस्सों से 650 आदिवासियों ने भाग लिया।
भारत में गृह आधारित शिल्प क्षेत्र में कोई बाल श्रम नहीं ''आपूर्ति श्रृंखला मॉडल'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन	8 दिसम्बर, 2014	गांधी दर्शन	भारत में गृह आधारित शिल्प क्षेत्र में बाल श्रम मुद्दों पर विचार करने के लिए एक कारगर मॉडल विकसित करना एवं प्रमुख साझीदारी का समर्थन प्राप्त करना।	देश के विभिन्न हिस्सों के 200 से अधिक भागीदारो ने हिस्सा लिया।
तीसरा गांधी साहित्य समारोह आयोजित	16-24 दिसम्बर, 2014	गांधी स्मृति	गांधी साहित्य पर जागरूकता सृजित करने का लक्ष्य। विभिन्न प्रकाशकों ने समारोह में हिस्सा लिया। समारोह के दौरान पुस्तक विमोचन, परिचर्चा, नाटक आदि गतिविधियों का भी आयोजन हुआ।	प्रकाशक, लेखक, कथाकार, बच्चे एवं युवा।
'युवा एवं गांधीवादी मार्ग पर सम्मेलन	27-30 दिसम्बर, 2014	वाराणसी, उ.प्र.	महात्मा गांधी के जीवन दर्शन एवं सत्य एवं अहिंसा की गतिशीलता को समझना।	युवा एवं गांधीवादी रचनात्मक श्रमिक
संस्कृति मंत्री एवं समिति के उपाध्यक्ष डा. महेश शर्मा।	20 जनवरी, 2015	गांधी स्मृति	कर्मचारी सदस्यों से मुलाकात एवं संग्रहालय की यात्रा	समिति कर्मचारी
महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के 100 वर्ष पर युवा, संघर्ष एवं अहिंसा पर बातचीत	17 जनवरी, 2015	गांधी दर्शन	कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं के सामने समाज के एक महत्वपूर्ण वर्ग के रूप में आने वाली समस्याओं पर विचार विमर्श करने का एक अवसर प्रदान करना था;	दिल्ली विश्वविद्यालय के तहत कॉलेजों एवं एनसीआर क्षेत्र के अन्य शैक्षणिक संस्थानों के 100

			उन्हें अहिंसक कार्यवाई शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करना था, और हत्या नहीं करने की तथा अहिंसक समाज की अवधारणा को बढ़ावा देना था।	विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।
महात्मा गांधी एवं धर्म–एक परिचर्चा	21 जनवरी, 2015	गांधी दर्शन	गांधीजी द्वारा परिकल्पित एक न्यायपूर्ण समाज के विचार पर चर्चा की गई जिसमें धर्म और धर्मनिरपेक्षता पर विशेष ज़ोर दिया गया।	गांधीवादियों, लेखकों, विद्वानों एवं युवाओं ने भाग लिया।
विशेष सक्षम जनों के लिए मूल्य सृजन शिविर	23 जनवरी से 1 फरवरी, 2015	गांधी दर्शन	विशेष सक्षम जनों को एक मंच देना तथा उन्हें रचनात्मक गतिविधियों में शामिल करना।	गुजरात, राजस्थान एवं झारखंड के विशेष सक्षम बच्चों ने भाग लिया।
राष्ट्र ने महात्मा गांधी के 67वें शहादत दिवस पर श्रद्धाजंलि अर्पित की	30 जनवरी, 2015	गांधी स्मृति	महात्मा गांधी को आदर के साथ स्मरण करना और संगीत तथा प्रार्थना के ज़रिये शांति एवं अहिंसा के उनके विचारों का समारोह आयोजित करना।	500 से अधिक विशेष सक्षम बच्चों ने राष्ट्रपिता को संगीतमय श्रद्धांजलि में भाग लिया।
महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के 100 वर्ष–1915 से 2015 पर शताब्दी समारोह	9 जनवरी, 2015	मुम्बई	महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर शताब्दी समारोह मनाना और बातचीत एवं विचार विमर्शों के जरिये सत्य और अहिंसा के उनके दर्शन को समझना।	विभिन्न धाराओं के युवाओं ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
विशेष सक्षम बच्चों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित	3–4 जनवरी, 2015	रेनुअल, जयपुर	विशेष सक्षम जनों को एक मंच प्रदान करना एवं उन्हें रचनात्मक गतिविधियों में शामिल करना।	इस कार्यक्रम में 250 बच्चों ने भाग लिया।
हस्तशिल्पकारों एवं शिक्षा को समेकित करने पर कार्यशाला	16–19 जनवरी, 2015	पश्चिम बंगाल	प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित	असम, गुजरात, झारखंड, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश एवं पं. बंगाल के 60 शिक्षकों, शिक्षा प्रेमियों ने भागीदारी की; साथ ही एमएबीएल स्कूल एव प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान के 30 शिक्षकों ने भी अपने छात्रों के साथ भागीदारी की।
महादलित बच्चों के लिए बाल संस्कार शिविर आयोजित	18–20 जनवरी, 2015	चंपारण, बिहार	1 तत्कालिक जरूरतों पर ध्यान देना। 2 बच्चों को उनके अधिकारों एवं अन्य ग्रामीण समुदायों के बारे में संवेदनशील बनाना। 3. सफाई, स्वच्छता एवं शुद्धि के बारे में संवेदनशील बनाना। 4. बच्चों को गांधीवादी सिद्धांतों एवं गांधीवादी मूल्यों के मूलभूत कारकों के बारे में अवगत कराना। 5. सीखने की क्षमताओं को बेहतर करना आदि।	इस समुदाय के 10–16 वर्ष की उम्र के 150 बच्चों ने भाग लिया।

कुष्ठ पीड़ित माता-पिताओं के बच्चों के लिए बाल संस्कार शिविर	28-30 जनवरी, 2015	हरिद्वार	इस कार्यक्रम के जरिये बच्चों के दिमाग से इस कलंक को हटाने की कोशिश थी कि वे किसी भी प्रकार की सामाजिक गतिविधियों में केवल इसलिए भाग नहीं ले सकते क्योंकि कुष्ठ पीड़ित माता-पिताओं के बच्चे हैं।	कार्यक्रम में 10-14 वर्ष के उम्र के 150 बच्चों ने भाग लिया।
ब्रिक्स शिष्टमंडल के साथ मेलजोल	3 फरवरी, 2015	गांधी स्मृति	विचार विमर्श के दौरान एक विश्वव्यापी बातचीत के सृजन, संचार माध्यमों का विकास और ब्रिक्स देशों के युवा संगठनों के बीच आपसी संपर्क के लिए एक स्थायी मंच के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित किया गया।	यात्रा पर आए शिष्टमंडल और महाविद्यालयों के युवक।
अंध-भक्ति पर नाटक 'सुकरात से दाभोलकर वाया तुकाराम' का मंचन	18 फरवरी, 2015	गांधी स्मृति	यह नाटक समाजिक चिंतकों को समर्पित था जिन्होंने सत्य एवं लोगों को विवेकपूर्ण बनाने के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी।	महाविद्यालयों के छात्र
'महात्मा गांधी के विविध आयामों' पर संगोष्ठी	3 फरवरी, 2015	बलरामपुर, उ.प्र.	महात्मा गांधी के जीवन के संदेश एवं दर्शन को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश।	लगभग 200 युवाओं ने भागीदारी की।
नर्मदा घाटी में बाल मेला आयोजित	12-15 फरवरी, 2015	नर्मदा, जीवांश, महाराष्ट्र	समुदाय के बच्चों को समग्र गतिविधियों में भाग लेने के लिए मंच उपलब्ध कराना।	लगभग 600 जन-जातीय बच्चे और 9 जीवांश के छात्रों ने (प्राथमिक स्तर पर पढ़ने वाल) भाग लिया।
गांधीवादी दर्शन पर परामर्श	16 फरवरी, 2015	अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश	समसामयिक परिदृश्य में गांधी जी के 'शांति, अहिंसा एवं सत्य के सिद्धांतों के अनुपालन पर चर्चा की गई।	गांधीवादी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं समाज की विभिन्न धाराओं के युवा।
विश्व शांति प्रार्थना	4 मार्च, 2015	गांधी स्मृति	अंतरराष्ट्रीय महिला सप्ताह मनाना एवं शांति के लिए प्रार्थना।	लगभग 200 भागीदारी ने बैठक में हिस्सा लिया।
युवा समाज साधना शिविर क्षमता निर्माण एवं अल्पसंख्यक अधिकारों पर कार्यशाला	13-16 मार्च, 2015	गांधी दर्शन	मूल्य सवंर्धन कार्यक्रमों के जरिये युवाओं को गांधी के निकट लाना। शिविर के दौरान सामाजिक मुद्दों पर चर्चा शामिल रही।	हरियाणा, उ.प्र., बिहार एवं दिल्ली के 40 भागीदारी ने हिस्सा लिया।
गंगा बचाओ आंदोलन	12 मार्च, 2015	गांधी दर्शन	विचार विमर्श गंगा नदी के आरक्षण/सफाई समेत परिस्थितकी/पर्यावरण मुद्दों पर केन्द्रित रहा।	कार्यकर्ताओं, वैज्ञानिकों, मीडिया से जुड़े लोग एवं समाज की विभिन्न धाराओं के लोगों ने हिस्सा लिया।
महिला श्रम शक्ति मेला आयोजित	12 मार्च, 2015	गांधी दर्शन	नमक सत्याग्रह की 85वीं जयंती मनाने के लिए समारोह। कार्यक्रम में महिला उद्यमियों एवं विकास की दिशा में उनके योगदान पर ध्यान केन्द्रित किया गया।	विभिन्न राज्यों की 400 से ज्यादा महिलाओं ने हिस्सा लिया।

महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि

महात्मा गांधी की 145वीं जन्म शताब्दी समारोह

समिति ने 2 अक्तूबर, 2014 को सर्वधर्म प्रार्थना का आयोजन कर गांधी स्मृति में महात्मा गांधी की 145वीं जन्म शताब्दी मनाई। भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद हामिद अंसारी, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री, डॉ. हर्षवर्धन ने समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों एवं राजनयिक वर्ग के सदस्यों के साथ राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

असम, मणिपुर एवं दिल्ली, एनसीआर के विभिन्न संस्थानों एवं विद्यालयों के लगभग 450 बच्चों ने स्मारक कार्यक्रम में हिस्सा लिया और गांधी जी को संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की। बापा आश्रम आवासीय प्राथमिक विद्यालय, हरिजन सेवक संघ के लगभग 50 बच्चे कार्यक्रम के दौरान चरखों पर लगातार सूत कातते रहे।

1

2

3

1. *माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये।*
2. *भूतपूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह तथा उनकी पत्नी श्रीमती गुरशरण कौर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए।*
3. *भक्ति संगीत कलाकार पद्म भूषण पं. छन्नू लाल मिश्र गांधीजी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए।*

(बांए से दांए) असम तथा मणिपुर के बच्चे दिल्ली के विद्यार्थियों के साथ महात्मा गांधी को संगीतमय श्रद्धांजलि देते हुये तथा इसी अवसर पर चरखा चलाते बच्चे। (दांए)

कार्यक्रम में कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान, मणिपुर, सुरोवी शिशु पंचायत, असम के बच्चों ने भाग लिया। दिल्ली के जिन संस्थानों ने इसमें भाग लिया, उनमें बापा आश्रम आवासीय प्राथमिक विद्यालय, हरिजन सेवक संघ; राष्ट्रीय विरजानंद अंध कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय; शहीद हेमू कलानी सरकारी सर्वोदय बाल विद्यालय; केंद्रीय विद्यालय (एसपीजी); पारदर्शिता; चंद्र आर्य विद्या मंदिर; रानी दत्ता आर्य विद्यालय; सामाजिक सुरक्षा केंद्र, कारवाई एवं अनुसंधान; और सरकारी सर्वोदय कन्या विद्यालय, हस्तसाल शामिल थे।

इस अवसर पर विख्यात गायक पद्म भूषण, पंडित छन्नूलाल मिश्रा ने भक्ति संगीत का नेतृत्व किया जहां उन्होंने मीराबाई, कबीर, गुरू नानक, गोस्वामी तुलसीदास जैसे महान संतों के भजन गाए। उनके गाए महात्मा गांधी के पसंदीदा भजन 'वैष्णव जन तो' एवं 'रघुपति राघव राजा राम' ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर, संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव, बान की मून के संदेश को भारत एवं भूटान के संयुक्त राष्ट्र सूचना केंद्र की निदेशक डा. किरण मेहरा कर्पेलमैन ने पढ़ा। संदेश में कहा गया:

संदेश के संक्षिप्त उद्धरण:

अहिंसा के इस अंतरराष्ट्रीय दिवस पर, हम स्वर्गीय महात्मा गांधी के दर्शन का स्मरण करते हैं जिन्होंने अपने उदाहरण से साबित किया कि शांतिपूर्ण विरोधों से सैन्य आक्रमणों की तुलना में काफी अधिक कारगर हैं। महात्मा गांधी की मृत्यु के वर्ष 1948 में अपनाए गए मानवाधिकारों पर सार्वभौमिक घोषणापत्र मे वर्णित सिद्धांत उनके मतों से काफी प्रभावित हैं.........

हमें सामंजस्यपूर्ण तरीके से एक साथ रहने के लिए बातचीत एवं समझदारी पर आधारित शांति की एक संस्कृति का विकास करना होगा तथा मानवता की समृद्ध विविधता का सम्मान एवं अनुष्ठान करना होगा.........

67वें बलिदान दिवस पर महात्मा गांधी याद किए गए

भारत के उपराष्ट्रपति डा. मोहम्मद हमीद अंसारी, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के 67वें बलिदान दिवस पर राष्ट्रपिता को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने में देश का नेतृत्व किया। संस्कृति मंत्री डा. महेश शर्मा, जो समिति के उपाध्यक्ष भी हैं, तथा राजनयिक दूतवर्ग के सदस्य एवं समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

30 जनवरी, 2015 को गांधी स्मृति में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बलिदान दिवस पर दिल्ली तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के विभिन्न संस्थाओं से विशेष रूप से सक्षम बच्चों द्वारा संगीतमय श्रद्धांजलि।

(बांए से दांए) गांधी स्मृति में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये, साथ में हैं – समिति के उपाध्यक्ष तथा संस्कृति मंत्री डा. महेश शर्मा तथा समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला। भक्ति संगीत कलाकार श्री सुरेश वाडेकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। (दांए)

दिल्ली, गुजरात, राजस्थान एवं झारखंड के 500 से भी अधिक विशेष सक्षम बच्चों ने महात्मा गांधी को संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की। मानसिक रूप से विकलांग, दृष्टिदोष वाले एवं चलने फिरने में अक्षम बच्चों ने कार्यक्रम में भाग लिया। जिन संस्थानों ने भाग लिया, उनके नाम हैं– झारखंड: विकलांग संघर्ष समिति, जमशेदपुर; नवसारी, गुजरात; जन कला साहित्य मंच संस्थान, राजस्थान; जयपुर भारतीय विद्या भवन, मेहता विद्यालय; अक्षय प्रतिष्ठान; अमरज्योति स्कूल फॉर इनक्लुसिव एजुकेशन; जे पी एम सीनियर सेकेंडरी स्कूल फॉर ब्लाईंड ब्यॉयज; नेशनल एसोसिएशन ऑफद ब्लाईंड, आर के पुरम, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश; सेंटर फॉर ब्लाईंड वूमेन एंड डिज़ेबिलिटी स्टडीज़, एनएबी, हौजखास; अंध महा विद्यालय, पंचकुईयां रोड एवं राष्ट्रीय विरजानंद अंध कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, विकासपुरी। श्री सुधांशु बहुगुणा ने बच्चों द्वारा दी गई संगीतमय श्रद्धांजलि का संयोजन किया। उनके साथ तबले पर संगत की श्री कुलदीप कुमार तथा वायलिन पर श्री आर श्रीधर ने। बापा आश्रम आवासीय विद्यालय, हरिजन सेवक संघ, किंग्सवे कैंप के 85 बच्चों ने कार्यक्रम के दौरान चरखा काता। विभिन्न धार्मिक संतों के इस अवसर पर सर्वधर्म प्रार्थना की।

मौन की ध्वनि: महात्मा गांधी को मौन श्रद्धांजलि।

कार्यक्रम के उपरान्त प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी बच्चों के साथ बातचीत करते हुये।

कार्यक्रम की एक बड़ी विशेषता विख्यात गायक एवं शहरी विकास राज्य मंत्री श्री बाबुल सुप्रियो द्वारा राष्ट्रीय अखंडता पर एक गीत की संगीतमय प्रस्तुति थी। जब श्री सुरेश वाडेकर ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए भक्ति संगीत का गायन शुरू किया, कबीर एवं अन्य संतों तथा दार्शनिकों के गीत प्रार्थना मैदान में गूंजते रहे।

महत्वपूर्ण कार्यक्रम

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ - (एक संवाद)

भारत सरकार की पहल बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के एक हिस्से के रूप में, गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन ने लड़कियों की सुरक्षा एवं हिफाजत तथा उनके लिए जीवन के सभी क्षेत्रों में समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए कई संवेदना जगाने वाले कार्यक्रमों का आयोजन किया।

लड़कियों के खिलाफ हिंसा के मूल कारणों पर बातचीत: क्या हैं समाधान?

175 से अधिक भागीदारों, जिनमें घरेलू सहायिकाएं, यौन उत्पीड़न की शिकार, बाल उत्पीड़न की शिकार, स्वयंसेवी संगठनों के कार्यकर्ता, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों की छात्राएं तथा कार्यकर्ता शामिल थे, ने लड़कियों के खिलाफ हिंसा के मूल कारणों पर बातचीत: ''क्या हैं समाधान?'' विषय पर आयोजित दिन भर चलने वाली परिचर्चा में भाग लिया जिसका आयोजन गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन ने 21 जून, 2014 को किया था।

विषय वस्तु था महिलाओं एवं लड़कियों के खिलाफ सभी प्रकार की हिंसा का खात्मा एवं रोकथाम जिसमें दो मुख्य क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया

''मनुष्य जितनी भी बुराईयों के लिए ज़िम्मेदार है, उनमें मेरा मानना है कि कोई भी उतना घृणित, स्तब्धकारी या निर्मम नहीं है जितना मानवता की आधी आबादी यानी महिला जो कहीं से भी कमजोर नहीं है, का शोषण करना है। वह पुरुषों की तुलना में ज्यादा महान है क्योंकि वह आज भी बलिदान, मूक प्रताड़ना, जलालत, भरोसे और ज्ञान की प्रतीक है।''

(महात्मा गांधी यंग इंडिया में, 15.09.1921)

श्री लक्ष्मीदास दीप प्रज्जवलित करते हुये, साथ हैं प्रसन्नमुद्रा में श्रीमती बुलबुल दास और डॉ. मर्चेंट।

श्रीमती रज़िया इस्माइल अब्बासी प्रतिभागियों के साथ बात करती हुई तथा तन्मयता से सुनते हुये श्रीमती क्षमा शर्मा।

महिलाओं के प्रति हिंसा के मूल कारण विषय पर गांधी दर्शन में आयोजित विचार गोष्ठी में समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि।

गया था: रोकथाम–कोई भी घटना होने से पहले उसकी रोकथाम। इस चर्चा पर भी जोर दिया गया था कि किस प्रकार लड़कियों के खिलाफ हिंसा के मुद्दों के समाधान के लिए एक सामूहिक चेतना का निर्माण किया जाए। चर्चा का उद्देश्य विविध आयु समूह के लोगों के बीच एक मंच भी मुहैया कराना था; उन कदमों की पहचान करनी थी जिन्हें उठाया जाना चाहिए और उन अच्छे प्रचलनों को अपनाना था जो समाज में योगदान दे सकते हैं; तथा ऐसे किसी उभरते मुद्दे या प्रचलनों की पहचान करनी थी जिन पर विचार किया जाना चाहिए।

बातचीत में जिन्होंने भाग लिया उनमें शामिल थे; मर्यादा के साथ शांति एवं विकास के लिए महिला गठबंधन की अंतरराष्ट्रीय संयोजक एवं बाल अधिकार के लिए भारतीय संधि की संस्थापक निदेशक सुश्री रजिया इस्माइल अब्बासी; हिन्दुस्तान टाइम्स से जुड़ी विख्यात पत्रकार सुश्री क्षमा शर्मा; वरिष्ठ अधिवक्ता और अखिल भारतीय महिला संगठन की सदस्य श्रीमती बुलबुल दास, हरिजन सेवक संघ के सचिव श्री लक्ष्मी दास; केंद्रीय सामाजिक कल्याण बोर्ड की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती विद्या बेन शाह, बहाई हाउस ऑफ वरशिप से जुड़े डॉ. ए के मर्चेंट; वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर के निदेशक प्रो. ओम गुप्ता; संयुक्त महिला कार्यक्रम की सुश्री विमला पंत; कल्याणम के संस्थापक निदेशक श्री आर बी प्रशांत; सीएएसपी प्लान के श्री उमेश कुमार। कई संगठन जो महिला एवं बाल मुद्दों पर काम कर रहे हैं, उनमें शामिल हैं– कल्याणम, प्रेरणा, आईडब्ल्यूआईडी, दिल्ली, इंस्टीच्यूट ऑफ सोशल स्टडीज ट्रस्ट (आईएसएसटी) साथी सेंटर, कल्याणपुरी; कल्याणम; मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज; एमिटी यूनिवर्सिटी; खुदाई खिदमतगार; नवज्योति इंडिया फाउंडेशन; जामिया; आईएमएमसी; दिल्ली विश्वविद्यालय; प्रैक्सिस; एवं एसएडीईडी।

समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि लड़कियों के खिलाफ हिंसा की शुरूआत गर्भावस्था से ही हो जाती है। उन्होंने कहा कि लड़की भ्रूण हत्या एवं नवजात शिशु हत्या के मामले प्रदर्शित करते हैं कि भारत में लड़कियों के खिलाफ भेदभाव कितना गहरा है। उन्होंने इस तथ्य पर ज़ोर देते हुए कहा कि कन्या शिशु को जन्म देना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उनका पालन पोषण करना और उन्हें एक अच्छी जिंदगी देना भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कई क्षेत्रों में लड़कियों की शोचनीय स्थिति पर चिंता जताई और बताया कि किस प्रकार लड़कियों को उनके घरों में भी हिंसा का शिकार होना पड़ता है।

सुश्री रजिया इस्माइल अब्बासी ने रेखांकित किया कि चाहे व्यक्ति किसी भी जेंडर का क्यों न हो, उसके जीवन का सबसे अहम पहलू होता है, एक मनुष्य बन जाने का मार्ग और खुद के लिए जीवन जीने का सही रास्ता चुनना। उन्होंने कहा कि 'समाज हमें भूमिकाएं सौंपने का प्रयास करता है और हमें हमारे संबंधित श्रेणियों में

रख देता है। संरचनागत कारक और पारंपरिक भूमिकाएं किसी महिला का उसकी परिस्थितियों से ऊपर उठना मुश्किल बना देता है। उन्होंने कहा कि 'इसके अतिरिक्त, हम एक ऐसे सामाजिक तानेबाने में जकड़े हुए हैं जहां हर चीज के बारे में पहले से धारणा बनी हुई है।'

सुश्री अब्बासी ने महिलाओं के वस्तुकरण पर भी चिंता जताई और बनाया कि पितृसतात्मक समाज की मानसिकता कितनी गहरी है और अब वक्त आत्मनिरीक्षण करने का है। उन्होंने गांधी को उद्धृत करते हुए कि 'अपने में वह परिवर्तन लाओ, जो तुम दुनिया में देखना चाहते हो' जोर देकर कहा कि समाज को लड़कियों के खिलाफ हिंसा को मिटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की ज़रूरत है।

उन्होंने कहा कि यह देखते हुए कि हिंसा भेदभाव के साथ शुरू होता है; इस मुद्दे के मूल कारणों पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। उन्होंने छोटी घटनाओं के पीछे मूल कारणों पर बातचीत शुरू करने के मुद्दे पर विचार विमर्श करने की ज़रूरत पर बल दिया जो एक दिन बड़े दुष्परिणामों में बदल जाते हैं, साथ ही, इस बीमारी को फैलने से रोकने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि खामोश रह जाने की संस्कृति लड़कियों के खिलाफ हिंसा के इर्द गिर्द की जटिलता को और बढ़ा देती है।

सुश्री बुलबुल दास ने लड़कियों के खिलाफ हिंसा के मुद्दे पर चिंता जताते हुए महिलाओं एवं लड़कियों के खिलाफ हिंसा के सभी रूपों को खत्म करने के लिए एक सुनियोजित, समन्वित, टिकाऊ दृष्टिकोण अपनाने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने बताया कि महिलाओं की वर्तमान स्थिति मुख्य रूप से सामाजिक व्यवस्था का परिणाम है। उन्होंने कहा कि 'समाज विशेष रूप से लड़कियों को घरेलू कामकाज करने, बच्चों को पालने जैसे समाज में कुछ विशेष भूमिकाओं का निर्वाह करने वालों के रूप में चित्रित करने के जरिये सामाजिक परंपराओं को बल प्रदान करता है और उन्हें इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि उन्हें (महिलाओं/लड़कियों) सार्वजनिक जीवन में किसी भी प्रकार की दिलचस्पी जताने या यहां तक कि उनकी स्थिति के बारे में भी चिंता प्रकट करने की कोई जरूरत नहीं है।'

सुश्री दास ने सावधान रहने और ऐसे किसी भी मंच में, जो लड़कियों की सुरक्षा को लेकर आवाज़ उठाता है, भाग लेने में सक्रिय रहने की जरूरत पर जोर देते हुए रेखांकित किया कि समाज के भीतर लोगों के दृष्टिकोण में आमूल चूल परिवर्तन लाने और ऐसे कदम उठाने की जरूरत है जो महिलाओं को परदे के पीछे रखने और उन पर जुल्मों सितम ढाने के कट्टरवादी प्रचलनों का खात्मा करने को प्रोत्साहित करे।

बातचीत के उद्देश्य थे:

1. *लड़कियों के उत्पीड़न, शोषण एवं हिंसा के खिलाफ एक कारगर सु-समन्वित मानवीयतावादी सामूहिक कदम के लिए चर्चा की शुरूआत करना।*
2. *हिंसा के उन अनगिनत रूपों को समझना जिनका शिकार लड़कियों को रोज़ाना होना पड़ता है।*
3. *लड़कियों के खिलाफ हिंसा के विभिन्न रूपों पर ध्यान देने के लिए संभावित समाधानों पर चर्चा करना।*
4. *इस पर चर्चा करना और यह सुनिश्चित करना कि लड़कियों के खिलाफ हिंसा के मुद्दे का 'केवल एक महिला के मुद्दे' के रूप में न देखा जाए बल्कि एक सामाजिक मुद्दे के रूप में देखा जाए।*
5. *लड़कियों के लिए अनुकूल समाज के लिए एक सामूहिक चेतना विकसित करने के लिए और आगे की बातचीत।*
6. *इस पर चर्चा करना कि किस प्रकार लड़कियों का कल्याण संपूर्ण रूप से समाज के लिए एक प्राथमिकता बन जाए।*

उन्होंने इस विचार पर आक्रोश जताया कि कई लोगों की यह धारणा होती है कि कई सारे मामलों में लड़कियां ही छोटे कपड़े पहनने आदि के जरिये लड़कों को उकसाती प्रतीत होती हैं। उन्होंने कहा कि इसकी व्याख्या करने की भी ज़रूरत है कि कैसे किसी पांच वर्ष की लड़की के साथ बलात्कार हो जाता है जबकि वह इस घृणित अपराध के बारे में बिल्कुल ही कुछ नहीं जानती? उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त पुरुषों द्वारा किए जाने वाले इन नृशंस कार्यों की जानवरों के साथ तुलना करना भी गलत होगा क्योंकि जानवर इस प्रकार का बर्ताव नहीं करते।

इस अवसर पर भागीदारों के साथ एक खुली चर्चा का भी आयोजन किया गया जिसका संयोजन सुश्री क्षमा शर्मा ने किया। इस परिचर्चा के दौरान निम्नलिखित बिन्दु उभर कर सामने आए:

- कई भागीदारों ने मीडिया द्वारा निभाई जाने वाली नकारात्मक भूमिका का जिक्र किया। फिल्मों और टीवी धारावाहिकों में अभिनेता और अभिनेत्रियां ऐसी पांरपरिक भूमिकाएं अदा करती हैं जो पांरपरिक लैंगिक भेदभाव या पुरुषों के वर्चस्व

आई एस. एस. टी. की श्रीमती मंजू (बीच में) तथा उनके क्षेत्र के घरों में काम करने वाली महिलाओं के द्वारा संगीत प्रस्तुति।

को रेखांकित करती हैं। इसके अतिरिक्त, भागीदारों ने इस तथ्य पर भी संक्षोभ जताया कि आज हिंसा को मनोरंजन के एक स्त्रोत के रूप में देखा जाता है। महिलाओं को बलिदान और करुणा की प्रतीक के रूप में चित्रित किया जाता है।

- भारत में बलात्कार के बढ़ते मामलों ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। महिलाओं एवं लड़कियों के खिलाफ हिंसा का मूल कारण शिक्षा का अभाव पाया गया है। आज, लाखों लड़कियां अपने भाईयों की तुलना में कम शिक्षित हैं। इससे भी ज़्यादा चिंताजनक बात यह है कि पिछले दशक के दौरान लिंग-चयनित गर्भपात के मामले दिल्ली, पंजाब, महाराष्ट्र एवं हरियाणा जैसे अपेक्षाकृत संपन्न और अधिक शिक्षित राज्यों में ज़्यादा तेज़ी से बढ़े हैं। लड़कियों के खिलाफ भेदभाव के मामले औसत भारतीयों द्वारा प्रदर्शित होते रहे हैं।
- भागीदारों ने महसूस किया कि अनगिनत लड़कियों के लिए यह हिंसा बचपन से लेकर युवावस्था तक जारी रहती है। शिक्षा की कमी, अनुभव और दोनों पक्षों जैसे पीड़ितों– जिसके पास लड़ने के उसके अधिकार तथा न्याय मांगने के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं होती तथा दुष्कर्मी– जो उस परिणाम के बारे में नहीं जानता जिसे उसे ऐसे नृशंस अपराध में संलिप्त होने के कारण भुगतना पड़ेगा– की धारणा के कारण और विकराल हो जाती है।

समूह चर्चा के बाद निकल कर आए समाधानों के साथ बातचीत संपन्न हुई। समाधानों में इन बातों पर ज़ोर दिया गया :

- खासकर, सीमांत समुदायों की महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिकारसंपन्न बनाया जाए जिससे कि अधिकार असंतुलनों को दूर किया जा सके।
- लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ अधिकारिता कार्यक्रमों में बढ़ोतरी की ज़रूरत। इन पर आधारित संगठनों को ऐसी परियोजनाओं के लिए अधिक संसाधन एवं बजट दिए जाएं।
- स्वैच्छिक संगठनों को इसकी रोकथाम के लिए नेतृत्व विद्यालयों एवं प्रशिक्षणों का उपयोग करना चाहिए जो महिलाओं को अधिक आत्मविश्वासपूर्ण और सुरक्षित बनाता है।
- संस्थानों एवं संगठनों के प्रचलनों में लड़कियों आदि के खिलाफ हिंसा की रोकथाम के लिए कानूनी मामलों, लैंगिक विषमताओं, कार्य संबंधित रणनीतियों में परिवर्तन करना।
- वैसे कानूनों, नीतियों एवं संरचनाओं, जो बेहतर सार्वजनिक समझ की राह में बाधक हैं, को अनिवार्य रूप से संशोधित, सवंर्द्धित एवं क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
- प्रमुख निर्णय एवं नीति निर्माताओं, जो सरकार के औपचारिक माध्यम के हिस्से भी हैं और जो नहीं भी हैं, जैसे कि धार्मिक नेता, को अनिवार्य रूप से इसे समझना चाहिए ताकि इसकी रोकथात के मामले में नेतृत्व करना चाहिए।
- दीर्घकालिक नीति, कानूनी सुधार-और केंद्र सरकार द्वारा गतिविधियों के बेहतर दीर्घकालिक समन्वय, निगरानी एवं मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय योजनाओं तथा तंत्रों के माध्यम से एवं टिकाऊ परिवर्तन के उद्देश्य से अंत:क्षेत्रीय रणनीतियों एवं तंत्रों के लिए सभी क्षेत्रों में सतत दृष्टिकोण सुनिश्चित करने की ज़रूरत है।
- समुदायों के बीच जागरूकता बढ़ाने तथा उन्हें गतिशील बनाने, साथ ही व्यक्ति विशेष के ज्ञान एवं बर्ताव पर ध्यान देने के लिए पहल किए जाने की ज़रूरत है। कानूनी सुधारों को बढ़ावा देने के लिए रैलियों एवं प्रदर्शनों के साथ-साथ परिचर्चाओं, सार्वजनिक स्थानों पर सम्मेलनों और शैक्षिणिक मेलों का उपयोग किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, भागीदारों की राय थी कि इसकी रोकथाम के लिए परिवहन सुविधाओं, पुलिस सेवाओं, चिकित्सा सेवाओं, कानूनी सेवाओं और अधिक लिंग संवेदनशील मुख्य बिंदुओं को क्रियान्वित किया जाना चाहिए तथा उन्हें बेहतर बनाया जाना चाहिए।

लड़कियों के खिलाफ हिंसा पर बातचीत: गिन्नी देवी मोदी गर्ल्स पीजी कॉलेज, मोदी नगर में मुद्दे एवं विमर्श

समिति ने गांधीवादी अध्ययन केंद्र के सहयोग से 30 अगस्त, 2014 को उत्तर प्रदेश के मोदीनगर के गिन्नी देवी मोदी गर्ल्स पी जी कॉलेज में एक दिन भर चलने वाली कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम में 200 से अधिक भागीदारों ने हिस्सा लिया जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार सुश्री अन्नु आनंद ने की। जीएसडीएस के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू, प्राचार्य डा. मंजू गोयल और गांधी अध्ययन केंद्र की विभागाध्यक्ष डा. अरुणा शर्मा ने भी इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

श्री राजदीप पाठक ने सत्र का संचालन किया। समिति की तरफ से सुश्री रेणु पुहर, सुश्री नम्रता मिश्रा एवं श्री समीर बनर्जी ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

बातचीत की शुरूआत करते हुए, श्री वेदाभ्यास कुंडू ने कहा कि समुदाय की लड़कियां अपने समाज में खासकर, क्षेत्र की महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाने के लिए काम कर सकती हैं। युवा लड़कियों को शांति एवं रचनात्मक कार्य के लिए स्वयंसेवकों के रूप में काम करने की ज़रूरत पर बल देते हुए, उन्होंने कहा कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संपर्क विकसित करने की ज़रूरत है।

इस कार्यशाला को आगे बढ़ाते हुए, सुश्री आनंद ने कन्याओं और महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण पेश किया। इस दौरान उन्होंने उन मूल मुद्दों को छूआ जो हिंसा को उकसाते हैं और कहा कि इसमें सबसे बड़ी बाधा लड़कियों का अशिक्षित रह जाना है।

उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा कि ऐसे स्थानों को विकसित करने की पुरज़ोर आवश्यकता है जहां लड़कियां शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। उन्होंने 'गायब बच्चों' को लेकर गहरी चिंता जताई और कहा कि महिला भ्रूणहत्या की सबसे बड़ी वजह लोगों की मानसिकता है। उन्होंने कहा कि जैसा कि हम देखते हैं "हिंसा जन्म से पहले ही शुरू हो जाती है" और नवीनतम आंकड़ों के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर लड़कियों एवं लड़कों के बीच लिंग अनुपात 1000:919 है।

सुश्री अन्नु आनंद ने जो मुद्दे उठाए, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

1. सभी प्रकार के भेदभाव-शिक्षा से लेकर पौष्टिकता के सही

1

2

3

1. श्रीमती अन्नू आनन्द, बालिकाओं को सम्बोधित करती हुई।

2. मंच पर श्री वेदाभ्यास कुंडू, डॉ. मंजू गोयल तथा डॉ. अरूणा शर्मा।

3. छात्रा द्वारा विचार विनिमय। अन्य छात्रायें सुनती हुई।

स्तर मुहैया कराने तक और कन्याओं के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं में बढ़ोतरी करने तक

2. यौन उत्पीड़न
3. छेड़छाड़
4. तस्करी
5. दहेज हत्या

यह रेखांकित करते हुए कि असमानता हिंसा का ही एक प्रकार है और एक बड़ी हिंसा है, सुश्री अन्नु ने कहा कि सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना समाज में विषमताओं को जन्म देती हैं जहां लड़के को लड़कियों की तुलना में ज्यादा महत्व दिया जाता है। लड़कियों को अक्सर लड़कों की तुलना में कमतर माना जाता है।

उनके अनुसार, सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना के कारण लड़कियों को जो मुद्दे प्रभावित करते हैं, उनमें ये शामिल हैं:–

1. पितृसत्तात्मक समाज—जहां घर/समाज/समुदाय का पुरुष सदस्य उन गतिविधियों पर फैसला करता है और अपनी इच्छा थोपता है जिनका संबंध उसके काम से होता है और उसकी वहां अपनी मर्ज़ी नहीं चलती।
2. जल्द शादी–जहां लड़की की सहमति नहीं ली जाती और उन शारीरिक जटिलताओं को पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है जिसे बाद में उसे सहना पड़ सकता है।
3. दहेज प्रथा–जहां पीड़ित हमेशा लड़की और उसका परिवार होते हैं। जहां कुछ दहेज दे पाने में समर्थ होते हैं, पर कई अन्य दहेज अदा करने के लिए पैसे दे पाने की स्थिति में नहीं होते और दबाव हमेशा लड़की के परिवार पर बना रहता है। हालांकि 1986 में इसे कानून बना दिया गया, पर दहेज मौतों से जुड़े जो मामले सामने आए, वे बर्बर हैं।
4. ऑनर किलिंग–जहां परिवार की झूठी शान बनाये रखने के लिए अधिकांश मामलों में लड़की या अन्य मामलों में लड़का या लड़की दोनों जो एक दूसरे से प्यार करते हैं, जघन्य अपराधों के शिकार बन जाते हैं।

उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि उस पारंपरिक मानसिकता. जो लैंगिक भेदभाव को जन्म देता है, को रोकने की ज़रूरत है जिससे कि समाज में और अधिक भेदभाव पैदा न हो। अपने जीवन या अपनी शादी के बारे में खुद फैसला करने वाली महिला को पितृसतात्मक समाजों में हमेशा ही एक खतरे के रूप में देखा जाता है। घर, विद्यालयों या महाविद्यालयों में, समुदायों में, स्थानीय/जिला स्तर पर ऐसे मुद्दोंको बड़े पैमाने पर, घर से ही प्रारंभ कर जागरूकता अभियानों जैसे कदमों के जरिये उठाने की जरूरत है जिसका लड़कियां तत्काल लाभ उठा सकें। ग्राम प्रधान लड़कियों के मन से वह भय हटाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं जिसका सामना उन्हें दिन के समय भी एक जगह से दूसरी जगह जाने में करना पड़ता है।

व्यक्ति विशेषों एवं समाज दोनों ही द्वारा समान रूप से सामाजिक स्तर पर पहल किए जाने तथा कदम उठाए जाने की जरूरत की वकालत करते हुए सुश्री अन्नु आनंद ने प्रशासनिक एवं न्यायिक स्तर पर भी संभावित समाधानों का प्रस्ताव रखा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता पैदा करने

कार्यक्रम की समाप्ति के बाद श्रीमती अन्नू आनन्द, समिति के सदस्य तथा गिन्नी देवी गर्ल्स कॉलेज के शिक्षक वृंद।

के लिए सामुदायिक स्तर पर भी ऐसी प्रशिक्षण कार्यशालाओं का संचालन किया जाना चाहिए।

उन्होंने लड़कियों को कहा कि अगर वे पाती हैं कि उनकी सुरक्षा, मर्यादा या हिफाज़त को प्रभावित करने वाली कोई भी स्थिति पैदा हो रही है तो उन्हें तत्काल अपनी आवाज उठानी चाहिए। उन्होंने पुलिस थानों एवं बूथों पर अधिक महिला पुलिस कर्मचारियों की नियुक्ति की मांग की तथा ज़ोर देकर कहा कि लड़कियों को उन पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने में डरना नहीं चाहिए।

अंत में, उन्होंने महिलाओं के खिलाफ अपराध, घरेलू हिंसा आदि से संबंधित कानूनों के बारे में जानकारी रखने के महत्व के बारे में बताया, साथ ही, लड़कियों से अपने घरों पर लड़कों को सही तरीके से बर्ताव करने तथा लड़कियों का सम्मान करने के बारे में शिक्षित करने के लिए अभियान चलाने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि समाज के पुरुष सदस्यों के साथ ज़मीनी स्तर पर काम करने एवं अनुकूलन कार्यक्रमों का संचालन करने की तात्कालिक आवश्यकता है। मानसिकता में परिवर्तन से काफी अधिक विकास लाया जा सकता है।

महाविद्यालय की प्राचार्य डा. मंजू गोयल ने अपनी टिप्पणियों में कहा कि जागरूकता पैदा करने का दायित्व प्रत्येक कदम पर बाधाओं एवं विघ्नों के कारण आज सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है। उन्होंने कहा कि 'मैं चाहता हूं कि युवा लड़कियां इस बात के लिए गर्व महसूस करें कि वे परिवार की रीढ़ की हड्डी हैं। आपको अपनी रोशनी खुद बिखेरनी है और व्यक्तिगत स्तर पर अपने विचारों को सामने रखना है।'

इससे पहले, डा. अरुणा शर्मा ने ज़मीनी स्तर पर काम करने के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने कहा कि इसने उन्हें उन समस्याओं को समझने में मदद की है जो उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में उनके रोजाना के जीवन में आती हैं। उन्होंने प्रसन्नता जताई कि उनके महाविद्यालय में वैसी छात्राओं की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है जो आगे पढ़ना चाहती है। उन्होंने कहा कि यह एक सकारात्मक चिन्ह है क्योंकि माता पिता अब अपनी लड़कियों को पढ़ाई करने के लिए महाविद्यालय भेज रहे हैं। उन्होंने कहा कि 'ये युवा लड़कियां अपने गांवों से बाहर निकलने में समर्थ हैं, रोजाना लगभग 5 से 10 किलोमीटर पैदल चल रही हैं, यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है।'

छात्रों ने रोजाना उनके सामने आने वाली समस्याओं तथा अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने के जरिये इसमें भागीदारी की।

जो मुद्दे सामने आए, वे इस प्रकार हैं:

1. परिवहन की समस्या
2. घरेलू हिंसा
3. खासकर, अल्पसंख्यक समुदाय की लड़कियों के लिए शिक्षा
4. शादी के बाद भी योग्य लड़कियों के लिए रोज़गार
5. स्ट्रीट लाइट लगाने की ज़रूरत
6. पुलिस थानों एवं चेक प्वाईंट पर अधिक महिला पुलिस कर्मचारियों की तैनाती
7. माता पिताओं को परामर्श
8. पुलिस पीड़िताओं की शिकायत दर्ज करे

भागीदारों ने लड़कियों के लिए सुरक्षा बढ़ाने की जरूरत महसूस की। उन्होंने उनके क्षेत्रों में अस्पतालों की कमी पर चिंता जताई जिसकी संख्या इतनी कम है कि घायलों को प्राथमिक उपचार देने के लिए एक नगरपालिका का अस्पताल तक नहीं है। कुछ छात्राओं जिन्हें पढ़ाई के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, ने बताया कि अपने घरों से बाहर निकलने वाली वे अपने गांव की एकमात्र लड़कियां हैं। इस बैठक में भाग लेने वालियों में आयुशी गुप्ता, खुशबू त्यागी, अंजु, जेनम खान, नीना गुप्ता, ज्योति, पूनम, सारिका आदि शामिल थीं।

देवलाली, मुंबई में नेतृत्व एवं लैंगिक संवेदीकरण पर शिविर

समिति ने 6–10 अगस्त, 2014 को मुंबई में मेन अगेंस्ट वॉयलेंस एंड एब्यूज़ (एमएवीए) के सहयोग से नेतृत्व एवं लैंगिक संवेदीकरण पर एक पांच दिवसीय शिविर का आयोजन किया। कार्यक्रम में 60 से अधिक भागीदारों ने हिस्सा लिया जिसका उद्देश्य लैंगिक समानता प्रक्रिया को बढ़ाना था। भागीदारों ने महसूस किया कि पुरुषों को भी संवेदनशील बनाए जाने तथा इस बात से अवगत कराने की जरूरत है कि कैसे उनका बर्ताव महिलाओं के विकास एवं अधिकारिता की कुंजी है। पुरुषों के बीच लैंगिक संवेदीकरण मानसिकता के बदलाव लाने की दिशा में एक प्रमुख तत्व है। उन्हें यह सीखने की ज़रूरत है कि कैसे वे महिलाओं को समाज में एवं निजी व्यवहार में भी बराबरी का दर्जा दें। सबसे महत्वपूर्ण उन्हें अनिवार्य रूप से यह सीखना है कि किस प्रकार वे महिलाओं को अपनी मां, बहन, बेटी, सहयोगी के रूप में जीवन के सभी क्षेत्रों में समझें।

बच्चों के लिए कार्यक्रम

मूल्य संवर्द्धन शिविर

किशोरों के लिए गांधी दर्शन में 26 अप्रैल से 1 मई, 2014 तक एक मूल्य संवर्द्धन शिविर का आयोजन किया गया। हरियाणा के दो गांवों–गुमला एवं गन्नौर के 14 से 16 वर्ष की आयु समूह के लगभग 65 किशोरों ने शिविर में हिस्सा लिया।

शिविर के दौरान निम्नलिखित गतिविधियों का संचालन किया गया: प्रार्थना, योग, संगीत, श्रमदान, कताई, टीम निर्माण प्रबंधन में प्रशिक्षण, बागवानी में प्रशिक्षण, नाटकों में भूमिकाएं, महात्मा गांधी की आत्मकथा और उनके अनुभवों पर पढ़ने और लिखने का सत्र, थिएटर एवं स्वांग, प्राकृतिक उपचार एवं व्यक्तिगत स्वच्छता में प्रशिक्षण, शांति एवं अहिंसा पर अनुकूलन।

श्री अशोक अरोड़ा के साथ क्रोध प्रबंधन, सकारात्मक व्यवहार तथा सुश्री अमिता दहिया के साथ स्वयंसेवकवाद एवं सामुदायिक कार्य पर अंत:पारस्परिक सत्रों का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन 26 अप्रैल, 2014 को गांधी दर्शन में 'सृजन' की संगीतपूर्ण प्रस्तुति के साथ किया गया। शिविर की शुरूआत एक टीम निर्माण अभ्यास के साथ हुई जहां समूहों को विभाजित किया गया और समूह नेताओं का चयन किया गया। इस अभ्यास का संचालन श्री गणेश द्वारा किया गया।

शिविर के दौरान, बच्चों को थिएटर की बारीक बातें सिखाई गईं। इंदु आर्ट्स एंड फिल्म सोसाइटी के निदेशक श्री यासिन खान द्वारा निर्देशित एक नाटक 'एक सपना घायल सा' की तैयारी बच्चों द्वारा की गई। बहुत से बच्चों के लिए यह पहला अवसर था जब उन्हें वर्तमान मुद्दों (संपन्न एवं विपन्न वर्गों, सीमांत के बीच) और उनकी सामाजिक दशा पर एक नाटक के जरिये थिएटर में प्रशिक्षित किया गया।

चित्र में: गांधी दर्शन में आयोजित मूल्य निर्माण शिविर में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हुए बच्चे।

श्री स्वप्न कुमार सरकार ने बच्चों को स्वांग के बारे में सिद्धांत रूप में एवं व्यावहारिक दोनों ही प्रशिक्षण दिया और एक ऐसा

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के निदेशक श्री ए. अन्नामलाई मूल्य निर्माण शिविर में आये बच्चों को सम्बोधित करते हुये।

नाटक विकसित किया जिसने 'शिक्षा का अधिकार', 'बाल श्रम', 'महिलाओं पर अत्याचार' और शांति की शाश्वत धारणा जैसे अहम विषयों को छुआ।

अगर मूलभूत व्यक्तिगत सफाई एवं स्वच्छता में प्रशिक्षण ने उनके ज्ञान एवं उनके स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों की समझ को बेहतर बनाया तो उका का मोनिया (मोनिया के बचपन का दोस्त) की भूमिका ने उन्हें भेदभाव की उस धारणा के बारे में अवगत कराया जिसे गांधी जी तक को सहन करना पड़ा था जब उन्हें उका के साथ खेलने से मना किया गया क्योंकि उका निम्न जाति से संबंधित था।

कई बच्चों के लिए-जो पहली बार अपने घरों से बाहर आए थे-इस शिविर ने बेहतर संप्रेषण, समाज के अन्य सदस्यों के साथ काम करने, शारीरिक श्रम आदि जैसे विभिन्न कौशलों को सीखने का अवसर मुहैया कराया। कताई के जरिये लगन एवं उनके बीच समर्पण का विचार भरने का एक प्रयास किया गया।

शिविर के दौरान, प्रेरक प्रवक्ता और एक विख्यात वकील तथा भारत के सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व सचिव श्री अशोक अरोड़ा द्वारा 'प्रसन्नता की कुंजी' पर एक विशेष सत्र का संचालन किया गया। 28 अप्रैल, 2014 को बच्चों के साथ ढाई घंटे के एक अंत:पारस्परिक सत्र में श्री अरोड़ा ने बच्चों को बताया कि जीवन एक समारोह है और इसलिए जीवन के प्रत्येक क्षण को लगन एवं कड़ी मेहनत के साथ व्यतीत किया जाना चाहिए क्योंकि आखिर में यही काम आता है। उन्होंने बच्चों से किसी से भी नफरत नहीं करने को कहा, लेकिन उन्हें खुद से प्यार करने में समर्थ होना चाहिए।

उन्होंने क्रोध प्रबंधन तकनीकों की भी जानकारी दी और बच्चों से बार बार आत्मनिरीक्षण करने को कहा क्योंकि इससे उन्हें आत्म विकास और आत्म समझ में आसानी होगी। उन्होंने बच्चों को उत्साह रखने के लिए प्रोत्साहित किया लेकिन उनका लक्ष्य पूर्णता की दिशा में होनी चाहिए।

'स्वयंसेवकवाद और सामुदायिक कार्य' पर एक अन्य सत्र का संचालन वॉलंटियरिंग एंव पोस्ट 2015 नेशनल कॉर्डिनेटर, यूनाइटेड नेशंस वॉलंटियर्स सुश्री अमिता दहिया द्वारा किया गया। बच्चों के साथ बातचीत करते हुए सुश्री दहिया ने बच्चों को सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों और इससे संबंधित विभिन्न मुद्दों के बारे में जानकारी दी और बताया कि किस प्रकार बच्चे ऐसे मुद्दोंसे संबंधित या प्रभावित होते हैं। उन्होंने बच्चों को उनके अपने गांवों में जाने और 'शिशु पंचायत' मॉडलों पर काम करने की सलाह दी और उन्हें भरोसा दिलाया कि वह उनके प्रयासों में मदद करेंगी। यह पूछ जाने पर कि बच्चे किस प्रकार समाज के भीतर परिवर्तनों को प्रभावित कर सकते हैं, सुश्री दहिया ने बच्चों द्वारा प्रेरित विभिन्न कदमों का उद्धरण दिया जिन्होंने नीति निर्माताओं को बच्चों के कल्याण के लिए सोचने पर मजबूर किया। उन्होंने कहा कि प्रारंभ में वे स्वच्छता, मूलभूत स्वास्थ्य एवं सफाई जैसे मुद्दोंपर काम कर सकते हैं।

लोगों से मिलने जुलने, अपनी गतिविधियों एवं विभिन्न सत्रों के आधार पर बच्चों ने पोस्टरों, नारों, गतिविधियों की रिपोर्ट के रूप में अपने विचार अभिव्यक्त किए और चार्ट पेपरों के प्रदर्शन के जरिये शिविर के दौरान गतिविधियों को प्रदर्शित किया।

शिविर का समापन समारोह गांधी दर्शन में 1 मई, 2014 को आयोजित किया गया, जहां बच्चों ने उन गतिविधियों की झलक पेश की जिन्हें शिविर के दौरान उन्होंने शुरू किया था। राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के निदेशक श्री ए. अन्नामलाई इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। समारोह इंदु बहन एवं बच्चों के नेतृत्व में एक आहवान के साथ प्रारंभ हुआ। इसके बाद राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम पर एक नृत्य का आयोजन किया गया जिसकी तैयारी बच्चों ने शिविर के दौरान की थी। उन्होंने योग आसनों की कुछ साधनाएं भी प्रस्तुत कीं।

सुश्री बबिता ने कन्या भ्रूण हत्या पर एक कविता सुनाई जबकि सोनू ढाका ने राष्ट्रीय अखंडता पर आधारित एक गीत 'इंसान की औलाद है इंसान बनेगा' पर एकल अभिनय किया। नाटक एक सपना घायल सा ने भी समाज के भीतर व्यापक भेदभाव पर प्रासंगिक सवाल उठाए। स्वांग पर प्रदर्शन को भी काफी सराहा गया।

एक प्रतिभागी श्री आशीष ने श्री अशोक अरोड़ा के साथ अपनी मुलाकात के अनुभवों को साझा किया। सुश्री मनीषा ने शिविर की विभिन्न गतिविधियों की एक विस्तृत रिपोर्ट पढ़ी जिसकी सभी ने सराहना की। संयोजकों, श्रीमती शांति देवी (गन्नौर) एवं श्री कृष्ण कुमार (गोमला) ने भी अपने अनुभव साझा किए।

बाद रायधुन कल्चरल एकेडमी के बच्चों द्वारा कथक की प्रस्तुति की गई। बच्चों के प्रदर्शन में भ्रष्टाचार, वैश्विक तापमान, जल प्रदूषण, स्वच्छता, क्रोध एवं इसके दुष्परिणाम, कन्या भ्रूणहत्या, बाल श्रम, कुपोषण, दहेज, महिलाओं पर एसिड हमला, बलात्कार, हाल के चुनावों पर व्यंग्य एवं राजनीतिक हास्य, अशिक्षा, शिक्षा का अधिकार, लड़के एवं लड़कियों के बीच शिक्षा में भेदभाव आदि जैसे विषय वस्तु शामिल थे।

इन प्रदर्शनों पर अपने विचारों को साझा करते हुए श्री अनीस आजमी ने कहा कि थिएटर हो या नाटक, कलाकार को भाषा और शब्दों के सही उच्चारण पर ध्यान को एकाग्र करना पड़ता है। उन्होंने संयोजकों (शिक्षकों और एनजीओ) को यह भी सलाह दी कि वे बच्चों के मुद्दे पर बच्चों के प्रदर्शन पर गौर करें क्योंकि बच्चों से संबंधित कई सारे मुद्दे हैं और ऐसे मुद्दों पर जागरूकता पैदा किए

दिल्ली तथा एन.सी.आर. के विभिन्न संस्थाओं के बच्चे उत्सव में भाग लेते हुए।

सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ नाटकों का समारोह

लगभग 14 विद्यालयों के करीब 250 बच्चों और पांच स्वयंसेवी संगठनों ने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 30 अप्रैल, 2014 को गांधी दर्शन में आयोजित सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ नाटकों के समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विख्यात थिएटर व्यक्तित्व उर्दू अकादमी के सचिव श्री अनीस आजमी एवं विकास एवं प्रशिक्षण लोक संस्थान (पीआईडीटी) के प्रो. के के सेन थे।

कार्यक्रम नवयुग विद्यालय, लक्ष्मीबाई नगर के लगभग 50 बच्चों द्वारा आहवानकारी भक्ति संगीत के साथ शुरू हुआ। इसके जाने की जरूरत है।

प्रोफेसर के के सेन ने बच्चों के प्रयासों की सराहना करते हुए प्रसन्नता जताई कि इस समारोह में भागीदारी की प्रक्रिया में वे वैसे मुद्दों को सामने लाए जो उस समाज में व्याप्त हैं जिसमें वे रह रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि अपने सामाजिक कार्य के हिस्से के रूप में बच्चे कई क्षेत्रों में परियोजनाओं की शुरूआत कर सकते हैं और शानदार केस स्टडी प्रस्तुत कर सकते हैं।

इससे पूर्व, जीएसडीएस की निदेशक सुश्री मणिमाला ने लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि यह समझने और अहसास करने का एक माध्यम है कि बच्चे कल के नेता हैं और समाज में व्याप्त

पूर्वाग्रहों तथा कट्टरताओं से लड़ने के लिए उन्हें ही खड़ा होना है। बच्चों के प्रदर्शन को लेकर अपनी टिप्पणी में उन्होंने भी दुहराया कि जरूरत ऐसे गंभीर सामाजिक विषयों पर केवल प्रदर्शन करने की नहीं है बल्कि इसे आगे उस स्तर तक ले जाने की भी है जिससे कि संदेश समाज तक भी पहुंच सके।

समारोह गाजियाबाद के सन वैली इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों द्वारा भरतनाट्यम की प्रस्तुति के साथ संपन्न हुआ। जिन कुछ संस्थानों ने प्रतिनिधित्व किया, उनमें शामिल थेरू नवयुग स्कूल, ईस्ट प्वॉईंट स्कूल, रामजस स्कूल (आनंद पर्वत), सन वैली इंटरनेशनल स्कूल, जसपाल कौर पब्लिक स्कूल, जी डी गोयनका स्कूल, मीरा मॉडल स्कूल, लीलावती विद्या मंदिर, जन ज्योति युवा संगठन, इंस्टीच्युट ऑफ सोशल स्टडीज ट्रस्ट (आईएसएसटी) साथी सेंटर, कल्यानम, नवज्योति इंडिया फाउंडेशन, दीपालय स्कूल, मयूर पब्लिक स्कूल, ग्रीन फील्ड्स स्कूल एवं अन्य।

राज्य स्तरीय गांधी बाल संस्कार शिविर

राज्य स्तरीय गांधी बाल संस्कार शिविर के लिए बच्चों को चुनने के लिए मई 17-18, 2014 को जयपुर में एक बैठक का आयोजन किया गया। जीएसडीएस की निदेशक सुश्री मणिमाला ने विभिन्न जिलों में चार गांवों से बच्चों को चुनने के लिए बैठक में भाग लिया। विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया ताकि चयन के लिए प्रक्रियाओं एवं मानदंडों के निर्धारण की समझ प्राप्त कर सकें।

गांधी स्मृति में आये कुछ बच्चों के साथ श्री गणेश बातचीत करते हुए।

संस्थानों के बच्चों के साथ मेलजोल

गांधी स्मृति में एक मेलजोल-सह-अनुकूलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें तीन विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों जिन्होंने 18 जून, 2014 को मेमोरियल का दौरा किया था, के लगभग 97 बच्चों ने भाग लिया। जीएसडीएस की लाईब्रेरियन श्रीमती शाश्वती झालानी ने अनुकूलन कार्यक्रम का संचालन किया। बच्चों ने संग्रहालय का दौरा किया और गांधी के बलिदान स्थल पर जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीमती झालानी ने बच्चों के साथ महात्मा

सुश्री इन्दुबाला चरखा कताई का प्रशिक्षण देती हुई।

गांधी के कुछ किस्सों को साझा किया। खुशी रेनबो होम और किलकारी रेनबो होम की 62 लड़कियों ने गांधी स्मृति का भ्रमण किया जबकि 35 लड़कों ने गांधी दर्शन का भ्रमण किया।

विशेष सक्षम युवाओं के लिए गांधी ग्रीष्म शिविर

विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं जैसे: वीआई (दृश्य विकलांगता), एचआई (श्रवण संबंधी विकलांगता), आत्मविमोह, सीपी (प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात) एमआर (मानसिक विकलांगता), पीएच (शारीरिक विकलांगता), डीएस (डाऊन सिंड्रोम) से जुड़े लगभग 65 प्रतिभागियों ने समिति द्वारा 23 से 28 जून, 2014 तक आयोजित गांधी ग्रीष्म शिविर में भाग लिया।

भोपाल स्थित संगठन आरुषि एवं नई दिल्ली स्थित मासूम दुनिया के बच्चों ने इसमें भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य इन विशेष सक्षम युवाओं में आत्म-गौरव की भावना का संचार करना था जिससे कि वे किसी भी अन्य व्यक्ति के समान अपने जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकें। ऐसी दुनिया में जहां मानवाधिकारों एवं समानता के प्रति लगातार

चित्र में: बच्चे प्रार्थना में भाग लेते हुये।
(नीचे) खेलकूद करते हुये।

संवेदनशीलता बढ़ रही है, लोगों को विकलांगता को एक सामाजिक नजरिये से देखना चाहिए जिससे कि वे अन्य लोगों के समान स्तर पर समुदाय में सामान्य जीवन में हिस्सा ले सकें। यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें एक बेहतर जीवन गुजारने और इस प्रकार मुख्यधारा में योगदान देने के लिए अनुकूल परिस्थितियां मुहैया कराई जाएं।

शिविर के दौरान, भागीदारों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया जिनमें प्रार्थना, योग, चरखा कताई, श्रमदान, संगीत एवं नृत्य, क्रीड़ा एवं खेल, जूट, शिल्प, बर्तन निर्माण एवं चिकनी मिट्टी निर्माण और बच्चों की किताबों मोनिया एवं उका का मोनिया के माध्यम से महात्मा गांधी को समझने पर पुस्तकें शामिल थीं।

शिविर में विभिन्न गतिविधियों के जरिये व्यक्तित्व निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया जिनमें चित्रकारी, नृत्य, नाटक, योग आदि शामिल थे। इसे समापन समारोह के दौरान प्रदर्शित किया गया जिसका आयोजन 27 जून को गांधी दर्शन में किया गया।

बच्चों ने चरखे काते, गाने और भजन गाए, साथ ही, पर्यावरण और महात्मा गांधी पर गीत गाए जो उन्होंने शिविर के दौरान सीखे थे। कदमों से कदम मिलते हैं और हल्के संगीत पर बहरेपन और अवसाद से ग्रसित (डाऊन सिंड्रोम) बच्चों द्वारा नृत्य का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर श्री राकेश शर्मा द्वारा निर्देशित हम सब एक हैं पर एक लघु नाटिका का भी मंचन किया गया जिसमें एमआर एवं डीएस से पीड़ित बच्चों ने भाग लिया। विख्यात गीतकार एवं साहित्यकार गुलजार साहब ने भी बच्चों के लिए एक विशेष संदेश भेजा जिसका उपयोग कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में किया गया।

अखिल द्वारा माउथ ऑर्गन गायन विवेक द्वारा वैष्णव जन तो पर गायन; फिरोज द्वारा कन्या भ्रूण हत्या पर एक रैप समापन कार्यक्रम के अन्य आकर्षणों में से थे।

इस अवसर पर मोनिया के ब्रेल संस्करण का भी अनावरण हुआ– जिसे आरुषि के कमल द्वारा विकसित किया गया था। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में भारतीय पुनर्वास परिषद (आरसीआई) के पूर्व सदस्य सचिव डा. जे पी सिंह; दूरदर्शन के पूर्व उप निदेशक एवं एमिटी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जे के मेहता; हरिजन सेवक संघ के सचिव श्री लक्ष्मी दास; राजघाट समाधि के सचिव श्री रजनीश; बीलिव इंडिया के श्री मल्लिकार्जुन शामिल थे।

चित्र में (बायें से दांये): समापन समारोह में मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन, तथा विषेष रूप से सक्षम बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां।

इस अवसर पर जो अन्य लोग उपस्थित थे, उनमें गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा की कुमारी कुसुम बहन; हस्तशिल्प विशेषज्ञ श्रीमती रेणु शर्मा; सीएएसपी प्लान के श्री अतुल प्रभाकर एवं श्री उमेश कुमार शामिल थे जिन्होंने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

मासूम दुनिया के निदेशक श्री बी नायल एवं आरुषि के मुख्य कार्यकारी श्री अनिल मुद्गल ने शिविर में प्राप्त अपने अनुभव साझा किए एवं ऐसे बच्चों को इस प्रकार की और अधिक गतिविधियों में संलिप्त करने की जरूरत पर बल दिया जिससे कि उनकी रचनाशीलता और अधिक विकसित हो सके।

अपने संबोधन में भारतीय पुनर्वास परिषद (आरसीआई) के पूर्व सदस्य सचिव एवं विशेष अतिथि डा. जे पी सिंह ने इन बच्चों के लिए रचनात्मक मंच मुहैया कराए जाने के महत्व को रेखांकित किया और कहा कि ऐसे बच्चों के लिए संगीत उपचार का काम करता है। उन्होंने ऐसे बच्चों के लिए इस प्रकार का मंच मुहैया कराने के समिति के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने उम्मीद जताई कि जीएसडीएस इन बच्चों के लिए एक कारगर प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित करेगा और देश के अन्य हिस्सों में उनके कल्याण के लिए काम करेगा। बच्चों को 28 जून को गांधी दिल्ली दर्शन के लिए भी ले जाया गया और उन्होंने इंडिया गेट, गांधी स्मृति एवं महात्मा गांधी समाधि राजघाट का भ्रमण किया।

ग्रीष्मकालीन बाल संस्कार शिविर

राजस्थान के जयपुर में मानसरोवर स्थित आदर्श विद्यालय में एक राज्य स्तरीय ग्रीष्मकालीन बाल संस्कार शिविर का आयोजन समिति द्वारा 14 से 18 जून 2014 तक किया गया जिसमें राजस्थान के विभिन्न जिलों के 14 से 18 आयु समूह के लगभग 250 बच्चों ने भाग लिया। श्री कमल किशोर ने जीएसडीएस की तरफ से कार्यक्रम का संयोजन किया। इसमें जयपुर, अजमेर, भरतपुर, बीकानेर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर के भागीदारों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम के दौरान, बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया जिनमें गांधीवादी मूल्यों का संवर्द्धन, ईमानदारी, समर्पण, टीम भावना, सामूहिक जीवन, शारीरिक श्रम, स्वच्छता आदि शामिल थीं। इसका जोर सामूहिक जीवन के महत्व पर बेहतर समझ विकसित करने की कोशिश की दिशा में था। इसके अतिरिक्त, शिविर के दौरान की गई एक अन्य महत्वपूर्ण पहल बच्चों की क्षमताओं को विकास करने से संबंधित थी जिससे कि वे अपने समुदायों में जाएं तथा काम करें।

अंतः विद्यालय दांडी मार्च रॉलिंग ट्रॉफी प्रतियोगिता

(ऊपर): प्रतियोगिता में भाग लेती एक बालिका।
(नीचे): हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग के बच्चे प्रतियोगिता की ट्रॉफी स्वीकार करते हुये।

62 विद्यालयों के लगभग 130 बच्चों ने 24 जुलाई, 2014 को गांधी दर्शन में सामाजिक न्याय: सद्भाव एवं शांति का एक अंतरंग हिस्सा विषय पर अंतर विद्यालय लेख-सह-पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में भाग लिया। छात्रों को उनका लेख लिखना प्रारंभ करने से पहले 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' मंडप का भ्रमण भी करवाया गया।

दांडी मार्च रॉलिंग ट्रॉफी:

- पोस्टर एवं लेख लेखन के समग्र वर्ग में पहला पुरस्कार- हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग

लेख लेखन

o **द्वितीय पुरस्कार**

– राबिया गर्ल्स स्कूल – यूनिवर्सल पब्लिक स्कूल

o **तृतीय पुरस्कार**

– मयूर पब्लिक स्कूल, लक्ष्मी नगर

– ईस्ट प्वाईट स्कूल, वसुंधरा इंकलेव

o **तीन सराहना पुरस्कार**

– सेंट सेसिलियस पब्लिक स्कूल, विकासपुरी – प्रथम

– जैन भारती मृगावती विद्यालय – द्वितीय

– लैंसर्स कन्वेंट स्कूल, रोहिणी – तृतीय

पोस्टर निर्माण

o **द्वितीय पुरस्कार**

– मीरा मॉडल स्कूल, जनकपुरी

o **तृतीय पुरस्कार**

– मैटर देई स्कूल, तिलक लेन

– समरविले स्कूल

o **तीन सराहना पुरस्कार**

– गुरु तेग बहादुर थर्ड सेंटेनरी पब्लिक स्कूल–प्रथम

– प्रेजीडियम स्कूल, अशोक विहार–द्वितीय

– बलवंत राय मेहता विद्या भवन, स्पेशल विंग (श्रवण विकलांगता) ग्रेटर कैलाश– 2–तृतीय

बोध गया में गांधी संस्कार शिविर

बिहार के बोध गया के जीवन संगम में 24 से 28 जुलाई, 2014 तक एक पांच दिवसीय आवासीय गांधी संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सीमांत (महा दलित) समुदायों के 250 से अधिक बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी की और सामुदायिक जीवन की कला सीखी। दैनिक गतिविधियों में श्रमदान, स्वच्छता, सामूहिक परिचर्चा आदि शामिल थे। राज्य परिषद के अध्यक्ष श्री उदय नारायण चौधरी जोकि शिविर के समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे, ने समूह से सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांतों पर काम करने की अपील की, जो भारत की आजादी प्राप्त करने में महात्मा गांधी के सबसे ताकतवर हथियार बन गए।

अंत: विद्यालय वंदेमातरम रॉलिंग ट्रॉफी संगीतमय प्रतिस्पर्धा आयोजित

(ऊपर): प्रतियोगिता की निर्णायक श्रीमती उर्मिल बढेरा तथा श्रीमती माया भट्टाचार्य दीप प्रज्जवलन करती हुई।
(नीचे): प्रतियोगिता में भाग लेती हुई छात्रायें।

दिल्ली एवं एनसीआर के 22 विद्यालयों के 260 से अधिक छात्रों ने समिति द्वारा 8 अगस्त, 2014 को गांधी दर्शन में आयोजित अंतर विद्यालय वंदेमातरम रॉलिंग ट्रॉफी संगीतमय प्रतिस्पर्धा में भाग लिया। बच्चों ने अपने स्व–लिखित / रचित गाने प्रस्तुत किए जिनमें राष्ट्रीय अखंडता, देशभक्ति, सामुदायिक सद्भाव पर गाने, आजादी के लिए संघर्ष आदि जैसे विषय वस्तु शामिल थे।

इस प्रतिस्पर्धा की समीक्षा वरिष्ठ संगीत निदेशक एवं रचयिता श्री सुरिंदर सिंह सरनी, वरिष्ठ संगीत शिक्षक श्रीमती उर्मिल वधेरा, अखिल भारतीय गंधर्व महा विद्यालय की संगीताचार्य श्रीमती माया भट्टाचार्जी एवं 1997 में संगीत में राज्य पुरस्कार प्राप्त श्रीमती सतबीर कौर द्वारा की गई। कड़ी प्रतिस्पर्धा को देखते हुए पहले, दूसरे और तीसरे पुरस्कारों के अतिरिक्त

जजों ने चार सराहना पुरस्कार देने का फैसला किया। ईस्ट प्वाइंट स्कूल, वसुंधरा इंकलेव वंदेमातरम रॉलिंग ट्रॉफी का विजेता रहा।

पुरस्कार विजेताओं की सूची निम्नलिखित है:

प्रथम पुरस्कार – ईस्ट प्वाईंट स्कूल, वसुंधरा इंकलेव

द्वितीय पुरस्कार – कैंब्रिज फाउंडेशन, राजौरी गार्डन

दो तृतीय पुरस्कार विजेता

- o समर फील्ड्स स्कूल, कैलाश कॉलोनी
- o ग्रीन फील्ड्स पब्लिक स्कूल, दिलशाद गार्डन

चार सराहना पुरस्कार

- o एपीजे स्कूल, साकेत,
- o बिड़ला विद्या निकेतन, पुष्प विहार, साकेत,
- o सेंट थॉमस स्कूल, मंदिर मार्ग
- o डीएवी पब्लिक स्कूल, कैलाश हिल्स, ईस्ट ऑफ कैलाश

मूल्य सृजन शिविर

प्रात: कालीन सामूहिक व्यायाम शिविर का मुख्य हिस्सा था।

असम तथा मणिपुर के बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम शिविर के मुख्य आकर्षण थे।

समिति ने पूर्वोत्तर के छात्रों के लिए एक 10 दिवसीय आवासीय मूल्य सृजन शिविर का गांधी दर्शन में 25 सितंबर से 4 अक्तूबर, 2014 तक आयोजन किया। असम के सुरोवी शिशु पंचायत एवं मणिपुर के कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान के लगभग 45 किशोरों ने शिविर में हिस्सा लिया। बच्चों ने राष्ट्रपिता की 145वीं जन्म शताब्दी का समारोह मनाने के लिए 2 अक्तूबर को गांधी स्मृति में संगीतमय श्रद्धांजलि में भी भाग लिया।

उनके समग्र विकास के लिए विभिन्न गतिविधियां शिविर का एक अंतरंग हिस्सा बनीं। ये गतिविधियां थीं:

1. रैली पोस्ट
2. प्रात:काल की प्रार्थना
3. श्रमदान
4. योग
5. कताई
6. संगीत
7. दैनंदिनी लेखन अभ्यास

8. स्वयंसेवकवाद पर कार्यशाला
9. संवाद पर कार्यशाला
10. महात्मा गांधी के बचपन पर आधारित पुस्तक मोनिया का पाठन
11. कॉमिक्स एवं
12. खेल

समापन समारोह 4 अक्तूबर, 2014 को आयोजित हुआ, जिसमें बच्चों ने अपने अनुभवों को साझा करने के अतिरिक्त बिहु, मेईपी एवं मणिपुरी में थाबल चोंगा नृत्य तथा एक नेपाली कार्यक्रम जैसे कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर प्रदर्शन किया।

मणिपुर की सुश्री कोरिन्ना को सर्वश्रेष्ठ कैंपर पुरस्कार दिया गया जबकि श्री लोकेंद्र को मणिपुर में विद्यालयों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए एक चक्र दिया गया।

चौथा राष्ट्रीय गांधी बाल मेला

चौथा राष्ट्रीय गांधी बाल मेले का आयोजन राजघाट के गांधी दर्शन में 18 से 20 नवंबर, 2014 तक किया गया। बाल मेले की विषय वस्तु थी– बापू को जानो, बापू को समझो। देश के 18 राज्यों एवं नेपाल से लगभग 800 बच्चों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया। कताई के अतिरिक्त, बच्चों ने खेल, क्रीड़ा, सांस्कृतिक

राष्ट्रीय मेले के उद्घाटन समारोह में नेपाल से आए बच्चे लोकगीत प्रस्तुत करते हुये।

कार्यक्रमों एवं ललित कलाओं और लेखन/पाठन से संबंधित गतिविधियों समेत विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने अपने अभिनय के जरिये अपने क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक

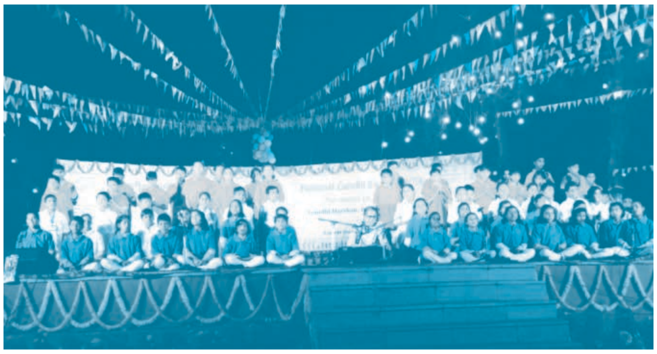

(ऊपर): श्री लक्ष्मी दास बच्चों को सम्बोधित करते हुये।
(नीचे): बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति।

विरासत को प्रदर्शित किया। बच्चों को श्रमदान एवं स्वच्छता में शामिल करने पर विशेष जोर दिया गया; यह उसी संकल्प का हिस्सा था जो उद्घाटन समारोह में सभी बच्चों को दिलवाया गया था। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के निदेशक श्री एस के शुक्ला थे। इस अवसर पर उपस्थित अन्य व्यक्तियों में जीएसडीएस के कार्यकारी समिति के सदस्य श्री लक्ष्मी दास एवं पश्चिम बंगाल के गांधी मिशन ट्रस्ट के श्री नारायण भाई शामिल थे। भाग लेने वाले बच्चों ने समापन समारोह में अपनी आश्चर्यजनक प्रतिभाओं का परिचय दिया। जीएसडीएस के समिति सदस्य श्री रंजी थॉमस इस अवसर पर विशेष अतिथि थे। समापन समारोह का 4000 से अधिक बच्चों एवं अन्य अतिथियों ने आनंद उठाया।

विशेष सक्षम बच्चों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित

समिति ने रेणुवल, जयपुर में विशेष सक्षम बच्चों के लिए 3 से 4 जनवरी, 2014 तक एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जिसमें राजस्थान के विभिन्न जिलों के लगभग 250 छात्रों ने भाग लिया। बच्चों के लिए अनुकूलन कार्यक्रम आयोजित किए गए जिस

दौरान उन्हें गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के 67वें शहादत दिवस को मनाने के लिए संस्मारक कार्यक्रम में उनकी भागीदारी को लेकर जानकारी दी गई। विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं जैसे: वीआई (दृश्य विकलांगता), एमआर (मानसिक विकलांगता) एवं एलडी (चलने फिरने से संबंधित विकलांगता) से पीड़ित बच्चों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। 250 बच्चों में से लगभग 80 बच्चों को दिल्ली में राष्ट्रीय शिविर के लिए चुना गया।

विशेष सक्षम बच्चों के लिए मूल्य सृजन शिविर

समिति ने गांधी दर्शन में 23 जनवरी से 1 फरवरी, 2015 तक विशेष सक्षम बच्चों के लिए एक मूल्य सृजन शिविर का आयोजन किया। गुजरात, राजस्थान एवं झारखंड के मानसिक विकलांगता,

(ऊपर): शिविर में बच्चे सुबह की प्रार्थना करते हुए।
(नीचे): श्री शिवदत्त कॉमिक्स का प्रशिक्षण देते हुये।

नेत्रहीनता एवं चलने फिरने में अक्षमता जैसी विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं से पीड़ित बच्चों ने शिविर में भाग लिया जिस दौरान वे विविध रचनात्मक गतिविधियों से जुड़े रहे। इसका उद्देश्य उन्हें उनकी प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच मुहैया करवाना था।

शिविर में लघु नाटिका प्रस्तुति।

समापन समारोह 31 जनवरी, 2015 को आयोजित किया गया।

शिविर के दौरान अहम गतिविधियां थीं:

1. प्रात: सभा
2. प्रार्थना एवं ध्यान
3. श्रमदान, स्वच्छता
4. आश्रम जीवनशैली
5. 30 जनवरी, 2015 को महात्मा गांधी को संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए संगीत में प्रशिक्षण
6. मूलभूत संवाद कौशल

महा दलित बच्चों के लिए *संबल बाल संस्कार शिविर*

समिति ने चंपारण के दहेता में 18 से 20 जनवरी, 2015 तक मुसहर समुदाय (शाब्दिक अर्थ है चूहा खाने वाले) के महा दलित बच्चों के लिए संबल थीम के तहत महा दलित बच्चों के लिए एक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया। यह समुदाय मुख्यधारा समुदाय से दूर बेहद विपन्न स्थिति में रहता है। हालांकि चूहे खाने की उनकी प्रवृति अब खत्म हो चुकी है और अब वे मुख्य रूप से भूमिहीन खेतिहर मजदूर हैं, फिर भी वे सीमांत हैं और अब भी उन्हें भेदभाव का शिकार होना पड़ता है।

कुछ प्रमुख उद्देश्य जिन्हें इस कार्यक्रम ने रेखांकित किया:

1. गरीबी से जुड़ी तात्कालिक जरूरतों को पूरी करना
2. बच्चों का उनके अधिकारों एवं अन्य ग्रामीण समुदायों के बारे में संवेदीकरण;

3. सफाई, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य विज्ञान के बारे में संवेदीकरण;
4. बच्चों को गांधीवादी सिद्धांतों एवं गांधीवादी मूल्यों के बुनियादी कारकों के बारे में शिक्षित करना;
5. सीखने की क्षमताओं को बेहतर बनाना, आदि।

कुष्ठ पीड़ित माता पिताओं के बच्चों के लिए बाल संस्कार शिविर

समिति ने उत्तराखंड के पौड़ी हरिद्वार में 28 से 30 जनवरी, 2015 तक कुष्ठ पीड़ित माता पिताओं के बच्चों के लिए कदम कदम बढ़ाए जा की थीम के तहत एक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया। 10 से 14 वर्ष की उम्र के लगभग 150 बच्चों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

कुष्ठ पीड़ित माता पिताओं के बच्चों को औपचारिक शिक्षा एवं सामाजिक पहचान की आवश्यकता है। इन बच्चों के माता-पिता अलग स्थानों पर रहते हैं और उनके बच्चों को मानव गौरव के मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा जाता है। इन बच्चों को– जो इस बीमारी से प्रभावित हैं– समाज में तिरस्कृत किया जाता है तथा पृथक रखा जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में आत्म विश्वास का फिर से निर्माण करना था क्योंकि वे समाज के प्रतिबिंब है। साथ ही, उन्हें गांधीवादी भावना में विभिन्न रचनात्मक कार्यों में भाग लेने के लिए एक अवसर प्रदान करना था।

बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया जिनमें शामिल थीं: प्रार्थना, श्रमदान, योग/ध्यान, गांधीवादी मूल्यों पर सबक, किशोरों के लिए जीवन-कौशल शिक्षा, पोस्टर निर्माण, पढ़ने एवं लिखने के कौशलों का विकास, अभिनय कलाओं प्रशिक्षण, आदि।

कार्यक्रम के दौरान जो व्यापक उद्धेश्य रेखांकित किए गए:
1. बच्चो को गांधीवादी सिद्धांतों एवं गांधीवादी मूल्यों के बुनियादी कारकों की शिक्षा देना;
2. सामाजिक लांछनों को दूर करना तथा बच्चों को उनके अधिकारों की जानकारी देना;
3. सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए सक्रिय कदम उठाने में मदद करना तथा कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों के लिए सामाजिक एकीकरण लाना;
4. उनके आत्म विश्वास एवं आत्म-छवि, सीखने की क्षमताओं को बढ़ाना

नर्मदा घाटी में बाल मेला आयोजित

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने नर्मदा जीवनशाला (जीवन के विद्यालय) के सहयोग के साथ 12 से 15 फरवरी, 2015 तक नर्मदा-सरदार सरोवर बांध के परियोजना प्रभावित परिवारों (पीएफ) के एक पुनर्वास स्थल पर बाल मेला समारोह का आयोजन किया। पुनर्वास स्थल महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के तहसील तलोदा के गोपालपुर गांव में स्थित है। जीवनशाला नर्मदा नवनिर्माण अभियान (एनएनएनए) द्वारा संचालित जनजातीय विद्यालय हैं।

9 जीवनशालाओं के लगभग 600 जनजातीय बच्चों एवं छात्रों (प्राथमिक स्तर पर) ने बाल मेले में शिरकत की। दौड़ने, लंबी एवं ऊंची कूद, तीरंदाजी, निबंध लेखन एवं वक्तृत्व कला जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक विद्यालय के पास

नर्मदा नवनिर्माण से जुड़े बच्चे बाल मेला के दौरान समूह गीत प्रस्तुत करते हुये।

लड़कों एवं लड़कियों से निर्मित टीम थी जिन्होंने दो बड़े स्वदेशी क्रीड़ाओं– खो-खो एवं कबड्डी में भाग लिया। प्रत्येक टीमों को उनके गांव के नामों से जाना गया: मनिगबेली, डैनेल, थुवानी, त्रिशुल, सवरिया दिगार, भाबरी, भैटादा, खरया भादल, जीवन नागर पुनर्वास स्थल।

बाल मेले में विभिन्न स्टॉल लगाए गए जिनमें सौर दीपक जैसे ऊर्जा उत्पादन के वैकल्पिक स्त्रोत, जीवनशालाओं के बच्चों द्वारा तैयार चिकनी मिट्टी के बर्तन एवं खिलौने, व्यक्तिविशेष बच्चों के लिए हाथ से बनाए गए खूबसूरत चित्र एवं विभिन्न विज्ञान खेल, फोटो प्रदर्शनी, नर्मदा साहित्य आदि पर प्रदर्शनियां आयोजित की गईं।

नई तालीम-आनंद निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा के बच्चों की एक टीम ने बाल मेले को और अधिक रंगीन बना दिया। इन सभी बच्चों ने इसमें भाग लिया और जीवनशाला बच्चों के साथ

स्वस्थ तन मन के लिये: बाल मेला के दौरान बच्चे खेलकूद में भाग लेते हुये।

विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लिया। इन छात्रों द्वारा किया गया रोप-मलखम कार्यक्रम का एक बड़ा आकर्षण रहा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मध्य रात्रि तक चला जिसमें नाटक, नृत्य और गाने की प्रतियोगिताएं शामिल थी। खैया नायक, भीमा नायक एवं तांत्या भील जैसे उनके नायकों के नेतृत्व के तहत ब्रितानी साम्राज्य के खिलाफ जनजातीय संघर्ष पर नाटक से दर्शकों में सिहरन भर गई और उनकी आंखों में आंसू आ गए।

जनजातीय लोगों के एक बड़े जनसमूह ने बच्चों एवं शिक्षकों के कौशलों, अवधारणा और प्रतिभा की सराहना की जिन्होंने इसे लिखा, निदेर्शित किया तथा इसमें अभिनय किया।

पुरस्कार 15 फरवरी, 2015 को वितरित किए गए तथा इससे बच्चे काफी उत्साहित हुए जिन्होंने प्रतियोगिताओं एवं खेलों में जीत हासिल की थी। प्रत्येक बच्चे को एक रंगारंग प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया।

चार दिनों तक चलने वाले समारोह के दौरान, बच्चों को जमीन, जल, वन एवं विकास, पर्यावरण निर्वहनीयता, जैव विविधता से संबंधित मुद्दों के बारे में अवगत कराने के लिए ठोस प्रयास किए गए। उन्हें घर निर्माण एवं स्वच्छता जैसी विभिन्न रचनात्मक गतिविधियां भी सिखाई गईं।

युवाओं के लिए कार्यक्रम

''ग्राम-स्वराज्य शिविर,'' बिहार

समिति ने सद्भावना आश्रम फाउन्डेशन, सुपौल बिहार के सहयोग से ग्राम स्वराज्य पर 18 से 19 मई, 2014 को दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया। इस शिविर को भपतियाही परिसर में आयोजित किया गया जिसमें जिले के नौ खण्डों से लगभग 60 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस शिविर का उद्घाटन बिहार सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री त्रिभुवन नारायण सिंह ने किया जो कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भी थे।

इस शिविर में बापू के ग्राम-स्वराज, ग्रामोद्योग तथा रचनात्मक कार्यक्रम पर विस्तार से चर्चा हुई। प्रतिभागियों को ग्राम स्वराज द्वारा ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

''राष्ट्रीय युवा समाज-साधना शिविर''

समिति ने समन्वय आश्रम, बिहार में 13 से 15 जून, 2014 को राष्ट्रीय युवा समाज-साधना शिविर का आयोजन किया। छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के राष्ट्रीय संयोजक श्री कुमार दिलीप ने इस कार्यक्रम का संयोजन किया। इस शिविर में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, उश्रर प्रदेश, पष्चिम बंगाल तथा झारखण्ड से आए लगभग 150 युवा प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

तीन दिवसीय शिविर में देश तथा समाज से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार विनिमय तथा कार्य पद्धति पर विस्तृत चर्चा की

> गरीबों के लिए चरखे का आर्थिक पहलू ही वास्तव में आध्यात्मिक पहलू है। भूखों मरनेवाले उन लाखों लोगों के सामने चरखे का दूसरा कोई पहलू आप रख ही नहीं सकते।

गई। युवाओ में देश तथा समाज के प्रति रचनात्मक योगदान के लिये उनकी नेतृत्व क्षमता के विकास का प्रशिक्षण दिया गया।

सम्मेलन गांधी पथ तथा युवा

समिति द्वारा वाराणसी, उत्तर प्रदेश में 27 से 30 दिसम्बर, 2014 तक 'गांधी पथ तथा युवा' विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि इस बात पर एकमत थे कि आज के विश्व में, और विशेषरूप से भारत में जीवन का कोई भी पहलू हिंसा से अछूता तहीं है। साम्प्रदायिक, वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, हरक्षेत्र में हिंसा व्याप्त हो गई है। बुद्ध और ईसामसीह के समान महात्मा गांधी ने भी देश और विश्व को प्रेम, शान्ति तथा करुणा का संदेश दिया। महात्मा गांधी युवा शक्ति को सामाजिक बदलाव का एक बहुत सशक्त माध्यम मानते थे और स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने इसका सफ्ल प्रयोग भी किया था।

युवाओं में यह शक्ति है कि वे सत्य और अहिंसा को व्यक्तिगत तथा वैश्विक दोनों स्तरों पर प्रयोग कर सकते है, ऐसा गांधी जी का मानना था।

आज इसी विश्वास को पुन: कारगर करने की जरूरत है और इस जिम्मेदारी को युवावर्ग ही अच्छी तरह निभा सकता है। गांधी जी के दिखाए, सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलकर देश को समाज को मज़बूत बनाने का प्रण सभी प्रतिभागियों ने इस सम्मेलन में लिया।

गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश वापसी के सौ वर्ष: समारोह

'संघर्ष, अहिंसा तथा युवा' विषय पर विचार वार्ता

दक्षिण अफ्रीका से गांधी जी के स्वदेश लौटने के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर समिति द्वारा विशेष समारोह आयोजित किये गए। दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानो से लगभग 100 विद्यार्थियों ने गांधी दर्शन में आयोजित विशेष वार्ता में भाग लिया जिसका आयोजन 17 जनवरी, 2015 को किया गया। ''संघर्ष, अहिंसा तथा युवा'' विषय पर इस विचार वार्ता में युवाओं

परिसंवाद में प्रतिभागी विचार विनिमय करते हुये।

के साथ सामाजिक परिवेश में व्याप्त संघर्ष तथा उनके अहिंसक समाधान पर विचार-विनिमय किया गया।

गांधी जी के जीवन में सत्याग्रह के अभिनव प्रयोग ने दुनिया को एक अद्भुत हथियार दिया। अन्याय के विरुद्ध लड़ाई में गांधी जी ने इस अस्त्र का सफल प्रयोग किया। मार्टिन लूथर किंग का यह कथन वास्तव में सही है कि ''ईसा मसीह ने हमें संदेश दिया, गांधी जी ने पद्धति दिखाई।''

समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिये गांधी जी ने युवाओं की भूमिका को अति महत्त्वपूर्ण माना है। इस वार्ता विनिमय में युवाओं को संघर्ष समाधान के लिये गांधी जी के विचारों से प्रेरित किया गया ताकि वे देश तथा समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदिरियों का वहन कर सकें।

गांधी दर्शन में आयोजित परिसंवाद में दिल्ली तथा एन.सी.आर. के विद्यार्थी।

■ युवाओं के समक्ष चुनौतियां

आज के दौर में युवाओं के सामने अनेक समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं। समाज में फैली हुई अनेक कुरीतियों ने युवाओं को अपना शिकार बना लिया है। इनमें मुख्य हैं शराब तथा नशीली दवाओं का सेवन, यौन उत्पीड़न, आतंकवाद, अशिक्षा, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता, गरीबी, बेरोज़गारी आदि।

आगे बढ़ने की होड़ में भी इस दौर का युवा स्वयं को असुरक्षित पाता है। मीडिया और इन्टरनेट की प्रधानता के युग में कहीं नैतिक मूल्य खो से रहे है। शिक्षा के क्षेत्र में भी ज्ञान का नहीं प्रतियोगिता का अधिक महत्त्व है।

इन्हीं समस्याओं तथा इनके समाधान ढूंढने के लिये समिति द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें अनेक युवा प्रतिनिधियों ने भाग लिया। चर्चा का मुख्य मुद्दा था हिंसा का व्यापक घेरा जिसने देश को, समाज को अपनी भयानक चपेट में ले रखा है। सभी जगह लोगों के मन में कोई न कोई डर है, सभी सहमे हुए हैं। समाज के हर स्तर पर हिंसा ने अपनी पकड़ बना ली है और मतभेदों को प्यार से नहीं घृणा से समाप्त करने की कोशिश एक आम बात ही गई है।

इसी संदर्भ में यह सुनिश्चित हुआ कि गांधी जी द्वारा माना जाने वाला ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का दर्शन ही प्रेम और शान्ति के लिये अपनाया जाना चाहिये। युवाओं को यह स्वीकार करना होगा कि हर बदलाव की शुरूआत हमें अपने आप से ही करनी है। ऐसा करने के बाद ही हम अपने परिवेश, देश, समाज में बदलाव ला सकते हैं। परिचर्चा में युवाओं द्वारा जिन विशेष मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ वे थे शिक्षा, ग्राम-विकास, स्वच्छता, भ्रष्टाचार निवारण, रोज़गाार के अवसर आदि।

एमिटि यूनिवर्सिटी की छात्रा सुश्री शिवानी राठी ने मेवात गाँव के अपने प्रोजेक्ट के बारे में बताया। अपने अनुभवों के बारे में उन्होंने सह-प्रतिभागियों को बताया और कहा कि उन्होंने इस गाँव का गहन अध्यन किया और पाया कि यह गाँव बहुत ही हिंसाग्रसत है और सामाजिक रूप से भी पिछड़ा हुआ है। गाँव वाले स्वच्छता के प्रति भी जागरूक नहीं है।

शिवानी ने कहा कि यदि किसी गाँव या समाज में बदलाव लाना है तो शुरूआत बच्चों से ही करनी होगी। उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि युवावर्ग शान्तिपूर्ण विकास प्रयास के जरिये मेवात जैसे गाँवों का उद्धार कर सकते है।

विचार गोष्ठी में देश में फैले जातिप्रथा के दुष्प्रभावों पर भी युवा साथियों ने चर्चा की। रोजगार में आरक्षण का कोई स्थान नहीं होना चाहिये। समाज के हित में यही है कि सभी को शिक्षा तथा रोजगार के समान अवसर तथा अधिकार प्राप्त हों।

गांधी जी का यह मानना था कि प्राकृतिक संसाधनो द्वारा ही हमारी जरूरत की चीजें तैयार की जा सकती हैं और इस संदर्भ में युवाओं का यह कर्त्तव्य होना चाहिये किवे प्राकृतिक संपदाओं का उचित उपयोग और संरक्षण करें ताकि वे नष्ट न हों। ऐसा होने पर ही लम्बे समय तक प्राकृतिक साधनों की उपयोगिता बनी रहेगी। सभी युवा साथी प्रकृति संरक्षण तथा उसके उचित उपयोग के विषय

में गांधी जी के विचारों से सम्पूर्ण रूप से सहमत थे।

सभी युवा प्रतिभागियों ने यह भली भांति समझा कि गांधी जी ने जो शान्तिपूर्ण संघर्ष समाधान के उपाय बताए थे वे केवल अंग्रेजी शासकों से स्वाधीन होने के लिये नही थे बल्कि हर परिस्थिति में इस्तेमाल किये जा सकते हैं। आज एक बेहतर समाज रचना के लिये इन उपायों की बहुत उपयोगिता है। गांधी जी के अहिंसक सत्याग्रह ने पूरे विश्व समुदाय तथा नेतृत्व को प्रेरणा दी है, आज़ादी की राह दिखाई है।

आज के युवा उनके अमर विचारों को गतिविधियों में परिवर्तित कर देश और समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियाँ बख़ूबी निभा सकते है। अहिंसा के अस्त्र से समाज में फैली सामाजिक आर्थिक राजनैतिक बुराइयों को दूर किया जा सकता है। हिंसा को रचनात्मकता की ओर मोड़ने की क्षमता और दायित्वबोध युवाओं में है और इसी दिशा में उन्हें निरन्तर प्रयासरत रहना है।

भारत का भविष्य पश्चिम के हिंसक मार्ग पर निर्भर नहीं करता, जिस पर चल कर पश्चिम स्वयं थका हुआ दिखाई देता है; भारत का भविष्य ऐसे शांति के मार्ग पर निर्भर करता है, जो सादे और पवित्र ईश्वर-परायण जीवन का परिणाम है।

— महात्मा गांधी

आगे बढ़ने की होड़ में भी इस दौर का युवा स्वयं को असुरक्षित पाता है। मीडिया और इन्टरनेट की प्रधानता के युग में कहीं नैतिक मूल्य खो से रहे है। शिक्षा के क्षेत्र में भी ज्ञान का नहीं प्रतियोगिता का अधिक महत्त्व है।

योग्यता निर्माण तथा अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर युवा कार्यशाला

समिति ने खुदाई खिदमदगाार तथा एफॉर्ट संस्था के सहयोग से 13 से 16 मार्च, 2015 तक गांधी दर्शन में चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में मुख्य विचार-बिन्दु थे शिक्षा, स्वास्थ्य, तथा व्यवसाय। इस कार्यशाला में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार तथा दिल्ली से लगभग 40 युवाओं ने भाग लिया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष आई.आई.टी दिल्ली के रिटायर्ड प्रोफेसर श्री वी. के. त्रिपाठी थे। प्रमुख वक्ताओं में श्री मुस्तफा मोहम्मद, निदेशक, एफॉर्ट तथा खुदाई ख़िदमदगार संगठन के श्री मोहम्मद फैज़ान थे।

इस कार्यशाला में चर्चा के मुख्य विषय थे

1. ''**सूचना अधिकार कानून**'' अध्यक्षता जम्मू कश्मीर आर.टी.आई आन्दोलन सचिव डा. गुलाम रसूल।
2. ''**ग्रामीण भारत में शिक्षा का महत्त्व तथा बीच में पढ़ाई छोड़ देने की समस्या**'' पर परिचर्चा।
3. ''**शान्तिपूर्ण समाज के लिये युवाओं की भूमिका**''- मुख्य वक्ता महिमाल सारस्वत, इनामुल हसन तथा गंगासागर सारस्वत।
4. ''**हमारे संवैधानिक अधिकारों की जानकारी**'' वक्ता थीं एडवोकेट तहमीना लस्कर।

5. ''**समाज में महिलाओं की भूमिका तथा दायित्व**''- अध्यक्षता श्रीमती अंजुम आमरे खान।
6. ''**स्वास्थ्य तथा स्वच्छ परिवेश**''-विषय पर चर्चा -विशेष संदर्भ गांधी जी के उपराक्त विषय पर व्यावहारिक विचार स्वस्थ जीवन के लिये। इस सत्र के मुख्य वक्ता थे डॉ. जसकरण सिंह सैनी।

युवाओं के लिये कार्यक्रम अन्धविश्वास विषय पर नाट्य प्रस्तुति

सुकरात-तुकाराम से दाभोलकर - समिति ने 18 फरवरी, 2015 को गांधी स्मृति में महाराष्ट्र अन्धश्रद्धा निर्मूलन (MANS) की तरफ से इस नाटक का मंचन किया इसमें निहित संदेश था कि संत सुकरात, संत तुकाराम से महात्मा गांधी तथा डॉ. नरेन्द्र दभोलकर तथा अनेक ऐसे महापुरूषों ने सत्य अहिंसा की बलिवेदों पर अपने प्राण दिए हैं और हमें अन्याय का विरोध करना सिखाया है।

महात्मा गांधी जैसे व्यापक सोच वाले व्यक्तियों ने सदा समाज के उत्थान के लिये अपना जीवन समर्पित किया है। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिये अपने जीवन का बलिदान तक दिया। यह नाटक इन महान समाज सुधारकों को समर्पित है। नाटक के दर्शकों में जो विशिष्ट अतिथि थे वे थे श्री शरद यादव, एम.पी., जनता दल (यू), श्री के.सी. त्यागी, एम.पी., श्री लक्ष्मी दास, सचिव; हरिजन सेवक संघ आदि।

नाटक 'सुकरात, तुकाराम से दाभोलकर' एक मुक्त विचारधारा

एम.ए.एन.एस. द्वारा प्रस्तुत नाटक देखते हुये श्री शरद यादव (दायें) सुश्री मणिमाला (मध्य) तथा श्री लक्ष्मी दास (बांये)

को प्रस्तुत करता है जो वैज्ञानिक सोच को आध्यात्म के साथ जोड़ता है। इन महापुरूषों के जीवन से प्रेरक प्रसंग लेकर हम सबको सच और त्याग बलिदान की राह दिखाई गई है। इन सभी महान व्यक्तियों की हत्या की गई थी मगर अपने विचारों से कार्यों से वे अजर-अमर हैं।

मंच पर कलाकार इस प्रकार थे: सुकरात-योगेश कुदालें, न्यायाधीश-संजय बानसोडे, सन्त तुकाराम-अजय काले, धर्मपीठ-अजय भालकर, डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर-सागर सूर्यवंशी, रिपोंटर-अरूण भोंसले तथा अवधूत काम्बले और सुयशतोश्नीवाल, लेखक-राजा शिरगुप्पे, निदेशक-विजय पोवार, मिलिन्दि जोशी, अतुल पेढ़े, अविनाश पाटिल, हमीद दाभोलकर तथा अन्य। इन सभी को समिति की ओर से सम्मानित किया गया।

महाराष्ट्र अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति (एमएएनएस) के कलाकार गांधी स्मृति में नाट्य प्रस्तुति करते हुये।

महिलाओं के लिये कार्यक्रम

स्वउद्यमी महिलाओं के साथ बैठक

समिति ने 26 फरवरी 2015 को लगभग 25 महिलाओं के साथ बैठक की। इस अवसर पर *बी. एन्ड एस. फाउन्डेशन* की रेनू शर्मा, *वीमेन्स पार्टनरशिप* की ऊषा कृष्ण कुमार, नीलांजल की नीलार्जलि शर्मा, ईवा क्लिनिक की डॉ. निधि खेड़ा, कुणाल एडुकेशनल सोसायटी की रूचिका भारद्वाज, एफ.टी.एफ.आई के अमित चैटर्जी तथा सुब्रत कुमार, फेयर ट्रेड फोरम, भारत के डोरीलाल, राजीव आर. पिल्लई, साधना एमी, पी. मुखर्जी, आदि उपस्थित थे।

महिला श्रम शक्ति मेला

समिति द्वारा दाण्डी यात्रा की 85वीं जयन्ती के अवसर पर 12 मार्च, 2015 को गांधी दर्शन में महिला श्रम शक्ति मेला आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को फेयर ट्रेड फोरम, भारत, तथा बिलीव इण्डिया के सहयोग से आयोजित किया गया। इसमें देशभर के विभिन्न प्रान्तों से 400 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन राज्य मंत्री श्रम तथा रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार श्री बन्दारू दत्तात्रेय, श्रीमती मीनाक्षी लेखी, बीजेपी प्रवक्ता तथा श्रीमती जया जेटली ने की।

श्री बन्दारू दत्तात्रेय ने उपस्थित महिलाओं को उनकी सफलताओं के लिए *स्त्री उद्यमी मुरस्कार* प्रदान किया। साथ ही उन्होंने **''महिलाओं के लिए महिलाएँ''** कार्यक्रम का भी शुभारम्भ किया।

श्री बंदारूदत्तात्रेय, राज्यमंत्री, श्रम तथा रोज़गार मंत्रालय, श्रीमती जया जेटली (बांये) तथा सुश्री मणिमाला (दांये) दीप प्रज्जवलित करते हुये।

इस अवसर पर समिति के 'सृजन' के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना संगीत।

(बांए) श्रीमती जया जेटली महिला उद्यमी को सम्मानित करती हुई। दर्शक वृंद। (दांए)

इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारत के सर्वांगीण विकास में महिलाओं का अद्‌भुत योगदान है। **''महिलाएँ किसी भी प्रकार से पुरुषों से कमतर नहीं हैं। उन्हें, विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं को जीवन के सभी मूलभूत अधिकार सुरक्षा तथा संसाधन प्राथमिकता स्वरूप प्राप्त होने चाहिए।''** उन्होंने मंत्रालय की तरफ से भी कामकारी महिलाओं को यथासंभव सहायता का आश्वासन दिया।

श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने भी स्वउद्यमी महिलाओं को भरपूर प्रोत्साहन प्रदान करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया ताकि समाज तरक्की कर सके।

इस कार्यक्रम में *बवाई, चैरी, घूमर* तथा *कालबेलिया* नृत्य भी मुख्य आकर्षण रहे।

कार्यक्रम में घूमर नृत्य की प्रस्तुति।

जनजातीय लोगों के लिए कार्यक्रम

चतुर्थ आदिवासी संस्कृति संगम

समिति ने 28 से 30 नवम्बर, 2014 को गांधी दर्शन में चौथे आदिवासी संस्कृति संगम का आयोजन किया। इस समागम में देश के विविध राज्यों से लगभग 650 आदिवासी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम द्वारा आदिवासी जीवन शैली तथा सांस्कृतिक विविधता हमारे सामने आती है। यह प्रयास आदिवासी जीवन से जुड़ी समस्याओं को भी उजागर करता है तथा जनमंच के माध्यम से उनका समाधान भी ढूंढता है। एक उत्सव होने के साथ यह एक बहुमूल्य संस्कृति के संरक्षण तथा विकास का भी प्रयास है।

इटली के प्रसिद्ध छायाकार इलियो मॉन्टोनारी तथा उनकी पत्नी ऐना बेनेदोअितो 20 नवम्बर 2014 को उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। यह दम्पत्ति गुजरात विद्यापीठ में 'गांधी टुडे' के कार्य से जुड़े हैं। समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला ने अपने स्वागत भाषण में संस्कृति समागम के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि 2011 के प्रथम आदिवासी सम्मेलन के साथ निरन्तर विकसित होते इस प्रयास द्वारा देश भर से आदिवासी जन एक मंच

चित्र में:
(ऊपर): *चतुर्थ आदिवासी संस्कृति समागम के उद्घाटन समारोह में टानाभगतों द्वारा प्रार्थना गाते हुये।*
(मध्य): *विशिष्ट अतिथियों द्वारा पारम्परिक 'धम्सा' वादन से कार्यक्रम का उद्घाटन।*
(नीचे): *आदिवासी स्वतन्त्रता सेनानी बिरसा मुंडा के जीवन पर आधारित लोक नाट्य प्रस्तुति।*

(बांये से दायें) गांधी दर्शन में आयोजित आदिवासी संस्कृति संगम के 'जन संवाद' कार्यक्रम के दौरान विभिन्न वक्ता।

पर एकत्रित होकर अनुभव बाँट रहे हैं। इस कार्यक्रम द्वारा समाज के इस उपेक्षित अंश को सम्मिलित आवाज़ मिलती है।

जनसंसद के माध्यम से विकास के नये युग पर विचार विमर्श हुआ। वरिष्ठ आदिवासी क्षेत्रों में कार्यकर्त्ता जनों ने वर्तमान परिस्थिति पर प्रकाश डाला। प्रत्येक संध्या को सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई।

समापन कार्यक्रम 30 नवम्बर, 2014 को गांधी स्मृति में आयोजित किया गया जिसमें एकल संस्थान की श्रीमती मंजूश्री मुख्य अतिथि थीं, अन्य प्रमुख अतिथियों में हरिजन सेवक संघ के श्री शंकर सान्याल तथा श्री लक्ष्मीदास भी उपस्थित थे। समापन में भी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

आदिवासी क्षेत्रों में कार्यरत गांधीजनों के लिये राष्ट्रीय युवा शिविर

समिति द्वारा गांधी दर्शन में 28 से 30 जुलाई, 2014 तक आदिवासी इलाकों में कार्य करने वाले गांधीजनों के लिये राष्ट्रीय युवा शिविर आयोजित किया गया। इसमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के विद्यार्थियों तथा मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, उत्तराखण्ड तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के युवा तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

इस कार्यशाला शिविर के विशेष ध्येय इस प्रकार थे:

– युवाओं, समाजसेवियों तथा दिल्ली के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच विचार–विनिमय को बढ़ावा देना।

– देश में विकास के विविध आयामों पर चर्चा।

– विविध मुद्दों को समझने–समझाने के समान क्षेत्र।

सभी युवा प्रतिभागियों ने अपने–अपने अनुभवों की चर्चा की और एकमत हुए कि वर्तमान विकास प्रक्रिया हमें गांधी जी के बताए आदर्शों से दूर ले जा रही है। आर्थिक–सामाजिक विषमताएँ बढ़ती जा रही हैं।

इस शिविर में सभी प्रतिभागियों ने निर्णय लिया कि नेटवर्क के माध्यम से एक दूसरे से जुड़कर काम करेंगे तथा सामाजिक समस्याओं के विषय में जागरूकता फैलाने का भी बीड़ा उठाएंगे। समय–समय पर बैठकों द्वारा विभिन्न राज्यों की गतिविधियों पर विचार विनिमय किया जाएगा ऐसा भी तय किया गया।

इस कार्यशाला शिविर के विशेष ध्येय इस प्रकार थे:

– युवाओं, समाजसेवियों तथा दिल्ली के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच विचार–विनिमय को बढ़ावा देना।

– देश में विकास के विविध आयामों पर चर्चा।

– विविध मुद्दों को समझने–समझाने के समान क्षेत्र।

स्मरणोत्सव : स्मारक कार्यक्रम

स्व. श्री प्रभाष जोशी को उनके 77वें जन्मदिवस पर श्रद्धांजलि

19 जुलाई, 2014 को समिति के गांधी दर्शन परिसर में प्रभाष प्रसंग का आयोजन हुआ जिसमें देश के मीडिया प्रतिनिधि, विशिष्ट साहित्यकारों तथा बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। लगभग 500 पत्रकारों, साहित्यकर्मियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर श्री प्रभाष जोशी स्मारक व्याख्यान भी हुआ जिसमें वरिष्ठ पत्रकार श्री बी.जी. वर्गीज़ ने आज के सम्पर्क माध्यमों के क्रांतिकारी प्रभावों की चर्चा की तथा यह प्रस्ताव रखा कि नये युग में इनका रचनात्मक उपयोग किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आज कुछ ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो नए मीडिया को प्रभावशाली पद्धति से प्रयुक्त कर सकें। उन्होंने कहा कि ''ऐसा ब्लू रिबन कमीशन सरकारी तंत्र से बाहर रखा जाए जिसमें शिक्षाविद, वैज्ञानिक, प्रशासक, समाज सेवक, कला जगत से जुड़े-लोग तथा समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि शामिल किये जाएं।''

चित्र में (ऊपर से नीचे):

- *श्री बी.जी. वर्गीज़ 'प्रभाष जोशी स्मारक' व्याख्यान देते हुये। मंच पर उनके साथ हैं केन्द्रीय गृह मंत्री, श्री राजनाथ सिंह, (मध्य) श्री राम बहादुर राय (बांये) तथा डा. नामवर सिंह (दांये)।*
- *श्री राजनाथ सिंह मुख्य सम्बोधन प्रस्तुत करते हुये। इस अवसर पर प्रसिद्ध कलाकार श्री शेखर सेन द्वारा कबीर का नाट्य मंचन।*

उन्होंने कहा कि ''संचार क्रान्ति ने मीडिया को बहुत शक्तिशाली बना दिया है और इसी शक्ति का इस्तेमाल बहुत ज़िम्मेदारी के साथ किया जाना है। मीडिया तो जनता के सूचना अधिकार की ट्रस्टी है और इसलिये सच्चाई पर चलते हुए मीडिया को अपना दायित्व पालन करना होगा।''

श्री राजनाथ सिंह ने भी दिवंगत श्री प्रभाष जोशी को श्रद्धांजलि देते हुए उनका स्मरण किया। इस अवसर पर उन्होंने 'कहने को बहुत कुछ था' पुस्तक का विमोचन किया जो कि स्व. प्रभाष जोशी जी के कुछ चुने हुए लेखों का संग्रह है। इस पुस्तक का संपादन गांधी विद्यापीठ के प्रोफेसर सुरेश शर्मा ने किया है तथा राजकमल प्रकाशन ने इसे छापा है। इस विमोचन कार्यक्रम में डॉ. नामवर सिंह, श्री बी.जी. वर्गीज, श्री रामबहादुर राय तथा श्री अशोक माहेश्वरी ने भी भाग लिया।

इसी कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण था प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार श्री शेखर सेन द्वारा 'कबीर' नाटक की एकल प्रस्तुति। श्री शेखर सेन महान सन्तों, महापुरूषों की जीवनी को नाट्य संगीत के माध्यम से अद्‌भुत प्रस्तुतियों के लिये प्रसिद्ध हैं। 'तुलसी', 'कबीर', 'विवेकानन्द' आदि नाटकों के वे देश-विदेश में 750 से अधिक मंचन कर चुके है। विदेशों में उन्होंने अपने नाटकों को अमेरिका, इंग्लैण्ड, बेल्जियम, हांगकांग, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, त्रिनिदाद, सूरीनाम, शारजाह तथा जोहान्सबर्ग आदि में भी प्रदर्शित किया है।

''स्वयं को पाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है खुद को दूसरों की सेवा में खो देना।''

— महात्मा गांधी

बालगंगाधर तिलक की 94वीं पुण्यतिथि स्मरण कार्यक्रम

(ऊपर): लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 94वीं पुण्यतिथि पर श्री रामबहादुर राय सभा को सम्बोधित करते हुये।
(नीचे): दर्शक वृंद।

समिति ने 'नेशन फर्स्ट' के सहयोग से महात्मा गांधी के राजनैतिक गुरू तथा स्वाधीनता आंदोलन के महान स्तम्भ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को उनकी 94वीं पुण्यतिथि पर 1 अगस्त, 2014 को गांधी दर्शन में आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धांजलि अर्पित की। बालगंगाधर तिलक तथा महात्मा गांधी पर विशेष चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में शिक्षाशास्त्री, साहित्यकार, पत्रकार, कवि, बुद्धिजीवी सभी वर्गों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के समापन में विशेष सांस्कृतिक प्रस्तुति भी की गई।

वैश्विक सर्वधर्म-शान्ति प्रार्थना

समिति ने 'गिल्ड ऑफ सर्विस' तथा 'वॉर विडोज़ एसोसिएशन' के सहयोग से 4 मार्च, 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह (8 से 15 मार्च) के अवसर पर वैश्विक सर्वधर्म शान्ति प्रार्थना का आयोजन किया। इस प्रार्थना सभा में शान्ति और समन्वय के गीत गाए गए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती गुरूशरण कौर थीं। अन्य गणमान्यजन थे डॉ. वी. मोहिनी गिरि, अध्यक्ष, गिल्ड ऑफ सर्विसेज़ डॉ. किरण मेहरा कर्पलमैन, संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र भारत तथा भूटान की निदेशक, डॉ. अशोक सज्जनहार, डॉ. किरण वालिया, डॉ. सईदा हमीद तथा डॉ. ए. के. मर्चेन्ट एवं अन्य। समाज के विभिन्न तबकों से भी अनेक लोगों ने भाग लिया।

गांधी स्मृति में विश्व शांति के लिये सर्वधर्म प्रार्थना।

जयपुर में राष्ट्रीय सप्ताह

1919 के रॉलेट एक्ट के देशव्यापी विरोध की स्मृति में आयोजित

समिति ने 14 अप्रैल, 2014 को जयपुर में 1919 के दमनकारी रॉलेट एक्ट के देशव्यापी विरोध की स्मृति में राष्ट्रीय सप्ताह आयोजित किया। यही बाबा साहब अम्बेडकर की भी जन्मतिथि है। इस कार्यक्रम में समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला का प्रमुख संबोधन था। इस अवसर पर उपस्थितजनों में थे दलित अधिकार केन्द्र राजस्थान के निदेशक श्री पी. के. मिमरोथ, श्री कमल किशोर, सचिव, जनकला साहित्य मंच तथा राजस्थान विश्वविद्यालय की भूतपूर्व प्रो. डॉ. प्रतिभा जैन आदि।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री मिमरोथ ने बताया कि किस प्रकार महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के प्रयोगों द्वारा सत्य और अहिंसा के माध्यम से देश को लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग दिखाया। धार्मिक समभाव तथा सहिष्णुता पर भी विशेष चर्चा हुई।

दलितों के सर्वांगीण उत्थान के लिये भी वक्ताओं ने ज़ोर दिया ताकि वे राष्ट्रीय मुख्यधारा में जुड़ सकें।

शैक्षिक कार्यक्रम

चम्पारण सत्याग्रह पर परिचर्चा

समिति ने 14 अप्रैल, 2014 को चम्पारण में महात्मा गांधी की चम्पारण यात्रा तथा नई तालीम के विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का संयुक्त रूप से उद्घाटन किया गांधी संग्रहालय सचिव श्री बृजकिशोर सिंह तथा बुनियादी विद्यालय की प्राध्यापिका सुश्री शशिकला तथा श्री नारायण मुनि ने। इस समारोह में बापू के 1917 में चम्पारण आने तथा उनके मार्गदर्शन में चम्पारण सत्याग्रह को प्रेरणा स्वरूप याद किया गया।

कार्यक्रम के सभी वक्ताओं ने कहा कि महात्मा गांधी का जीवन दर्शन राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का व्यावहारिक समन्वय है तथा देश और समाज की उन्नति के लिये इनका पालन आवश्यक है।

(ऊपर): *समिति के स्वयं सेवक गाइड सामूहिक अभ्यास में भाग लेते हुये।*
(नीचे): *सुश्री स्मिता वत्स गांधी दर्शन में प्रशिक्षण देती हुई।*

प्रदर्शनी में दर्शकों की रूचि बढ़ाने का प्रशिक्षण

समिति के दोनों परिसरों की प्रदर्शनी तथा संग्रहालय में दर्शकों की रूचि को बढ़ाने के लिये 26 मई, 2014 को गांधी दर्शन में कार्यशाला रखी गई। समिति के युवा स्वयं सेवकों के लिये आयोजित इस कार्यशाला को 'इतिहास' संस्था की स्थापक निदेशक श्रीमती स्मिता वत्स ने संचालित किया। उनके साथ श्री पवन और मोहसिन ने भी प्रशिक्षण प्रदान किया।

संस्था की निदेशक सुश्री मणिमाला ने इस प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए कहा कि देश के विभिन्न तबकों से आने वाले दर्शकों पर हमें पूरा ध्यान देना है ताकि महात्मा गांधी का जीवन दर्शन जन-जन तक पहुँचे।

इस कार्यशाला में श्रीमती वत्स ने युवा मार्गदर्शकों को सिखाया कि किस प्रकार उन्हें दर्शकों के साथ सीधा सम्पर्क साधना चाहिये।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी अपने अनुभवों को बांटते हुए।

दर्शकों को आकर्षित और प्रोत्साहित करने के लिये व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रयास ज़रूरी हैं।

इस कार्यक्रम में समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुन्डू, श्री राजदीप पाठक, श्रीमती शैलजा गुल्लापल्ली भी उपस्थित थे।

इस कार्यशाला में सुश्री वत्स ने युवा कार्यकर्ताओं को सिखाया कि किस प्रकार स्मृति संग्रहालय में नन्हें दर्शकों को प्रदर्शनी की ओर आकृष्ट किया जाए तथा विभिन्न रचनात्मक मॉड्यूल्स द्वारा बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाया जाए। मल्टी मीडिया प्रदर्शनी को रचनात्मक गतिविधियों द्वारा समझने से बच्चे गांधी जी के जीवन दर्शन को भली भांति समझ सकेंगे।

गांधी दर्शन में एक व्यावहारिक सत्र भी आयोजित हुआ जिसमें प्रतिभागियों को दो समूहों में बाँटा गया - मार्गदर्शक तथा दर्शक समूहों में ताकि वे संग्रहालय तथा दर्शक संबंधों को भली भांति समझ कर प्रयुक्त कर सकें।

सुश्री वत्स ने युवा प्रतिभागियों को चार्ट पेपर पर संग्रहालय के बारे में अपने विचार व्यक्त करने को कहा। चार्ट पेपर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक बढ़ता गया तथा विचार जुड़ते गए। वापस पहले व्यक्ति के पास जब चार्ट आया तो वह स्वयं नहीं पहचान पाया क्योंकि उसमें अनेक प्रकार के विचार जुड़ गए थे। इस अभ्यास से सभी के विचारों का आदान प्रदान भी संभव हो सका।

इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि दर्शकों के साथ केवल किसी एक का नहीं बल्कि पूरे समूह का योगदान होता है।

सत्र के समापन पर सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने विचार रखे तथा यह इच्छा भी व्यक्त की कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित होते रहने चाहिए। सुश्री वत्स ने फील्ड अनुभवों के लिये अपनी संस्था इतिहास की मदद का भी आश्वासन दिया।

महात्मा गांधी के सर्वोदय तथा नेल्सन मंडेला के रंग-भेद विरोधी आंदोलन पर परिचर्चा

नेल्सन मंडेला की 96वीं वर्षगांठ के अवसर पर समिति ने 18 जुलाई, 2014 को गांधी दर्शन में विशेष परिचर्चा का आयोजन किया। इस उपरोक्त विषय पर कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता थे हरिजन सेवक संघ के सचिव श्री लक्ष्मीदास, समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला, श्री शिवकुमार मिश्र, विख्यात गांधीवादी तथा श्रीमती प्रतिभा सिन्हा, (स्व. डॉ. के. एम. प्रसाद की पत्नी) मोक्षदा बालिका विद्यालय, भागलपुर की भूतपूर्व प्रधानाचार्या तथा अन्य।

परिसंवाद के दौरान श्री शिवकुमार मिश्रा जनसमूह को सम्बोधित करते हुये। साथ में हैं - सुश्री मणिमाला (बांये) श्री लक्ष्मी दास (मध्य) एवं श्रीमती प्रतिभा सिन्हा (दायें)

कार्यक्रम में लगभग 60 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

इसी अवसर पर भागलपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रो. स्व. डॉ. के. एम. प्रसाद की पुस्तक 'सर्वोदय ऑफ गांधी' का विमोचन भी हुआ। श्री लक्ष्मीदास ने अपने संबोधन में कहा कि ''इस पुस्तक का ध्येय'' महात्मा गांधी के सर्वोदय के सिद्धांत का विस्तार करना है ताकि यह समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभान्वित करें।

'मोबाइल रेडियो' तथा सूचना स्वराज पर कार्यशाला

समिति ने गांधी दर्शन में 21 से 25 जुलाई, 2014 तक पाँच दिवसीय 'मोबाइल रेडियो' कार्यशाला आयोजित की। इस प्रशिक्षण द्वारा प्रतिभागियों को संचार संपर्क क्षेत्र में मोबाइल की उपयोगिता के विषय में सिखाया गया। आवश्यक संदेशों को दूर दराज़ के क्षेत्रों में मोबाइल द्वारा पहुँचाएं जाने की प्रक्रिया को समझाया गया। साथ ही 'सूचना स्वराज' पर भी सेमिनार आयोजित किया गया।

सीजी नेट स्वर के संस्थापक श्री शुभ्रांशु चौधरी ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया जिसमें छत्तीसगढ़, झारखण्ड, ओडिशा तथा महाराष्ट्र के आदिवासी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सेमिनार में श्री शुभ्रांशु ने बताया कि उन्होंने सीजी नेट स्वर तैयार किया है जो ध्वनि पोर्टल है जिसके ज़रिये आम नागरिक स्थानीय महत्त्व की ख़बरों को रिपोर्ट करते है। फिर पत्रकार इन रिपोर्टों का विश्लेषण कर उसे प्रसारित करते हैं ताकि सूचना संपर्क का आदान प्रदान हो।

गांधी दर्शन में 'मोबाइल रेडियो' पर कार्यशाला।

(ऊपर एवं नीचे): *'मोबाइल रेडियो' पर कार्यशाला में भाग लेते हुये प्रतिभागी।*

राष्ट्रीय कार्यक्रम योजना बैठक

समिति द्वारा 5 से 6 अगस्त, 2014 तक गांधी दर्शन में राष्ट्रीय कार्यक्रम योजना बैठक रखी गई जिसमें देशभर से 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस बैठक में समिति के वार्षिक कार्यक्रमों के विषय में विस्तृत चर्चा की गई।

अपने स्वागत भाषण में समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला ने समान विचारों वाली संस्थाओं के साथ मिलकर कार्यक्रम करने के महत्व पर प्रकाश डाला ताकि इन सामूहिक प्रयासों द्वारा बापू के संदेश का दूर-दूर तक प्रचार प्रसार हो सके।

बैठक के पहले सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ गांधीवादी तथा राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के भूतपूर्व निदेशक डॉ. वाई. पी. आनंद ने की। उन्होंने बताया कि देश के सामाजिक आर्थिक-राजनैतिक सभी प्रकार के विकास में गांधी जी के दिये सिद्धांत सदा कारगर होते हैं।

गांधी दर्शन में राष्ट्रीय योजना बैठक के कुछ दृश्य।

महात्मा गांधी के नेतृत्व मूल्य तथा वर्तमान विश्व परिदृश्य

समिति द्वारा उपरोक्त विषय पर गांधी दर्शन में 18 सितम्बर, 2014 को विशेष परिचर्चा आयोजित की गई। इस परिचर्चा में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से एक सरकारी अधिकारियों के उच्चस्तरीय प्रतिनिधि मंडल ने भाग लिया। परिचर्चा की अध्यक्षता वरिष्ठ गांधीजन डॉ. वाई. पी. आनंद ने की। प्रतिनिधि मंडल के संयोजक श्री राशिद चौधरी भी इस कार्यक्रम में शामिल थे।

प्रतिनिधि मंडल में श्री मार्क फ्लैन्डर्स, कोलम्बस ओहायो, सुश्री बार्सी मैकनिल, श्री मैनी फ्लोरेस, श्री पामर मैकनिल, श्री व्लादिमीर, सुश्री ऐना, श्री हैरिसन एवं अन्य शामिल थे। उपरोक्त सभीजन अमेरिका के विभिन्न सरकारी विभागों के उच्च पदाधिकारी थे।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. आनन्द ने विश्व में चारों तरफ फैलती हिंसा तथा संघर्ष के समाधान के महात्मा गांधी के बताए सत्य और अहिंसा के मार्ग के महत्व को समझाया। उन्होंने कहा कि गांधी जी के सिद्धांत केवल भारत ही नहीं समूचे विश्व के लिये प्रासंगिक हैं।

सभी अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये तथा अनुभव बाँटे। गांधी दर्शन स्थित 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' मण्डप भी सभी अतिथियों ने देखा।

(ऊपर एवं नीचे): *डा. वाई. पी. आनन्द, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के भूतपूर्व निदेशक 'महात्मा गांधी के नेतृत्व क्षमता और आज की दुनिया की तस्वीर' पर आयोजित परिचर्चा की अगुआई करते हुये। अन्य प्रतिभागी तन्मयता से सुनते हुये।*

राष्ट्रीय अधिवेशन : गृह उद्योग सेक्टर में बाल मज़दूरी प्रथा को रोकने के लिये सप्लाई चेन मॉडल

समिति ने फेयर ट्रेड फोरम, भारत, Opportunejobs. com ट्रेड क्राफ्ट तथा सीईसी के साथ मिलकर उपरोक्त विषय पर राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया। यह कार्यक्रम 8 दिसम्बर 2014 को गांधी दर्शन में किया गया। बचपन को बचाने के लिये 'आओ मनाएं बचपन' इस कार्यक्रम की मुख्य रूपरेखा थी। इस कार्यक्रम में यह बताया गया कि किस प्रकार इस संयुक्त फोरम की सहायता से अनेक बच्चों और उनके परिवारों को लाभ पहुँचा है। इस प्रोजेक्ट का प्रमुख उद्देश्य है "एक प्रभावकारी मॉडल तैयार करना जिसके द्वारा देश के गृह उद्योग सेक्टर में बाल मज़दूरी प्रथा को निर्मूल किया जा सके।" इस अधिवेशन में देश भर से 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में इस क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं जैसे वेतन, सामाजिक सुरक्षा, जनता का योगदान, सप्लाई चेन प्रबंधन, जागरूकता, शिक्षा आदि पर विस्तृत चर्चा द्वारा कार्य प्रणाली तैयार की गई।

महात्मा गांधी और धर्म : विचार गोष्ठी

समिति द्वारा 21 जनवरी 2015 को गांधी दर्शन में वरिष्ठ गांधीजनों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, विभिन्न धर्मगुरूओं तथा विद्यार्थियों की

सुश्री मणिमाला, श्री मल्लिकार्जुन आइथा के साथ दीप प्रज्जवलित करती हुई।

एक विशेष विचार गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें महात्मा गांधी के सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत पर विशद चर्चा हुई।

सभी वक्ताओं ने यह महसूस किया स्वार्थी तत्वों द्वारा धर्म का

बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुति का मुख्य आकर्षण थी।

दुरुपयोग होता है और इसे रोकना होगा ताकि धार्मिक सद्भावना बनी रहे। सभी प्रतिभागियों ने महात्मा गांधी के अनुसार धर्म की व्याख्या तथा उसके व्यावहारिक प्रयोग को सर्वथा उचित मानते हुए स्वीकार किया कि धार्मिक समानता को गांधी जी ने नैतिक कार्यों का स्वरूप दिया।

इस एकदिवसीय कार्यक्रम में मानवता के संरक्षण के लिये धर्म का सदुपयोग किस प्रकार हो इस पर भी विचार मन्थन हुआ। इस कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता थे डॉ. वाई. पी. आनन्द, श्री लक्ष्मीदास, डॉ. शिवशक्ति नाथ बख़्शी, प्रो. अमृत कौर बसरा, डॉ. निशा त्यागी, डॉ. ए. के. मर्चेन्ट, श्री शिवकुमार मिश्रा, डॉ. एम. डी. टॉमस, डॉ. फरीदा ख़ानम आदि। दिल्ली विश्वविद्यालय तथा जामिया मिलिया इस्लामिया के विद्यार्थियों ने भी विचार गोष्ठी में भाग लिया।

अपने मुख्य संबोधन में श्री लक्ष्मीदास ने कहा कि महात्मा गांधी के दिये हुए सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत में ही भारत की मूल आत्मा निहित है।

डॉ. शिवशक्ति नाथ ने कहा कि सर्वधर्म समभाव समन्वय, अहिंसा और शान्ति पर आधारित है।

प्रो. अमृत कौर बसरा ने बताया कि किस प्रकार महात्मा गांधी प्रार्थना को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानते थे। उनका धर्म मानवता और

(बांए): श्री लक्ष्मी दास, सचिव, हरिजन सेवक संध, सभा को सम्बोधित करते हुये (दांए)
तथा अन्य वक्ता एवं प्रतिभागी तन्मयता से सुनते हुये।

अहिंसा के पालन का धर्म था।

डॉ. ए. के. मर्चेन्ट, बहाई प्रतिनिधि ने कहा कि गांधी जी स्वाधीनता संग्राम तथा देश की गरीब जनता के उद्धार, इन दोनों बातों को समर्पित थे और इसीलिये बहुल धर्मी देश में वे चाहते थे कि धर्म की व्याख्या और आचरण सहज सरल ही हो।

डॉ. एम. डी. थॉमस ने ईसाई धर्म तथा सभी धर्मों की समानता का ज़िक्र करते हुए कहा कि सरकार को धर्मों सम्प्रदायों को समान अवसर देने चाहिये।

श्रीमती फरीदा ख़ानम ने इस्लाम की व्याख्या करने हुए कहा कि हमारे अलग रास्ते हो सकते हैं मगर मंज़िल एक ही है। अगर हम परिवार में साथ मिलकर रह सकते हैं तो देश में क्यों नहीं रह सकते। आज वैश्वीकरण ने दुनिया में सभी को नज़दीक कर दिया है। धर्म तो सदा हमें मिलजुलकर रहना सिखाता है, यही सीख हमें गांधी जी ने भी दी है। हमारे व्यक्तित्व के विकास में प्रत्येक धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने सभी धर्मों की समानता पर ज़ोर देते हुए कहा कि इन सब रास्तों से होकर ही हम अपने रचयिता तक पहुँचते हैं।

मानवता के पास अहिंसा सबसे बड़ी ताकत है। मानव की बुद्धि से तैयार विनाश के सबसे शक्तिशाली हथियार से भी ताकतवर अहिंसा है।

— महात्मा गांधी

हस्तशिल्प और शिक्षा के समन्वय पर कार्यशाला

समिति द्वारा इस विषय पर 16 से 19 जनवरी, 2015 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सहयोगी संस्थाएँ थीं नई तालीम समिति, सेवाग्राम तथा मांझीहीरा राष्ट्रीय नई तालीम संस्थान, पश्चिम बंगाल। इस कार्यशाला को एम. एन. बी. ई. आई. के परिसर में संचालित किया गया जिसमें छः विभिन्न राज्यों के 60 शिक्षकों, शिक्षाविदों ने भाग लिया। यह राज्य थे—असम, गुजरात, झारखण्ड, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल। इस कार्यशाला में एम. एन. बी. ई. आई. विद्यालय तथा प्राइमरी टीचर्स

कार्यशाला के दौरान विभिन्न सामाजिक वर्गों से आई महिला प्रतिभागी सामूहिक कार्य में हिस्सा लेती हुई।

ट्रेनिंग संस्थान के तीस शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। स्थानीय संसाधनों से हस्तशिल्प तैयार करने वाले कारीगरों ने भी इसमें भाग लिया।

नई तालीम समिति के अध्यक्ष डॉ. सुगन बराठ ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। इस अवसर पर भूतपूर्व सांसद श्री शिरीष चौधरी मुख्य अतिथि थे। एम. एन. बी. ई. आई. के संस्थापक श्री चित्रभूषण दासगुप्त तथा कार्यकारी सचिव श्री प्रसाद दास गुप्त ने भी इस अवसर पर अपने वक्तव्य दिये।

सभी वक्ताओं ने मौजूदा शिक्षा पद्धति में बदलाव की आवश्यकता पर ज़ोर दिया ताकि वह चरित्र निर्माण में सहायक हो सके। महात्मा गांधी का यह मानना था कि अगर हस्तशिल्प के माध्यम से बच्चों को शिक्षण दिया जाए तो उनकी रचनात्मकता का विकास होता है।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में प्रतिभागियों को आठ समूहों में बाँटा गया जो विभिन्न हस्तशिल्पों पर आधारित थे। यह समूह थे (1) कुम्भकारी (2) धातु शिल्प कर्मकार (3) काष्ठकार (4) बाटिक (5) बाँस का काम-1 (6) बाँस का काम-2(महिला) (7) चटाई बुनाई (कालिन्दी, डोम) (संथाल) तथा (8) घास का काम (शबर)।

इस कार्यशाला में अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा नई तालीम विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया। इनमें प्रमुख थे श्री समर बागची, बिड़ला साइन्स म्यूज़ियम के पूर्व निदेशक, डॉ. स्वपन सेन, श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव, श्री सौम्यनाथ मल्लिक, श्री काजल सेन, श्री शान्तनु दत्त, श्री अमिय चौधरी तथा अन्य।

तीसरे सत्र में सभी समूहों ने अपने अनुभव बाँटे तथा बताया कि किस प्रकार विद्यालय के पाठ्यक्रम में हस्तशिल्प का समावेश किया जाना चाहिये।

इस कार्यशाला के समापन सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत लोकशैली के कार्यक्रमों ने सभी को सम्मोहित कर दिया।

शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती। वह तो अदम्य आत्मशक्ति से आती है।

— महात्मा गांधी

गांधी जी के सिद्धांत दर्शन पर परिचर्चा

समिति द्वारा 16 फरवरी 2015 को 'गांधी दर्शन तथा वर्तमान मुद्दे' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। इसका आयोजन अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश में हुआ।

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रमेश देव ने कहा कि बापू आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितना अपने समय में थे। उनके विचारों पर अमल करने से दुनिया में शान्ति, प्रेम और सद्‌भावना कायम रहेगी। उन्होंने पाकिस्तान में स्कूली बच्चों की निर्मम हत्या की निन्दा की तथा पेरिस में 15 मीडिया कर्मियों की हत्या को आज हम सबके सामने सबसे बड़ी चुनौती माना।

उद्‌घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. पवन कुमार शर्मा ने यह स्पष्ट किया कि गांधी जी आधुनिकता के विरोधी नहीं थे, बल्कि उन्होंने तो भारतीय संस्कृति की परम्परा और आधुनिकता में संतुलन तैयार करना चाहा था।

इस परिचर्चा में अन्य वक्ता थे श्री राजीव रंजन गिरि, डॉ. कन्हैया लाल त्रिपाठी, डॉ. विवेकानन्द उपाध्यक्ष, डॉ. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय से जुड़े महाविद्यालय के विद्यार्थी तथा शिक्षक वृन्द।

महात्मा गांधी के विविध आयाम-संगोष्ठी

समिति द्वारा 'तमसो मा ज्योतिर्गमय फाउन्डेशन' बलरामपुर के सहयोग से 3 फरवरी 2015 को एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय के अन्तर्गत महारानी लाल कुमारी महाविद्यालय में किया गया। इस संगोष्ठी का उद्‌घाटन देवीचटल मंडल के कमिश्नर श्री रवि प्रकाश अरोड़ा तथा महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. अवधेश कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर क्षेत्र की विधायक सुश्री इन्द्राणी वर्मा भी उपस्थित थीं। इस संगोष्ठी में लगभग 200 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

सभी वक्ताओं ने कहा कि एक बेहतर विश्व के लिये महात्मा गांधी का जीवन ही मानवता को प्रकाश देता है, राह दिखाता है। उन्होंने हमें सामाजिक और राजनैतिक बदलाव द्वारा मानवता की सेवा करना सिखाया।

संगोष्ठी में सभी एकमत थे कि आज संकटपूर्ण विश्व के सामने महात्मा गांधी के बहुआयामी जीवन दर्शन में वह राह दिखती है जो शान्ति और अहिंसक समाज देश और विश्व रचना में सहायक है।

> **भारत भोगभूमि नहीं है; वह तो मूलतः कर्मभूमि है।**
>
> **— महात्मा गांधी**

गंगा बचाओ आंदोलन

गंगा हिमालय संरक्षण के लिये गांधीवादी अहिंसक आंदोलन-विचार गोष्ठी

महात्मा गांधी के ऐतिहासिक दांडी मार्च की 85वीं जयन्ती के अवसर पर समिति ने 'गंगा तथा हिमालय बचाओ' विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित की। इसका आयोजन 12 मार्च 2015 को गांधी दर्शन में हुआ। इस में 'मोक्षदा पर्यावरण एवं वन सुरक्षा समिति' तथा 'गंगा बचाओ' आंदोलन के कार्यकर्त्ता भी जुड़े थे। अनेक कार्यकर्ता जो पर्यावरण संरक्षण से जुड़े हैं, वैज्ञानिक जो नदी,

माननीय सुश्री उमा भारतीजी, केन्द्रीय मंत्री, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा नदी उत्थान, का कार्यक्रम में सम्भाषण देते हुये एवं सभी प्रतिनिधि।

चित्र में (बांए से दांए): *गांधी दर्शन में 'गंगा बचाओं आन्दोलन' पर्चसंवाद में वक्ता।*

बांध के कामों से जुड़े है तथा मीडिया और समाज के विविध क्षेत्रों से संबंधित लोगों ने भाग लिया।

श्रीमती रमा राउता, एन.जी. आर. बी. ए. की विशेषज्ञ सदस्य तथा 'गंगा बचाओ आंदोलन' की संयोजिका ने विचार गोष्ठी में कहा कि यह आंदोलन संपूर्ण रूप से गांधीवादी तथा अहिंसक है और गंगा तथा हिमालय और संपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों तथा वन्य जीवन के संरक्षण को समर्पित है।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि सुश्री उमा भारती जी ने किया जो जल संसाधन, नदी विकास की माननीय मंत्री है।

सुश्री भारती ने कहा कि धर्मगुरूओं को भी जनता से अपील करनी चाहिये कि वे हमारी पावन नदियों को स्वच्छ रखें।

उन्होंने कहा कि धार्मिक प्रवचनों में उपस्थित हज़ारों की भीड़ पर उनका प्रभावशाली असर होता है अत: यह अपील उन्हें अवश्य करनी चाहिये।

> प्रार्थना सुबह की चाभी और शाम की कुण्डी है।
>
> — महात्मा गांधी

इस कार्यक्रम में भारतीय तकनीकी संस्थान, चिन्मय मिशन, अहिंसा विश्व भारती, अखिल भारत इमाम संगठन, इस्कॉन, आर्यबिशप हाउस, सी.एस. आई. आर., मोक्षदा, तथा अन्य अनेक संस्थाओं के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सुझाव

बैठक में कुछ सुझाव सामने आए जो सुश्री उमा भारती जी को प्रस्तुत किये गए:

1. गंगा संवैधानिक रूप से हमारी राष्ट्रीय नदी घोषित की जानी चाहिए तथा इसकी रक्षा एवं सम्मान, राष्ट्र-हवन तथा राष्ट्रगान की तरह ही की जानी चाहिये।
2. नदियों में नालों का पानी तथा कूड़ा-कड़कट न डाला जाए तथा उचित शुद्धिकरण द्वारा पानी की गुणवत्ता बनाई रखी जाए।
3. जैविक कृषि उपायों द्वारा पर्यावरण संसाधनों की सुरक्षा के समुचित उपाय सुनिश्चित किये जाएं।

4. उत्तराखण्ड के भूकम्प क्षेत्र को विशेष सुरक्षा उपाय प्रदान की जाए तथा वहां की हरियाली तथा नदियों को सुरक्षित रखा जाए।

5. गंगा के किनारों पर 200–300 मीटर के घेरे के अन्दर कोई निर्माण कार्य आदि न किया जाए ताकि बाढ़ की स्थिति न आ सके।

6. नदी के अधिकारों की रक्षा के कानून बनाकर लागू किये जाए तथा नदी अदालतों द्वारा नदियों के प्रति किये गए अपराधों की सज़ा दी जाए।

7. 'द नेशनल गंगा रिवर बेसिन ऑथोरिटी' (NGRBA) को हमारी राष्ट्रीय नदी की सुरक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी वहन करनी होगी और इसके लिये कारगर उपाय अपनाने होंगे।

इस बैठक में सभी ने तय किया कि मिलकर अपनी प्राकृतिक संपदा तथा धरोहर की रक्षा करेंगे ताकि देश का पर्यावरण सुरक्षित रहे।

अहिंसा के लिये दोहरी निष्ठा चाहिये, ईश्वर में और मानवता में।

— महात्मा गांधी

तृतीय गांधी साहित्य समारोह का आयोजन 16–24 दिसम्बर, 2014

समिति ने विभिन्न प्रकाशकों को आमंत्रित करके 16–24 दिसम्बर, 2014 से गांधी स्मृति में नौ दिवसीय गांधी साहित्य महोत्सव का आयोजन किया। भाग लेने वाले प्रकाशकों में ऑरिएंट पेपरबैक्स, यूनिवर्सल प्रकाशक, बच्चों की बुक ट्रस्ट, सस्ता साहित्य मंडल, भारतीय ज्ञानपीठ, महावीर प्रकाशन, प्रकाशन विभाग, हिन्द पॉकेट बुक्स, नियोगी बुक्स आदि शामिल थे।

प्रो. तलत अहमद, कुलपति, जामिया मिलिया इस्लामिया, डॉ. साधना राउत, अतिरिक्त महानिदेशक प्रभारी, प्रकाशन विभाग और न्यायमूर्ति एल. नारायणस्वामी ने गांधी स्मृति में 16 दिसम्बर, 2014 को साहित्य उत्सव का उद्घाटन किया।

उद्घाटन कार्यक्रम में भी विशिष्ट अतिथियों द्वारा समिति के कुछ प्रकाशनों का विमोचन हुआ। इन पुस्तकों में शामिल है: डॉ

चित्र में (ऊपर से नीचे): *तृतीय गांधी साहित्योत्सव के उद्घाटन समारोह के कुछ क्षण।*

चित्र में (ऊपर से नीचे):
श्री श्रीधर और उनके सहयोगियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति।
- *'सिर्फएक आवाज़' पुस्तक का विमोचन।*
- *प्रख्यात पर्याविद् सुश्री मेघा पाटकर परिचर्चा की अगुआई करती हुई।*

सच्चिदानन्द सिन्हा द्वारा लिखित 'निहत्था पैगम्बर' तथा अंग्रेजी अनुवाद 'The Unarmed Prophet' तथा मोहनदास करमचन्द गांधी के जीवन पर कहानी किताबों का संकलन दोस्त मोहनदास।

नौ दिवसीय महोत्सव की गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं:

17 दिसम्बर, 2014 को 'हिन्द स्वराज' पर एक दिवसीय संवाद जिसमें प्रो. जॉन मूलाकुट्टू, संपादक ''गांधी मार्ग'' पत्रिका और डॉ वाई.पी. आनन्द, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली ने हिन्द स्वराज की सामयिकता पर चर्चा की। वक्ताओं ने स्पष्ट किया कि हिन्द स्वराज में गांधीजी ने देश तथा विश्व को समाज की एक ऐसी रूपरेखा दी जो सर्वोदय पर आधारित है। यह एक विचारधारा होने के साथ जीवन भी है।

प्रो. मूलाकुट्टू ने कहा कि महात्मा गांधी के विचार सदा ही समकालीन हैं। हिन्द स्वराज में दी गई सभ्यता की व्याख्या में वे कहते है कि हिंसा और दमन पर आधारित कोई भी व्यवस्था टिकी नही रह सकती। हिन्द स्वराज के विचार मध्यम वर्ग के लिये अत्यन्त प्रासंगिक है। शान्तिप्रिय विचारधारा को हिन्द स्वराज ने सदा ही प्रेरित किया है।

20 दिसम्बर, 2014 को आधुनिक लेखन में विकास तथा 'गांधी दर्शन का प्रभाव' विषय पर परिचर्चा हुई। प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री मेधा पाटकर ने इस की अगुवाई की जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों के लगभग 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभी ने विकास की प्रक्रिया में गांधीजी की सार्वभौमिक विचारधारा को शामिल करने की प्रक्रिया पर ज़ोर दिया।

उन्होंने गांधीजी को स्मरण करते हुए कहा—'महात्मा गांधी का यह कहना कितना बड़ा सच है कि ''प्रकृति के पास हमारी ज़रूरतों के लिये पर्याप्त है, हमारे लालच के लिये नहीं।''

आज के साथ हमें आने वाले कल के बारे में भी सोचना होगा।

साहित्योत्सव के दौरान समिति सहित अनेक प्रकाशनों ने अपनी पुस्तकों को प्रदर्शित किया।

आज हम सबकी बुनियादी ज़रूरतें पूरी करें, इसके साथ यह भी ध्यान में रखना पड़ेगा कि आगे भी यह संभव हो। अत: हवा-पानी व पर्यावरण को बचाना, वनों की हरियाली की रक्षा, खनिजों को संजोकर रखना यह सब ज़्यादा ज़रूरी है, क्योंकि इसके आधार पर ही लोगों की ज़रूरतें भविष्य में पूरी हो सकेंगी। मान लीजिए किसी गांव ने एक नदी या झरने का पानी मोड़कर सभी गांव वासियों की पानी की ज़रूरतों को पूरा कर लिया पर इसके कारण जंगल के पशु-पक्षियों को पानी नहीं मिला और वे मरने लगे तो क्या इसे उचित माना जाएगा? निश्चय ही नहीं। इसलिए मनुष्य को अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के साथ सभी अन्य जीवों की ज़रूरतों और उनकी भलाई पर ध्यान देना चाहिए।

1909 में जब हिन्द स्वराज लिखा गया तब ब्रिटिश सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया था। गांधीजी देशवासियों तथा विश्व को अपने सामाजिक विचारों से अवगत करवाना चाहते थे। गांधीजी चाहते थे कि स्वराज सर्वोदय और अन्त्योदय आधारित हो। देश और समाज को शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा सर्वांगीण विकास की ओर ले जाने का मंत्र है हिन्द स्वराज।

21 दिसम्बर, 2014 को 'भारतीय भाषाओं के लेखन पर महात्मा गांधी का प्रभाव' विषय पर विचार गोष्ठी हुई जिसमें विविध वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये। इनमें प्रमुख थे डॉ. सैयद मुमताज़ आलम रिज़्वी, 'हमारा समाज' के संपादक श्री आमिर सलीम ख़ान तथा श्री अंसार अली।

(बांए से दांए): विचार विमर्श एवं संवाद - नौ दिवसीय गांधी साहित्य उत्सव का हिस्सा थे जिसमें वयोवृद्ध गांधीवादी, लेखकों, कलाकारों इत्यादि ने भाग लिया।

आजकल कई स्तरों पर दोहराया जा रहा है कि हम विकास कर रहे हैं। अगर हम अपने रोजमर्रा जीवन पर नजर डालें तो लगता है सचमुच हमारी सहूलियतें बढ़ गई हैं। निश्चय ही यह विकास का लक्षण है। लेकिन विकास के साथ एक बड़ी विचित्र बात यह हो रही है कि सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक बातों का भी विकास हो रहा है। अब इसे भी हम अपने अनुभवों से आंके। क्या पहले हम इतना अकेले, परेशान या भयग्रस्त थे? दिक्कत यह है कि हम विकास को ठोस चीजों से ही आंकते है यानी रूपया-पैसा, सामान, सड़क, गाड़ी वगैरह। हमारे मन की चीजें चूंकि दिखती नहीं इसलिए हम उन्हें विकास का हिस्सा नहीं बनाते। आज आर्थिक विकास के साथ भ्रष्टाचार और दूसरे अपराधों ने भी अपना विकास कर लिया है। तो फिर इस विकास का हासिल क्या है? यही न कि एक समस्या दूर हुई तो उसकी जगह दूसरी आकर खड़ी हो गई। इसलिए हमें विकास की नई परिभाषा खोजनी होगी। विकास तभी माना जाए जब मनुष्यता को उसकी समस्याओं से मुक्ति मिले।

नुक्कड़ नाटक 'पैग़ाम' की प्रस्तुति भी उत्सव का विशेष आर्कषण रहीं। अनुराग ठाकुर, रिचा तिवारी द्वारा अभिनीत इस नाटक में समाज में होने वाले अन्याय तथा गांधीजी के

1909 में जब हिन्द स्वराज लिखा गया तब ब्रिटिश सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया था। गांधीजी देशवासियों तथा विश्व को अपने सामाजिक विचारों से अवगत करवाना चाहते थे। गांधीजी चाहते थे कि स्वराज सर्वोदय और अन्त्योदय आधारित हो। देश और समाज को शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा सर्वांगीण विकास की ओर ले जाने का मंत्र है हिन्द स्वराज।

सन वैली इन्टरनेशनल स्कूल के छात्र (नीचे) 'विराग' थियेटर ग्रुप के सदस्य 'उत्सव' में भाग लेते हुये।

सन्देशों को भुला दिये जाने पर कटाक्ष था।

22 दिसम्बर, 2014 को राजधानी तथा निकटवर्ती क्षेत्रों के विद्यालयों के लगभग 150 विद्यार्थीयों ने गांधीजी के सिखाए नैतिक मूल्यों पर लघु कहानी लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया।

सन वैली स्कूल के बच्चों ने 'स्वच्छ भारत अभियान' पर नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संमापन समारोह 24 दिसम्बर 2014 को आयोजित हुआ जिसमें समिति की निदेशक ने सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया।

"ताक़त दो प्रकार की होती है। एक ताक़त तो सज़ा के डर से जुड़ी है और दूसरी प्रेमपूर्ण कार्यों से। जो ताक़त प्रेम से जुड़ी है वह सज़ा के डर से जुड़ी ताक़त से हज़ार गुना असरकारी और स्थाई होती है।"

— महात्मा गांधी

देश-विदेश से आगंतुक 'उत्सव' में आये।

सर्वनाश का जो खतरा दुनिया के सिर पर झूल रहा है, उससे बचने का इसके सिवा दूसरा कोई मार्ग नहीं है कि अहिंसा की पद्धति को, उसमें समाये हुए सारे भव्य अर्थों के साथ, साहसपूर्वक और बिना किसी शर्त के स्वीकार कर लिया जाय।

— महात्मा गांधी

जेल में

तिहाड़ में समिति के विभिन्न कार्यक्रमों में एक महत्वपूर्ण कड़ी है तिहाड़ कारावास में विविध गतिविधियों द्वारा गांधीजी के जीवन दर्शन का प्रचार प्रसार।

कार्यशाला, स्वास्थ्य शिविर, रचनात्मक गतिविधियों द्वारा कारावास में बन्दियों के साथ समिति नियमित रूप से अनेक कार्यक्रम करती है। वर्ष 2014–15 में कुछ विशेष कार्यक्रम इस प्रकार है:

जेल में

■ नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर

तिहाड़ में समिति की संसाधन व्यक्ति डॉ मन्जू रानी अग्रवाल द्वारा समिति की तरफ से 22 अप्रैल, 2014 को तिहाड़ के जेल न. 5 में नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर आयोजित किया गया।

अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान के नेत्र चिकित्सा विभाग के सौजन्य तथा सहयोग से आयोजित इस शिविर से 224 कैदी लाभान्वित हुए।

> सत्य वचन की शक्ति वहां तक जाती है कि यह मनुष्य को स्वार्थ से परमार्थ में ले जाती है।
>
> — महात्मा गांधी

(ऊपर): *अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान के चिकित्सकों द्वारा नेत्र-जांच करते हुये।* (नीचे): *डॉ. विमला मेहरा (डी.जी., तिहाड़ जेल - दांये से द्वितीय) अन्य जेल अधिकारीगण, अ.भा.आ.वि.सं. के चिकित्सकगण तथा समिति की समन्वयक डॉ. मंजू अग्रवाल।*

(ऊपर): महात्मा गांधी का चित्र बनाते हुये एक तिहाड़ निवासी।
(नीचे): जेल अधिकारी जेल प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुये। साथ में समिति के सदस्य।

कैदियों की कलात्मक रुचियों को बढ़ावा देने के लिये समिति ने एक नई पहल करते हुए 'महात्मा गांधी – एक कलात्मक अभिव्यक्ति' कार्यक्रम आरम्भ किया।

इसका पहला कार्यक्रम जेल सं. 5 में 31 मई, 2014 को आयोजित हुआ जिसमें लगभग 50 कैदियों ने भाग लिया। इनमें से कुछ ने चित्रों में तथा कुछ ने लिखित विचारों द्वारा गांधीजी के जीवन दर्शन को अपने अनुसार बताया।

कुछ कैदियों ने 'शान्ति तथा अहिंसा', 'सत्याग्रह आन्दोलन' तथा 'खादी' पर गांधीजी के विचारों की चर्चा की। इस अवसर पर समिति के वरिष्ठ अधिकारी तथा जेल अधिकारी भी उपस्थित थे।

6 सितम्बर, 2014 को समिति द्वारा जेल नं. 6 में महिला कैदियों के लिये विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें भी समिति के अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

समिति द्वारा तिहाड़ में आयोजित नियमित कार्यक्रम इस प्रकार हैं:

- **तिहाड़ जेल नं. 4 में चिकित्सा सुविधाएं** – 272 का इलाज हुआ जिनमें 65 नए तथा 207 पुराने मरीज़ थे।

समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला तिहाड़ निवासियों साथ बातचीत करते हुये।

सी.जे.-5 के जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट श्री नवीन सक्सेना समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला का स्वागत करते हुये।

महिला सेल, तिहाड़ में भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
श्री वेदाभ्यास कुंडू तथा डॉ. मंजू अग्रवाल ने प्रमाण पत्र दिये।

- **सिलाई विभाग** – इस विभाग में आठ कैदी काम कर रहे हैं जिन्होंने मार्च तक लगभग 15,000 रुपये का काम किया है। इस राशि का 10 प्रतिशत कैदियों के कल्याण फंड में जमा कर दिया गया।

- **करघा विभाग** – जुलाई, 2013 में समिति की तरफ से जेल में करघा इकाई भी शुरू की गई जिसमें चार नाइजिरियाई तथा छः भारतीय कैदी नियमित रूप से काम कर रहे हैं।

- नियमित चरखा कताई, बुनाई तथा प्राकृतिक चिकित्सा कार्यक्रम भी जारी हैं।

चेरापल्ली जेल, हैदराबाद

गांधी विचार-दर्शन पर त्रैमासिक प्रमाण पत्र कोर्स पूर्ण

समिति ने आंध्र प्रदेश के 'गांधी किंग फाउन्डेशन' के सहयोग से हैदराबाद स्थित चेरापल्ली जेल में महात्मा गांधी के जीवन दर्शन पर आधारित तीन महीने के प्रमाण पत्र कोर्स का समापन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में 74 कैदियों को प्रमाण पत्र बाँटे गए। इस कार्यक्रम का आयोजन 17 अगस्त, 2014 को किया गया। सभी कैदियों को गांधीजी की आत्मकथा (तेलगु) बाँटी गई। इस अवसर पर समिति की निदेशक मणिमाला भी उपस्थित थीं। हैदराबाद के डिस्ट्रिक्ट कोर्ट जज इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

इस जेल में 120 कैदी हैं जो खेतीबाड़ी करते हैं तथा सब्ज़ियां, फल आदि उगाते हैं। इस जेल के बन्दियों की गतिविधियों पर एक वृतचित्र भी बनाया गया है। जिसमें गांधीजी के नैतिक मूल्यों का कैदियों पर प्रभाव भी दर्शाया गया है।

गांधी किंग फाउंडेशन के प्रबन्धक ट्रस्टी श्री जी.वी.वी. प्रसाद ने समिति की तरफसे कार्यक्रम का संचालन किया तथा कहा कि बन्दी जीवन में कुछ ऐसे हुनर सीखने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं जो आगे भविष्य में बन्दियों के काम आ सकते हैं। ''यह प्रशिक्षण उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक होगा तथा वे 'सर्वोदय' कार्यकर्ता बनकर देश तथा समाज को अपनी सेवाएं दे सकते हैं।

''एक बन्दी भूमैया जो चरवाहा था आज महात्मा गांधी तथा उनकी सीखों के बारे में आत्मविश्वास से बात करता है। रिहाई के बाद वह गांधी के विचारों का प्रचार प्रसार करना चाहता है।''

बन्दियों के साथ बातचीत में उन्होंने बताया कि इस पाठ्यक्रम में उन्होंने क्या सीखा तथा एक बन्दी ने बताया कि उन्होंने अपनी समझ से गांधीजी को कितना जाना;

- गांधीजी के 'एकादश व्रत' आत्म-समृद्धि में सहायक हैं।
- 18 सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम सामाजिक पुर्नरचना के लिये है।
- सत्याग्रह तथा अहिंसा आग्रह द्वारा लोग न्याय का सही रास्ता चुन सकते हैं।
- स्वदेशी और स्वराज द्वारा ही सामाजिक पुररूत्थान संभव है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारी पहचान

हिन्दी पखवाड़े के दौरान प्रदर्शित रचनात्मकता का प्रवाह

समिति ने अपने दोनों परिसरों – गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन में 16–30 सितम्बर, 2014 तक हिन्दी पखवाड़े में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। प्रतियोगिताओं के लिये निर्णायक मंडल में शामिल थे– श्री धर्मेन्द्र सुशांत और श्री राजीव रंजन गिरी। अक्तूबर 2014 में परिणामों की घोषणा हुई।

परिणाम निम्नलिखित है;

- **निबन्ध प्रतियोगिता – विषय: मेरी दृष्टि में गांधी जी (श्रेणी–1)**
  - प्रथम पुरस्कार : विजय कुमार
  - द्वितीय पुरस्कार: दिलीप कुमार
  - तृतीय पुरस्कार: धर्मराज
  - सांत्वना/प्रशंसा पुरस्कार: मंजीत और देशवीर सिंह
- **निबन्ध प्रतियोगिता – विषय: सत्य के पुजारी गांधीजी (श्रेणी–2)**
  - प्रथम पुरस्कार : राकेश शर्मा
  - द्वितीय पुरस्कार: कृष्ण
  - तृतीय पुरस्कार: नेहा अरोड़ा
  - सांत्वना/प्रशंसा पुरस्कार: मनीष और रीना मिश्रा
- **काव्य प्रतियोगिता (स्नातक)**
  - प्रथम पुरस्कार : श्याम डोरिया
  - द्वितीय पुरस्कार: उमा बाउड़ी
  - तृतीय पुरस्कार: राकेश शर्मा
  - सांत्वना/प्रशंसा पुरस्कार: रचना और पंकज शर्मा
- **काव्य प्रतियोगिता (बारहवीं तक)**
  - प्रथम पुरस्कार: विजय कुमार
  - द्वितीय पुरस्कार: रेणु
  - तृतीय पुरस्कार: धर्मराज
  - सांत्वना/प्रशंसा पुरस्कार: संदीप (1) और रीता कुमारी

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में आयोजित हिन्दी पखवाड़े के दौरान लिये गये कुछ चित्र।

पूर्वोत्तर में कार्यक्रम

मातृशक्ति कार्यक्रम का अनुवर्ती कार्यक्रम

बालिका शांति स्वयं सेवक समूह के लिये अभिविन्यास कार्यक्रम

7 मई, 2014 को हैंडिक गर्ल्स कॉलेज की बालिका शांति स्वयंसेवक समूह के लिये एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह अभिविन्यास कार्यक्रम सुरभि शिशु पंचायत के समन्यवयकों– श्री रिहान अली और सुश्री प्रियंका छेत्री द्वारा आयोजित किया गया था। यह अभिविन्यास कार्यक्रम समिति द्वारा 6–8 मार्च, 2014 को आयोजित कार्यक्रम 'शांति निर्माण में महिलाओं की भूमिका' का अनुवर्ती कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम का मुख्य फोकस था कि किस प्रकार हैंडिक कॉलेज की छात्राएं समाज में स्वयंसेवक को भूमिका निभा सकती हैं।

श्री रिहान अली तथा उनकी टीम क्षेत्रीय कार्य करती हुई।

रिहान अली ने सर्व प्रथम छात्राओं को महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने इस बारे में भी विस्तार से चर्चा की कि एक अच्छे स्वयंसेवक के लक्षण क्या होने चाहिये तथा वह किस प्रकार से सामुदायिक संरचना में योगदान दे सकते हैं। सुश्री चेतना शर्मा, बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर की बालिका शांति स्वयंसेवक समूह ने गरीब बच्चों को पढ़ाने, स्वास्थ्य, स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने और एक स्वच्छ वातावरण बनाये रखने में 'समूह' द्वारा शुरू किए जाने वाले कुछ कार्यक्रमों पर चर्चा की। यह भी महसूस किया गया कि समिति द्वारा छात्राओं के स्वयंसेवक समूह बनाने की पहल का गुवाहाटी से बाहर और पूरे उत्तर–पूर्व में विस्तार किया जाना चाहिये। छात्राओं ने यह भी महसूस किया कि समाज की बेहतरी के लिये ठोस कार्य करने में उन्हें सक्षम बनाने के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम ज़रूरी है।

सुश्री प्रियंका छेत्री ने सुरभि शिशु पंचायत और अपने स्वयंसेवकों के अनुभवों को साझा करते हुये सामूहिक रहने, आपसी सम्मान और एक टीम के रूप में काम करने के महत्व को जानने की जरूरत को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि बालिका शांति स्वयंसेवक समूह सामाजिक सद्भावना तथा सामाजिक सरोकारों पर सामूहिक कार्यवाही को बढ़ावा देने में बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है।

हैंडिक गर्ल्स कॉलेज के डॉ नवज्योति दत्ता ने कहा कि बालिका स्वयंसेवक समूह शांति और अहिंसा के गांधीवादी सिद्धांत को आगे बढ़ाने में योगदान देने के लिये प्रशिक्षित किया जा सकता है।

एक आत्मनिर्भर बालिका स्वयंसेवक समूह के निर्माण की दिशा में ठोस कदम उठाने के उद्देश्य से 6 जुलाई, 2014 को गुवाहाटी के विभिन्न कॉलेजों तथा अन्य हितधारकों के बीच एक 'संवाद' स्थापित करने का निर्णय लिया गया। लघु संवाद तथा नेतृत्व विकास कार्यक्रम इस 'संवाद' के अनुवर्ती कार्यक्रम होंगे। यह 'संवाद' सरनिया आश्रम गुवाहाटी में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के तत्वाधान में आयोजित किया जायेगा।

नियमित गतिविधियां

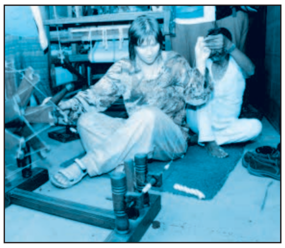

नियमित रूप से आयोजित होने वाले कार्यक्रम इस प्रकार हैं:

1. गांधी भजन और सांप्रदायिक सद्भाव पर गीतों का गायन।
2. चरखा कताई।
3. गांधी, स्वतन्त्रता आंदोलन और राष्ट्रीय नेताओं पर फिल्म शो।
4. गांधी स्मृति और गांधी दर्शन संग्रहालयों के स्टडी टूर के लिए स्कूलों के साथ कार्यक्रम।

अन्य नियमित कार्यक्रम इस प्रकार हैं

सृजन-गांधी स्मृति शिक्षण केन्द्र

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) द्वारा मान्यता प्राप्त छह व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के अलावा सृजन सिलाई, कढ़ाई, मिट्टी के बर्तन बनाने, कहानी कहना और रचनात्मक लेखन, संगीत जैसी अपनी नियमित रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। बीच में ही पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों और समाज के वंचित वर्ग को इन व्यवसायिक कार्यक्रमों का सबसे अधिक लाभ होता है।

समिति के नियमित कार्यक्रम हैं - गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति संग्रहालय में आगंतुकों को प्रदर्शनी दिखाते हुये। नियमित चर्खा कताई प्रदर्शन, बच्चों के लिये अभिविन्यास कार्यक्रम।

पुस्तक मेले

1. **दिल्ली पुस्तक मेला, 2014** – (23–31 अगस्त, 2014) – समन्वयक श्री सुशील कुमार शुक्ला, सुश्री रचना राठौर, सुश्री रीता कुमारी, श्री अरूण ताडे और सुश्री कल्पना अशोक।
2. **उत्तरी दिल्ली नगर निगम पुस्तक उत्सव,** (13–18 दिसम्बर, 2014) – समन्वयक श्री रमेश कुमार और श्री मनोज कुमार।
3. **महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय पुस्तक मेला, 2014 वर्धा** (28–31 दिसम्बर, 2014) – समन्वयक श्री अरूण ताडे और श्री रंग डब्बे।
4. **लखनऊ पुस्तक मेला, 2014** (02–11 जनवरी, 2015) – समन्वयक श्री रमेश कुमार और श्री मनीष।
5. **अलीगढ़ पुस्तक मेला, 2015** (09–20 फरवरी, 2015) – समन्वयक श्री अरूण ताडे और श्री उमेश कुमार।
6. **विश्व पुस्तक मेला, 2015** (14–22 फरवरी, 2015) – समन्वयक श्री मोहन, श्री रोहित, सुश्री रेणु, श्री रमेश, सुश्री रीता, सुश्री नम्रता और सुश्री इन्दू शरण।

(चित्र में): श्री रमेश और सुश्री नम्रता नई दिल्ली में आयोजित पुस्तक मेले में (इनसेट) पुस्तक मेले में लोग समिति के प्रकाशकों में रूचि दिखाते हुये।

पुस्तकालय एवं प्रलेखन

महात्मा गांधी को बेहतर तरीके से जानने और समझने में मदद करने वाली किताबों, फोटोग्राफ्स, फिल्म, दस्तावेज को संरक्षण करने के उद्देश्य के अनुरूप गांधी दर्शन लाइब्रेरी के पास गांधी से संबंधित जीवनी, संस्कृति, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्म, पुरातत्व, संदर्भ पुस्तकें जिनमें विश्व एटलस, इनसायक्लोपीडिया और शब्दकोश समेत करीब 15000 किताबें हैं। बच्चों के लिए एक खास खंड है। यहां पर करीब 50 पत्र और पत्रिकाएं नियमित रूप से आती हैं और यह अध्ययन करने वालों शोधार्थियों और विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप है। हर साल 500 नई किताबें लाइब्रेरी में आती हैं। हर साल लाइब्रेरी हिन्दी और अंग्रेजी में तकरीबन 65000 रु. की किताबों की खरीद करती है। दस्तावेजीकरण केन्द्र पर गांधीजी, महिलाओं, बच्चों, युवाओं, महिलाओं के खिलाफ अपराध, पर्यावरण, भारत-पाक संबंध, सांप्रदायिकता, अंतरराष्ट्रीय संबंध जैसे विभिन्न मसलों पर अखवारों में छपी खबरों की कतरनों की फाइल बनाई जाती हैं। दस्तावेजीकरण केन्द्र को समृद्ध बनाने के लिए इस साल कई नए विषय भी जोड़े गए हैं।

गांधी दर्शन पुस्तकालय का एक दृश्य

दस्तावेजीकरण का यह काम सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें समसामयिक मुद्दे, इतिहास, अर्थशास्त्र, शिक्षा, महिलाओं और बच्चों से जुड़े मुद्दे, युवा नेतृत्व, मानवीय रूचि, पर्यावरण, गांधीवादी विचार, पुस्तक समीक्षा, संदर्भ सामग्री, स्वास्थ्य और स्वच्छता और राष्ट्र और समाज से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चीजें जुटाकर रखी जाती हैं।

अंतिम जन
वार्षिक रिपोर्ट 2013-2014
Annual Report 2013 - 2014
मोनिया खेल-खेल में
MONIYA
Text • Hemant
Illustrations • Irfan
Translation • Amisha
दोस्त मोहनदास
कथा : हेमन्त
चित्र : सीताराम
मोनिया
कथा • हेमन्त
चित्र • इरफान
सत्याग्रही मोहनदास
THE UNARMED PROPHET
Sachchidanand Sinha
पुरुषार्थ, त्याग और स्वराज
मो.क. गांधी
सम्पादन डॉ. राजीव रंजन गिरि
मूल्य : 50 रु.
मलयालम में गांधी
सिर्फ़ एक आवाज़
प्रेमचन्द रचित दलित-जीवन की कहानियाँ
सम्पादन डॉ. राजीव रंजन गिरि
महात्मा गांधी की शिक्षा-दृष्टि
नई तालीम
डॉ. राकेश रफ़ीक
मूल्य : 60 रु.

प्रकाशन

- अंतिम जन (गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की मासिक समाचार पत्रिका।

कालानुक्रमिक क्रम में अब तक प्रकाशित अंकः

- ❖ वर्ष 4, अंक 1, जनवरी, 2015
- ❖ वर्ष 3, अंक 12, दिसम्बर, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 11, नवम्बर, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 10, अक्टूबर, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 09, सितम्बर, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 08, अगस्त, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 07, जुलाई, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 06, जून, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 05, मई, 2014
- ❖ वर्ष 3, अंक 04, अप्रैल, 2014

- अंग्रेज़ी और हिन्दी में वार्षिक रिपोर्ट 2013–2014
- मोनिया और उका का मोनिया अंग्रेज़ी में (मोहनदास करमचंद गांधी के बचपन पर किताब)
- उका का मोनिया श्रंखला में द्वितीय – हिन्दी पुर्नमुद्रित
- मोनिया खेल खेल में – श्रंखला में तृतीय – हिन्दी पुर्नमुद्रित
- दोस्त मोहनदास – श्रृंखला में 4वें – हिन्दी पुर्नमुद्रित
- सत्याग्रही मोहनदास – श्रृंखला में 5वें – हिन्दी पुर्नमुद्रित
  - ❖ मोनिया – **हिन्दी, उर्दू, मराठी, असमिया, मलयालम, तमिल, गुजराती** में पुर्नमुद्रित
  - ❖ मोनिया – भोजपुरी और पंजाबी (2014) श्रृंखला में मुद्रित
- सच्चिदानन्द द्वारा लिखित 'निहत्था पैगम्बर, सिन्हा (प्रथम प्रकाशित: 2014) – अंग्रेजी और हिन्दी
- महात्मा गांधी की शिक्षा – दृष्टि – नई तालिम; डॉ राकेश रफीक (31 मार्च, 2014)
- सिर्फ एक आवाज़ – डॉ राजीव रंजन द्वारा संपादित दलितों के जीवन पर लघु कहानियों का संग्रह (2014) – हिन्दी
- मलयालम मे गांधी – प्रो. एन. मोहनन और प्रो. कश्मीर वेन्ज़ा (2014)
- पुरुषार्थ, त्याग और स्वराज – डॉ राजीव रंजन गिरि, 2014 में पुर्नमुद्रित

विशिष्ट आगंतुक

माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष डॉ महेश शर्मा का गांधी स्मृति का दौरा

(ऊपर): *डॉ. महेश शर्मा, उपाध्यक्ष ग.स.द.स., एवं केन्द्रीय संस्कृति मंत्री गांधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।*
(नीचे): *ग.स.द.स. के कर्मचारियों द्वारा उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा का स्वागत करते हुए।*

समिति ने माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष डा. महेश शर्मा का 20 जनवरी, 2015 को समिति में स्वागत किया। माननीय मंत्रीजी ने शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी और गांधी स्मृति संग्रहालय का दौरा किया तथा समिति के कर्मचारियों से बातचीत की। समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला ने समिति की संरचना, लक्ष्य, उद्देश्य और कामकाज के बारे में माननीय मंत्रीजी को बताया। समिति के सदस्य सचिव तथा संस्कृति मंत्रालय में संयुक्त सचिव – सुश्री श्रेया गुहा, संस्कृति मंत्रालय में निदेशक – सुश्री वन्दना शर्मा तथा मंत्रालय से अन्य सदस्य भी मौजूद थे।

फिलिप हैमंड का गांधी दर्शन संग्रहालय का दौरा

ऐतिहासिक दांडी मार्च की 85वीं वर्षगांठ के अवसर पर 12 मार्च, 2015 को ब्रिटिश विदेश सचिव श्री फिलिप हैमंड, जो कि उस समय भारत की राजकीय यात्रा पर थे, ने गांधी दर्शन स्थित प्रदर्शनी मंडप 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' को देखा और महात्मा गांधी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। भारत के ब्रिटिश हाई कमिश्नर–श्री जेम्स नविन भी उनके साथ उपस्थित थे।

लंदन में संसद स्क्वायर के पास महात्मा गांधी की मूर्ति के अनावरण के दो दिन पहले अपनी गांधी दर्शन की यात्रा के महत्व के बारे में बात करते हुए फिलिप हैमंड ने कहा ''गांधीजी ने जो प्रेरणा केवल भारत को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को दी, यह प्रतिमा उसके लिये एक श्रद्धांजलि स्वरूप होगी।'' और भी उन्होंने कहा

श्री फिलिप हैमण्ड गांधी दर्शन में।

''मुझे खुशी है कि भारत को मेरी पहली यात्रा विदेश सचिव के रूप में हो रही है। भारत के साथ ब्रिटेन की साझेदारी दोनों देशों की समृद्धि और सुरक्षा के लिये अपरिहार्य है।''

इसके पहले, गांधी दर्शन संग्रहालय, जहाँ पर वह नाव जिसके द्वारा महात्मा गांधी ने दांडी मार्च के दौरान माही नदी पार की तथा उनके 79 वर्ष की जीवन के दुर्लभ तथा अनमोल चित्र संग्रहीत हैं, की अपनी यात्रा के संस्मरणों को लिखा– यह सर्वथा उपयुक्त है कि वह इंसान जिसने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थापना की वह दुनिया की सबसे पुरानी संसद को देखे।''

''हमारी साझेदारी हमारे एक दूसरे से जुड़े हुये इतिहास, संस्कृति और मूल्यों में निहित है। इस शनिवार लंदन के पार्लियामेन्ट स्क्वायर में महात्मा गांधी की लंबे समय से प्रतीक्षित मूर्ति दोनों लोकतंत्रों के लोगों को नागरिक अधिकारों और अहिंसा की उनकी शिक्षा के प्रति अग्रसर करेगी।

ब्रिटेन के विदेश मंत्री और चांसलर का गांधी स्मृति का दौरा

माननीय विलियम हेग, सांसद विदेश मंत्री और राष्ट्र मंडल मामलों के सचिव और श्री जार्ज ओसबोर्न, सांसद, यूनाइटेड किंग्डम के राजकोष के चांसलर 8 जुलाई, 2014 को गांधी स्मृति आये तथा शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी।

महामहिम श्री जेम्स डेविड बीवन, भारत में ब्रिटिश उच्चायुक्त, श्री जूलियन इवांस (उप उच्चायुक्त), लार्ड मेघनाथ देसाई तथा ब्रिटिश उच्चायोग और विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधि भी साथ थे।

समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला ने प्रतिनिधि मंडल का स्वागत किया। इस मौके पर समिति के अन्य अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू (कार्यक्रम अधिकारी), डा. सीता ओझा (एकेडेमिक एसोसिएट), डा. शैलजा गुल्लापल्ली, रिसर्च एसोसिएट इत्यादि भी उपस्थित थे।

माननीय श्री विलियम हेग, संसद सदस्य, विदेश तथा कॉमनवेल्थ राज्य सचिव, बलिदान स्थल पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते हुये। साथ में समिति की निदेशक सुश्री मणिमाला भी हैं।

वर्ष के दौरान गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में आने वाले अन्य विशिष्ट आगन्तुक

- 7 सितम्बर, 2014 को जर्मन विदेश मंत्री, श्री फ्रैंक वाल्टर स्टीन्मीयर गांधी स्मृति संग्रहालय आये। उनके साथ भारत में जर्मनी के राजदूत श्री माइकल स्टेनर के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल भी आया था।
- 10 सितम्बर, 2014 को डा. एस.पी. वर्गीज़, प्रदेश अध्यक्ष, जनवादी अधिकारों के लिये राष्ट्रीय फोरम (केरल) गांधी स्मृति संग्रहालय आये।
- 12 सितम्बर, 2014 को श्री सेनज़ेनी ज़ोकवाना, कृषि मत्स्य पालन और वानिकी मंत्री, दक्षिण अफ्रीका दूतावास से एक दस सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल के साथ गांधी स्मृति संग्रहालय देखने आये।
- सुश्री कैथलीन स्टीफंस, संयुक्त राज्य अमेरिका के अंतरिम राजदूत ने 20 सितम्बर, 2014 को संग्रहालय का दौरा किया।
- 16 अक्टूबर, 2014 को माननीय श्री साजिद जाविद, सांसद, राज्य सचिव, संस्कृति, मीडिया और खेल, ने अन्य अधिकारियों के साथ गाधीं स्मृति संग्रहालय को देखा।

आगंतुकों की डायरी से...

It is a privilege to visit this place and to understand more of the life of Gandhi – two days before we will unveil a statue of him in Parliament Square, London. That statue will be a tribute to the inspiration Gandhi provided, not only to India, but to the people of the world. It is fitting that the man who founded the world's largest democracy, should look across the square at the world's oldest parliament.

Thank you for preserving this place.

[signature]

UK Foreign Secretary,
London

12. March 2015

गांधी स्मृति में आकर सचमुच गांधी जी की अहिंसा और नैतिकता की सोच में डूब जाता है। वास्तव में गांधी जी की स्मृति वर्तमान में अधिक प्रासंगिक बन चुकी है। सिर्फ गांधी जी की स्मृति वाला रास्ता ही देश को एक रखने में सहायक हो सकता है। मुझे खुद को बहुत अच्छा लगा।

धन्यवाद,

[signature]
19/1/2014
M.L.A.
9412223750
Garh Mukteshwar
U.P

A most meaningful and insightful explanation of the life and legacy of Mahatma Gandhi. I've indeed learnt much from this short tour. Thank you very much.

[signature]
Ng Eng Hen
4/6/14

Thank you for the opportunity to visit this wonderful place. We remember Ghandiji as a great man giving much joy to mankind.

Rodzali [signature]
Malaysia 26/11/13

(Gen Tan Sri Dato Sri Rodzali Bin Daud
Chief of Air Force Royal Malaysian Air Force)

PAZ EN LA TIERRA, Y A LOS HOMBRES DE BUENA VOLUNTAD. M. K. GANDHY.
UN MUNDO MEJOR PARA TODOS.
MILTON A. MAGAÑA HERRERA, EL SALVADOR
10 / XII / 2014
[signature]

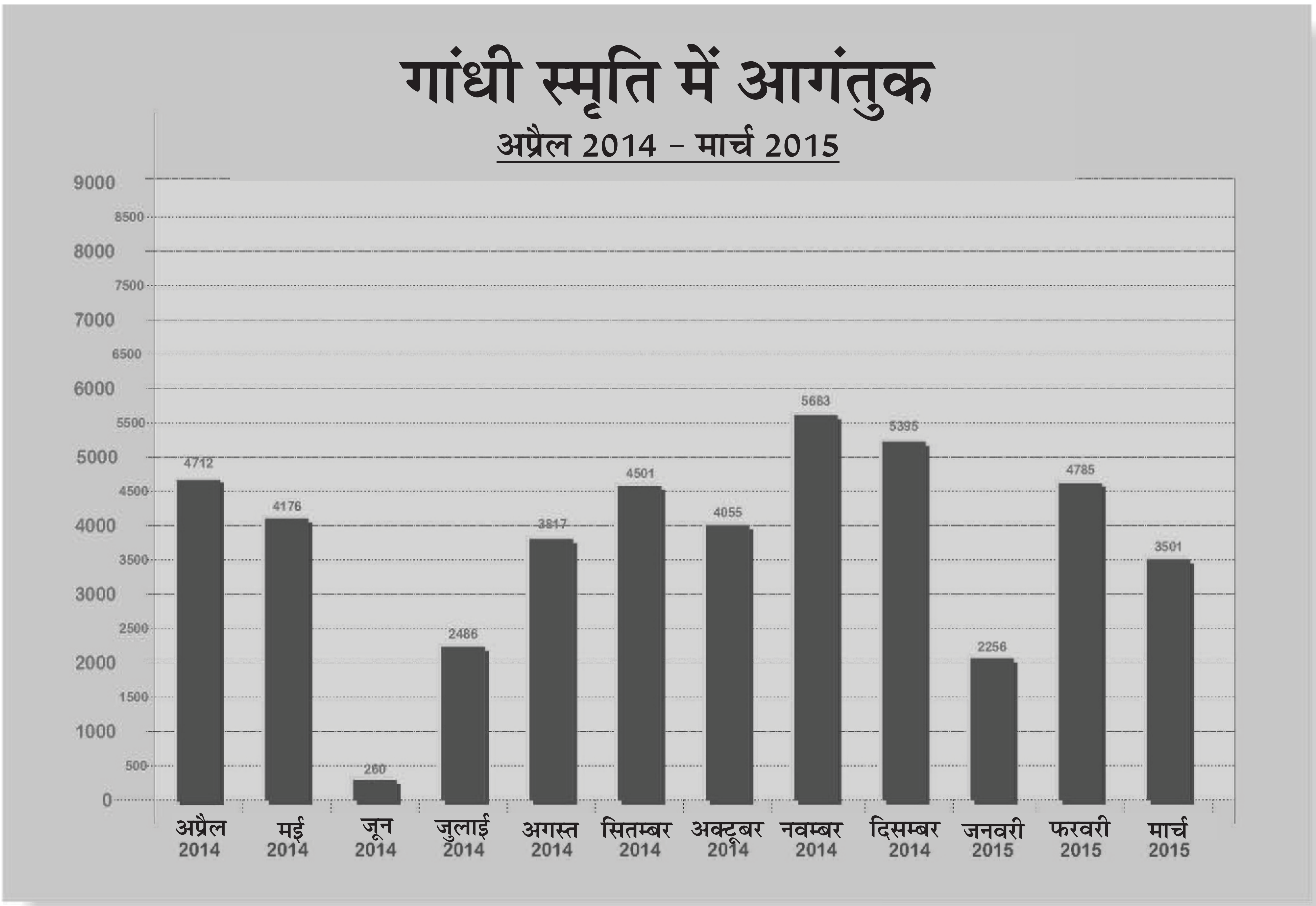
गांधी स्मृति में आगंतुक
अप्रैल 2014 – मार्च 2015
9000
8500
8000
7500
7000
6500
6000
5500
5000
4500
4000
3500
3000
2500
2000
1500
1000
500
0
4712
4176
260
2486
3817
4501
4055
5683
5395
2256
4785
3501
अप्रैल 2014
मई 2014
जून 2014
जुलाई 2014
अगस्त 2014
सितम्बर 2014
अक्टूबर 2014
नवम्बर 2014
दिसम्बर 2014
जनवरी 2015
फरवरी 2015
मार्च 2015

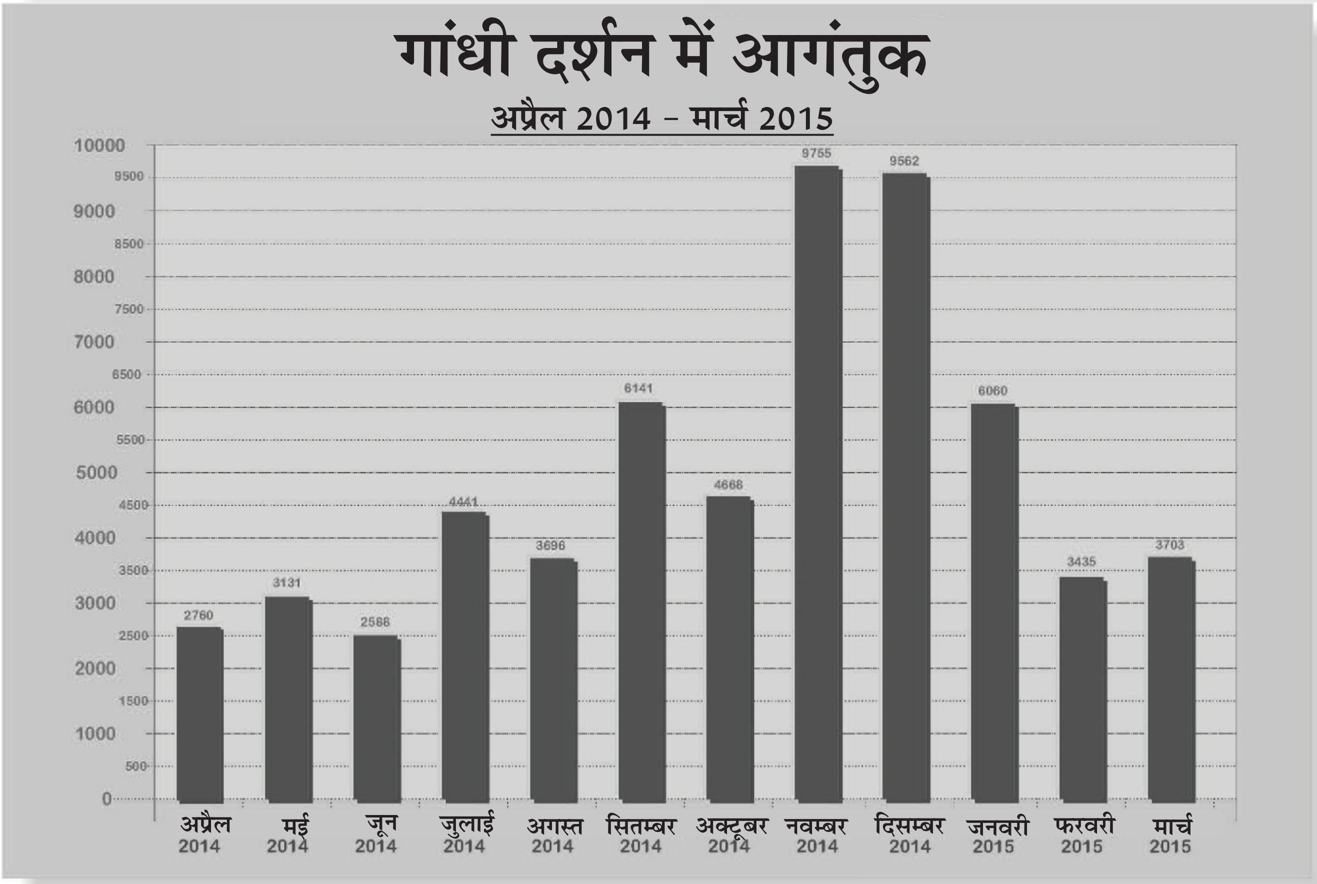
गांधी दर्शन में आगंतुक
अप्रैल 2014 – मार्च 2015
10000
9500
9000
8500
8000
7500
7000
6500
6000
5500
5000
4500
4000
3500
3000
2500
2000
1500
1000
500
0
2760
3131
2586
4441
3696
6141
4668
9755
9562
6060
3435
3703
अप्रैल 2014
मई 2014
जून 2014
जुलाई 2014
अगस्त 2014
सितम्बर 2014
अक्टूबर 2014
नवम्बर 2014
दिसम्बर 2014
जनवरी 2015
फरवरी 2015
मार्च 2015

कर्मचारियों को विदाई

श्री बृजपाल–द्वितीय

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के दोनों परिसरों में तीस वर्षों तक सफाई सेवक के रूप में काम करने वाले श्री बृजपाल द्वितीय 31 मार्च, 2014 को सेवनिवृत हुये।

श्री सुशील कुमार यादव

31 जुलाई, 2014 को श्री सुशील कुमार यादव को समिति के निदेशक एवं स्टाफ द्वारा भावभीनी विदाई दी गई। अप्रैल 1972 को श्री यादव समिति में आये थे और 42 वर्षों तक बहुत तन्मयता से उन्होंने समिति की सेवा की। वे एक सुरक्षा कर्मी के रूप में समिति में शामिल हुए थे तथा बाद में उन्होंने समिति के जीवंत कला एवं प्रदर्शनी में प्रदर्शनी सहायक का कार्यभार संभाला। उन्होंने दिल्ली और देश के अन्य भागों में समिति द्वारा लगाई गई प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया।

श्री राम जुआरी

श्री राम जुआरी सफाई सेवक के रूप में गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन दोनों परिसरों में अपनी सेवायें देते हुये 30 नवंबर, 2014 को सेवा निवृत्त हुये।

श्री शंकर लाल

श्री शंकर लाल 26 सितम्बर 1974 को समिति से जुड़े और 41 वर्षों की कर्मठ सेवा के बाद 20 अक्तूबर 2014 को 'फराश' की ज़िम्मेदारी से मुक्त हुये।

श्री अशोक कुमार

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में 41 वर्षों की कर्मठ सेवा के बाद श्री अशोक कुमार 31 जनवरी, 2015 को सेवानिवृत हुये।

श्री अशोक कुमार ने प्रोजेक्ट ऑपरेटर के रूप में अपने लम्बे कार्यकाल की शुरूआत की और प्रतिबद्ध कार्यकर्ता के रूप में सहायक एस्टेट प्रबन्धक तक पहुँचे। श्री अशोक कुमार ने सबसे अधिक सेवा गांधी स्मृति प्रांगण में की है जहाँ उन्होंने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने वाले अजनबियों को घर का सा वातावरण दिया था।

श्रीमती जया रहेजा

श्रीमती जया रहेजा 80 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति से जुड़ीं तथा स्वागत अधिकारी तथा गाइड के रूप में भी कार्य किया। कुछ अंतराल बाद वे 31 मार्च, 2015 तक सेवानिवृति होने तक लेखा विभाग से जुड़ी रहीं।

एक अत्यन्त ईमानदार कार्यकर्ता के रूप में श्रीमती जया रहेजा का अपने सहकार्यकर्ताओं के साथ आचरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण था।

हार्दिक श्रद्धांजलि

श्री राम सागर (फूलमाला पहने हुये)

30 वर्ष की सेवा के बाद श्री राम सागर सुरक्षा गार्ड के रूप में 31 अगस्त, 2013 को समिति से सेवानिवृत हुये। एक लंबी बीमारी के बाद एक वर्ष बाद उनकी मृत्यु हो गई।

श्री राम सागर को उनके सौम्य व्यक्तित्व, मुस्कान तथा विनम्रता के लिये याद किया जायेगा। समिति के समस्त कार्यकर्ता इस सौम्य दिवंगत व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि देते हैं।

श्री ओम प्रकाश चौहान

2 अक्तूबर, 1972 श्री ओम प्रकाश चौहान ने गांधी दर्शन में सफाई की देख-रेख का ज़िम्मा लिया। 31 अक्तूबर, 2007 को समिति सम्पदा प्रबन्धक के रूप में सेवानिवृत हुए। एक समर्पित कार्यकर्ता श्री चौहान जी 21 सितम्बर, 2014 को एक लंबी बीमारी के बाद पंचतत्व में लीन हो गए।

मीडिया में

बापू को नमन...

नई दिल्ली. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि शहीद दिवस के दिन शुक्रवार को राजघाट पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। संस्कृति पर्यटन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ महेश शर्मा भी इस मौके पर मौजूद थे।

"The power of a true word is such that it leads one from selfishness to selflessness."

67th Anniversary of the Martyrdom of Mahatma Gandhi

Friday, January 30, 2015

Inter-Faith Prayer Meeting
3.30 P.M. onwards

Venue: Gandhi Smriti, 5, Te...
New Delhi - 11...

Renowned Singer, Sh. S...
will present Bhakt...

You are cordially requ...

Ministry of Culture, Government of India

Gandhi Smriti a...
Contact: 23012843, ...

संपन्न हुआ तीन दिवसीय आदिवासी संस्कृति संगम

शुक्रवार 30 जनवरी, 2015

सर्वधर्म प्रार्थना सभा
दोपहर 3.30 बजे से

स्थान : गांधी स्मृति, 5 तीस जनवरी मार्ग,
नई दिल्ली – 110011

सुविख्यात गायक, श्री सुरेश वाडकर
भक्ति संगीत प्रस्तुत करेंगे।

आप सभी सादर आमंत्रित हैं"

अंगार, विभूषण यह उनका
विद्युत पीकर जो आते हैं,
ऊँघती शिखाओं की लौ में
चेतना नयी भर जाते हैं।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

Gandhi Smriti and Darshan Samiti

मुजफ्फरपुर
मंगलवार, 20 जनवरी, 2015

प्रभात खबर

गांधी संस्कार शिविर आयोजित

मंगलवार, 20 जनवरी, 2015

सन्मार्ग

गांधी की तस्वीर लगाने वाले घर के बच्चे दुराचारी नहीं हो सकते: शत्रुघ्न

वीर अर्जुन

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार 22 जनवरी, 2015

सेक्लरिज्म की परिभाषा को ले
विचार गोष्ठी का आयोजन

हिन्दुस्तान

मुसहर बस्ती में गांधी संस्कार शिविर आयोजित

'राष्ट्रीय सप्ताह'
1919 में रॉवल कानून के खिलाफ राष्ट्रव्यापी हड़ताल की याद में
14 अप्रैल, 2014
ओम होटल, जयपुर

National Week Celebration
Commemorating Nation-wide hartal against Rowlatt legislation in 1919
14 April, 2014
Om Hotel, Jaipur

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
Gandhi Smriti and Darshan Samiti

हिन्दुस्तान
लखनऊ • बुधवार • 04 फरवरी 2015

गांधी विचारों के विविध आयाम विषय पर गोष्ठी में मण्डलायुक्त हुए शामि...

महात्मा के आदर्शों का आज

बलरामपुर | हिन्दुस्तान संवाद

गोष्ठी
• वक्ताओं ने अहिंसा को बताया सबसे बड़ा हथियार

ईश्वर, अल्लाह तेरे नाम...

सर्वोदय आश्रम में गांधीजी के लोगों ने चित्रों का अवलोकन

पेज 2 भी देखें

डांडी मार्च एवं वन्देमातरम् रोलिंग ट्राफी
पुरस्कार वितरण समारोह
21 अक्तूबर, 2014
सत्याग्रह मंडप, गांधी दर्शन, राजघाट
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली

Dandi March & Vandematram Rolling Trophy
Prize Distribution Ceremony
October 21, 2014
Satyagraha Mandap, Gandhi Darshan, Rajghat
Gandhi Smriti and Darshan Samiti, New Delhi

RICH CULTURE Various tribal groups will perform

Tribal focus

"यह हम पर है कि हम इस दुनिया को सबके लिए बेहतर बनाएँ, ख़ास तौर पर ग़रीबों, शोषितों और वंचितों के लिए"
- नेल्सन मंडेला

नेल्सन मंडेला की 96वीं जयंती के अवसर पर
गांधी का सर्वोदय और मंडेला का
रंगभेद के ख़िलाफ आंदोलन : एक गोष्ठी
एवं
डॉ. के. एम. प्रसाद की पुस्तक
'गांधी का सर्वोदय' का लोकार्पण
18 जुलाई, 2014 शाम 4.30 बजे
गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

प्रभात खबर

गांधी सत्याग्रह स्मृति दिवस पर कार्यक्रम

गांधी संग्रहालय स्मृति दिवस पर सफाई करते स्कूली बच्चे।

विचारांना जिवंत ठेवणे हे प्र...

प्रभात खबर, सोमवार, 19 मई, 2014 www.prabhatkhabar.com 06

गांधीजी के आदर्शों पर चलने का लिया संकल्प

रक्षा सहित गांधी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला. वक्ताओं ने कहा कि गांधी जी जीवन पर्यंत दलित, शोषित,पीड़ित व कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए संघर्षशील रहे.कहा कि हमें गांधी जी के सपनों का भारत बनाना है.शिविर को सर्वोदय मंडल के तपेश्वर भाई, भवतोष कुमार घोष, कमल प्रसाद साह, पंचम भाई, दीपक कुमार सिंह, सूर्य नारायण भारती सीताराम मेहता आदि ने संबोधित किया.इस दौरान कार्यकर्ताओं ने 'गांव की धरती गांव का राज-गांव-गांव में ग्राम स्वराज, अंधेरे में विविध प्रकाश-गांधी विनोबा जयप्रकाश आदि का उदघोष किया गया. इस मौके पर राम वल्लभ यादव, देव नारायण दास, ब्रह्मदेव यादव, ललिता देवी, आशा भारती, मूर्ति देवी, पूजा भारती आदि उपस्थित थे.

संबोधित करते वक्ता। ■ फोटो | प्रभात खबर

6th January, 2014

لوگوں کیلئے مفت طبی امداد لازمی: ریز وشاہ

ہر فرد لوگوں کی خدمت میں اپنا رول ادا کرے

गांधी चित्रप्रदर्शन

हिन्दुस्तान

'गांधी के विचार आज भी प्रासंगिक'

मोतिहारी | हिन्दुस्तान संवाददाता

स्थानीय जिला स्कूल के सभागार में सोमवार को गांधी स्मृति व दर्शन समिति नई दिल्ली के तत्वावधान में गांधी की चम्पारण यात्रा व बुनियादी शिक्षा पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन गांधी संग्रहालय के सचिव ब्रज किशोर सिंह, प्राचार्य शशिकला व नारायण मुनि ने संयुक्त रूप से किया।

संपूर्ण क्रांति आंदोलन से जुड़े रमन कुमार ने कहा कि महात्मा गांधी का दर्शन आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि

सभा को संबोधित करते अतिथिगण।

मंडेला की जयंती पर 'गांधी का सर्वोदय' का विमोचन

movement of Mandela: A Dialogue & Release of the book 'Sarvodaya of Gandhi' by Dr. K.M. Prasad to mark the 96th Birth Anniversary of Nelson Mandela

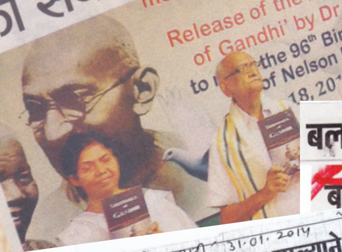

जागरण

मोतिहारी आसपास जागरण

दैनिक जागरण 7

बलरामपुर अमर उजाला बुधवार | 4 फरवरी 2015

बापू ने दुनिया को दी नई विचारधारा : कमिश्नर

गांधी विचार के विविध आयामों पर हुई चर्चा

संगोष्ठी के दौरान मंचासीन कमिश्नर देवीप्रसाद मंडल एवं प्रकाश अरोड़ा, प्राचार्य, विधायक व मौजूद विद्यार्थी।

दिव्य मराठी 31-01-2014

साऱ्या गोष्टी सहज मिळत असल्याने लोकशाहीची किंमत कळत नाही

न्यायमूर्ती सत्यरंजन धर्माधिकारी यांची खंत

बापू ने दिया था स्वावलंबन पर जोर

चंपारण सत्याग्रह स्मृति कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि जागरण

- चंपारण सत्याग्रह स्मृति दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

हुसैन अंसारी, तारकेश्वर प्रसाद, रमाकांत भारती, आलोक कुमार, अभिषेक कुमार, डा.मुकेश, लोकनाथ पांडेय, मुन्ना कुमार, सतीश जोशी मौजूद थे।

मोतिहारी, संसः महात्मा गांधी के चंपारण